

॥ श्रीः ॥

मुहूर्तचिन्तामणि ।



पण्डित–महीधरशर्मधर्माधिकारिटीहरीराज्य-
निवासिकृत–भाषाटीकासहित ।



वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.



सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम् ॥
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्यौतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥ १ ॥
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ २ ॥
विनैतदखिलं श्रौतस्मार्त्तकर्म न सिद्ध्यति ॥
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥

वेदके छः अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष हैं, इनमेंसे सर्वोत्तम अंग नेत्रसंज्ञक निर्मल निष्कलंक ज्योतिषही है, जिसको प्राचीनऋषि-योंने (सिद्धांत) गणित ग्रन्थ (संहिता) मुहूर्त्त आदि (होरा) जातक, ताजिक आदि फलादेश इन तीन स्कंधोंमें प्रगट किया, इसके विना समस्त (श्रौतस्मार्त) वैदिक एवं धर्मशास्त्रोक्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकते । इसलिये संसारके उपकारार्थ ब्रह्माजीने इसे वेदनेत्रकरके कहा इसी हेतु (यज्ञादिवैदिक कर्म करनेवाले)(द्विज) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्योंको इसे यत्नसे पढनेकी आज्ञा है. अन्यशास्त्रोंमें विवाद बहुत हैं प्रत्यक्ष फलोदय ऐसा नहीं है, जैसा प्रत्यक्ष चमत्कृत ज्योतिष है. जिसके साक्षी-सूर्य, चन्द्रमा, उदयास्त शृंगोन्नत्यादिमें हैं. शिक्षामेंभी लिखा है कि, "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् । ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पान् प्रचक्षते ।" इति समस्त अंग प्रत्यंग परिपूर्ण हुएमेंभी जैसे नेत्रोंके विना समस्त अंधकार ज्ञात होता है, तैसेही इसके विना समस्त साधन निरर्थक हैं. वासिष्ठ सिद्धांतकाभी वाक्य है कि, "वेदस्य चक्षुः किल शास्त्रमेतत्प्रधानताङ्गेषु ततोऽर्थ जाता । अङ्गैर्युतान्यैः परिपूर्णमूर्तिश्चक्षुर्विहीनः पुरुषो न किंचित्"॥ इत्यादि बहुत प्रमाणवाक्य हैं तथापि वर्त्तमानसमयमें बहुधा वर्त्तमान सामयिक महाशय कहते हैं कि, ज्योतिष कुछ वस्तु नहीं है. भूतकालमें ब्राह्मणही विद्यावान् रहे सूज्ञ होनेसे उन्होंने यह पारिणामिक (दूरदेशी) विचार किया कि, यदि हमारी संतान विद्या पराक्रमादिकोंसे अल्पसार हो जायगी तो क्या (वृत्ति) आजीवन

करेगी ? इसलिये ज्योतिषशास्त्र बनाया कि, जिससे सबको प्रतीत हो एवं ब्राह्मणोंकोही माने । इत्यादि बहुतसे वाद प्रतिवाद करते हैं तथापि जानना चाहिये कि, यह शास्त्र किसने आरंभमें बनाया और कब बना ? यह तो सर्वसाधारण जानतेही हैं कि, जो खगोल, भूगोल, भूमिमान (पैमायश) सूर्य चन्द्रग्रहण आदि गणित एवं दिनरात्रि पक्ष मास वर्ष आदि काल सब ज्योतिषहीसे तो प्रकट हैं, रहा फलादेश पक्ष यह प्राचीन ग्रन्थकर्त्ता आचार्योंकी बुद्धिमत्ता है कि, सब जीवमात्र अपने २ कर्मानुसार फल पाते हैं यह तो प्रकटही है. परंतु वह कर्म एवं उसका परिणाम अदृश्य है इसे दृश्य करनेके लिये उन महात्माओंने ऐसे २ हिसाब (गणित) नियत किये कि, जिनकी संज्ञायें सूर्यादिग्रह और तिथिवार नक्षत्र योग करण लग्न मुहूर्त्त आदि नियत कर दिये हैं जिनके द्वारा सद्विचारशील पाठक भूत भविष्य वर्त्तमान फल कह सकते हैं, जैसे बहुतसे गणितादि कामोंमें कोई करण (इष्ट) मानके आगे कार्य संपादित होते हैं. ऐसेही ज्योतिष फलादेशमें (करण) इष्टकाल एवं मुहूर्त हैं इनसे सभी कार्य्य होते हैं तथा च यह वेदमूर्त्ति (ईश्वर) का एक मुख्य अंग नेत्र है. वेद इसको प्रमाण करता है इसके विना कोईभी (यज्ञादिकृत्य) श्रौत-स्मार्त कर्म नहीं होते और प्रत्यक्ष चमत्कृतभी है वे० प्र० "विद्याहवैब्राह्मणमाजगामगोपायमासेवधिष्टेयमस्मि । असूयकायानृजवेयतायनमांब्रूयावीर्य्यवतीतथास्याम्" इत्यादि हैं. इसमें ज्योतिषकी मुख्यता इस प्रकार है कि, (श्लोक) "अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किंचिदेषां तु विशिष्टमस्ति । चिकित्सितं ज्योतिषमंत्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहंति ॥ १ ॥" और शास्त्र तो विनोद (दिलबहलाव वा मनोरंजक) मात्र हैं. वैद्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, मन्त्रशास्त्र, धर्मशास्त्र प्रत्येक पद पदमें प्रत्यय (विश्वास) देते हैं. जैसे ज्योतिषमें प्रत्यक्ष ग्रहगणित है कि चन्द्रमाके शृंगोन्नति, ग्रहण ग्रहयुति तुरीयादि यन्त्र वा नलिकादियोंसे ग्रहच्छाया ग्रहोंका उदयास्त, ठीक समयपर मिल जाते हैं. तथा जन्म, वर्ष, प्रश्न आदि विचारमें यदि इष्टशुद्ध हो एवं विचारवालाभी सुपठित हो तो भूत भविष्य वर्त्तमान फल ठीकही मिलते हैं इसे संसारके शुभार्थ ब्रह्माजीने वेदविभागानंतर अंगोंमें स्थापन किया. "अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनीयेत १ दर्शपूर्णमासाभ्यां यजतः २" इत्यादि श्रुति हैं. आठ वर्षकी गणना सूर्यचारवश गणितहीसे है तथा दर्शपौर्णमासादि ज्ञानभी विना ज्योतिष होही नहीं सकता । लिखाभी है कि, " वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः । तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥ १ ॥ " यज्ञ ईश्वरही है इसके उपयोगी वेद हैं कालमान समयका है और कालस्वरूप परमात्मा होनेसे " कालात्मा " यज्ञ पुरुषकोही कहतेहैं, वही तो ज्योतिष है जिसके

बिना कालज्ञान नहीं होता बिना कालज्ञान यज्ञादि कुछ नहीं हो सकते. अन्योन्य प्रमाणभी बहुत हैं. किन्तु इस समय बहुत व्याख्यानको छोडकर प्रयोजन लिखनाही प्रयोजन है कि, श्रुतिनेत्र ज्योतिषशास्त्र ऐसा अद्वितीय एवं प्रत्यक्ष चमत्कृत होनेपरभी सहसा सर्व साधारणके हृदयकमलोंमें विकासमान नहीं होता. परञ्च विपरीतताका आभास स्वतः कालानुसार उत्पन्न होने लगता है. इसका हेतु सामयिकी महिमासे मूल भाषा (संस्कृत) का ह्रास होनाही है। इसीकारण यह प्रत्यक्ष शास्त्र क्रमशः लोप होता है. द्वितीय यह है कि, इस संस्कृताल्पपरिचयसमयमें बहुतसे मनुष्य कुछ सामान्य फलादेश देख सुनकर यद्वा कियत्प्रकार भूतादि विद्याका अभ्यास करके तत्काल मनोहर बातें चमत्कारी दिखलाकर लोगोंके मन मोहन करके अल्प श्रमसे अपना लाभ उठाय लेते हैं. उस समय यह वे पाखण्डी (पण्डितजी) तो कहाते हैं परंतु परिणाममें उनके कहे हुए फल अविश्वास्य प्रगट हो जाते हैं. इसपर जनश्रुति हो बैठती है कि, ज्योतिषही पाखण्डी है उन पाखण्डियोंकी चातुर्यताको कोई नहीं कहता इत्यादि व्यवस्था होनेमें सर्वसाधारणको ज्योतिषशास्त्रमें सुबोध होनेके निमित्त प्रचलित ग्रन्थों (जिनका अर्थ सर्वसाधारणके बोध नहीं हो सकता) की भाषाटीका करनाही एकमात्र उद्धार समझकर गढवालदेशाधीश महामहिम क्षत्रियकुलभास्कर श्रीबदरीशमूर्ति श्रीमन्महाराजाधिराज प्रताप शाहदेव बहादुरके आज्ञानुसार कुछ काल पहिले तथा उनके सत्पुत्र श्री ५ श्रीमन्महाराजाधिराज सत्कीर्तिमान् कीर्तिशाहदेव बहादुरकी आज्ञासे सांप्रतमेंभी मैंने पूर्वश्लोकोक्त तीन स्कंधोंमेंसे (होरा) फलादेश ग्रन्थ जातकोंमें मुख्य बृहज्जातक एवं ताजिकोंमें मुख्य तन्त्रत्रयात्मक "नीलकंठी" समस्त प्रश्नविचारसहित और "चमत्कारचिन्तामणि" "भावकुतूहल" आदि ग्रन्थोंकी भाषाटीका प्रकाश करके कुछ संहिता वैशेषिक सारणी सदृश मुहूर्तग्रंथके भा० टी० प्रकाश करनेका विचार हुआ कि मुहूर्त सभी कामोंमें सभीको आवश्यक होते हैं और सुमुहूर्त्तका फल शुभही होता है इसके संहिता आदि बडे ग्रन्थ पाठ बहुत हैं जो छोटे हैं तो उनके प्रयोजनभी स्वल्पही हैं इसलिये यह "मुहूर्त्तचिन्तामणि" नामक ग्रन्थ जो पाठमें थोडा सरस कविता अनेक प्रकार छन्दोंसे सुशोभित और अर्थ बहुत है तथा औरभी विशेषता है कि, अन्य मुहूर्त्तग्रन्थ रत्नमाला आदियोंमें तिथि वार नक्षत्र आदियोंके पृथक् २ प्रकरण हैं एक कार्य निमित्त मुहूर्त्त देखनेमें अनेक प्रकरण देख पडते हैं. इसमें जो कुछ कार्य देखना हो तो एकही स्थलमें तिथ्यादि लग्न लग्नांश पर्यन्त एवं धर्मशास्त्रीय निर्णयभी मिल जाते हैं. इनही शुभलक्षणोंसे इस आधुनिक ग्रन्थकी प्रचलता एवं सर्वत्र प्रमाणता हो रही है परंतु अर्थ इसका स्फुरण नहीं होता इसलिये

इसीकी भाषाटीका करना योग्य समझ इसे देख पञ्चांग मात्र जाननेवालेभी मुहूर्तका विचार उत्तम प्रकारसे जान लेंगे तथा पाठक पाठयिताओंकोभी सुरगमता हो जायगी ।

यद्यपि इस ग्रन्थकी भा० टी० मुद्रितभी हो गई है तथापि पुनः प्रयास करनेका प्रयोजन विद्वज्जन सुज्ञ पाठकवृंद इस टीकाका सारांश देख विचारकर जान जांयगे कि, कैसा सरल, स्वच्छ एवं निरर्गल अर्थ ग्रंथकर्ता आचार्यके आशयानुमत प्रकट किया गया है. इसके विचारशील सज्जन इस परोपकारार्थ परिश्रमको चरितार्थ प्रसन्नतासे करेंगे.



खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्षः-बंबई,

पृष्ठक 38 Page

श्रीः ।

अथ मुहूर्तचिन्तामणिस्थविषयाणामनुक्रमणिका ।

विषयानुक्रमणिका ।

अथ नक्षत्रप्रकरणम् २.

अथ संक्रांतिप्रकरणम् ३.

अथ गोचरप्रकरणम् ४.

विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिकासमाप्ता।



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ मुहूर्तचिंतामणिः ।

भाषाटीकासहितः ।



श्रीनाथपादाम्बुजदीर्घनौकामाश्रित्य तर्तुं विबुधैरपार्यम् ॥
श्रीरामदैवज्ञकवेः कवित्वसिन्धुं प्रवृत्तोस्मि कियद्वराकः ॥ १ ॥
निजतातपदाम्बुजाप्तबोधो मौहूर्तं वितनोमि बालतुष्ट्यै ॥
विवृतिं नृगिरा महीधराख्यः क्षन्तव्यं विबुधैर्यदत्र मेऽघम् ॥ २ ॥

भाषाकार विघ्नविघातार्थ मंगलाचरणरूप निजगुरुको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन कहता है कि सत्कवि रामदैवज्ञके कवितारूपी समुद्र जो कि विद्वानोंसेभी सहसा पार नहीं उतरा जाता, अर्थात् एकाएक कविके आशयको विना कुछ आधार नहीं पाते इसको मैं एक छोटासा (वराक) अल्पसार (श्रीनाथ) लक्ष्मीनाथ विष्णु अथवा (श्री) शोभायुक्त (नाथ) आदिनाथ शिव, विशेषतः आनंदानंदनाथ आदि गुरुपंक्तित्रिकमेंसे प्रथम श्रेण्यधीश श्रीनाथ परब्रह्मरूप सच्चिदानंदमय गुरुके चरणकमलही एक बडी (नौका) नावके आश्रय पायके उक्त कवितासमुद्र तरनेको उद्यत हुआ हूँ; अपने जनकके चरणकमलोंके प्रसादसे पाया है मुहूर्तादिकका बोध (ज्ञान) जिसने ऐसा मैं महीधरनामा (ब्राह्मण राजधानी टीहरी जिला गढ़वाल निवासी) मुहूर्तग्रंथोंसे अनभिज्ञोंके प्रसन्नतार्थ इस "मुहूर्तचिंतामणिनामक" ग्रंथकी सरस हिन्दीभाषाटीका करता हूं. तथा प्रार्थनाभी करता हूं कि, इसमें जो कुछ मेरी (दुष्कृत) अयोग्यता हो तो विद्वज्जन क्षमा करें ॥ १ ॥ २ ॥

आचार्य प्रथम मंगलाचरण इंद्रवज्रा छंदसे करता है:-

(इं० व०) गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ॥
विघ्नंमुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहोहरतु द्विपास्यः ॥ १ ॥

श्रीगणेशजीने निजमाता (गौरी) पार्वतीजीके कानमें पहिरे हुए केतकीके (पत्र) पुष्पके एक भागको अपने शुंडादण्डसे बाललीला अपनी माताको दिखलानेके लिये बलात्कारसे खैंच (ग्रहण) कर अपने मुखमें एक ओरसे भक्षण निमित्त धारण किया जितनेमें भक्षण न हो सका इतने (मुहूर्त) क्षणपर्यंत द्विदं

तकी शोभा देखनेमें आई क्योंकि गणेशजी एकदंत हैं दूसरे और थोड़े समय केतकीपुष्पके टुकडे रखनेसे द्विदंत जैसे प्रतीत हुए. यह अद्भुतोपमालंकार है और (द्विपास्य) एकवार शुंडासे पुनः मुखसे पीनेवाला हाथीका है मुख जिसका ऐसा गणेश विघ्नको हरण करे ॥ १ ॥

(उ०जा०) क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुंसंक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ॥
अनन्तदैवज्ञसुतःसरामो मुहूर्तचिन्तामणिमातनोति ॥ २ ॥

क्रिया (जातकर्म) आदि समस्त कार्यसमूहकी प्रतिपत्ति (यह कार्य अमुक दिन शुभ असुकमें अशुभ) का हेतु (कारणभूत) एवं संक्षेप (थोड़े) शब्दोंमें सार (निष्कृष्ट) अर्थका विलास प्रकाश है गर्भ (अंतर) में जिसके अर्थात् मुहूर्त्तग्रंथ प्राचीन अनेक हैं परंतु उनमें पाठ बहुत और तिथ्यादि विचारोंके पृथक् प्रकरण हैं इसमें समस्त कार्यनिर्वाह थोड़ेही शब्दोंसे एकही स्थलमें हो जाता है इसलिये दिनशुद्धि विशेषके "यद्वा" मुहूर्तदिनके पंद्रहवें भाग (दोघड़ी) उपलक्षितकालके चिंता शुभाशुभनिरूपणरूप विचारका मणि. जैसे हीरा आदि समस्त कांतिमानोंके आधार है ऐसेही समस्त मुहूर्त (दिनशुद्धि) के आधार इस मुहूर्तचिंतामणिनाम ग्रंथको जगद्विख्यात अनंतनामा दैवज्ञ (ज्योतिषी) का पुत्र रामदैवज्ञ विस्तारित अर्थात् विधिनिषेधके संनिवेश (विधान) का निरूपण करता है ॥ २॥

(अनुष्टुप्) तिथीशावह्निकौगौरी गणेशोऽहिर्गुहोरविः ॥
शिवोदुर्गान्तकोविश्वे हरिःकामःशिवःशशी ॥ ३ ॥

प्रथम पंचांगके शुभाशुभनिरूपणार्थ तिथियोंके स्वामी कहते हैं:-कि प्रतिपदाका स्वामी अग्नि, एवं द्वि० का: ब्रह्मा, तृ० पार्वती, च०: गणेश, पं० सर्प, ष० कार्तिकेय, स० सूर्य, अ० शिव, न० दुर्गा, द० यम, ए० विश्वेदेव, द्वा० हरि, त्रयोदशी कामदेव, चतुर्दशी शिव, पू० अ० चन्द्रमा है । इनके कहनेका प्रयोजन यह है कि, तिथिका जो अधिपति उसका पूजन उसीमें होताहै तथा उनके जैसे गुण एवं कर्म हैं वैसेही प्रकार कर्त्तव्य कार्यका शुभाशुभ परिणाम देते हैं जैसे रत्नमाला आदिकोंके तिथिप्रकरणोक्त प्रयोजन हैं कि, प्रतिपदामें विवाह, यात्रा, व्रतबंध, प्रतिष्ठा, सीमंत, चूडा, वास्तुकर्म, गृहप्रवेश आदि मंगल न करना परन्तु यहां विशेषतः शुक्ल प्र० की है कृष्णमें उक्त कार्योंमेंसे कुछ होतेहैं इनकी स्पष्टता आगे लिखेंगे. द्वितीयामें: राज्यसम्बन्धी अंग वा चिह्नोंके कृत्य व्रतबंध प्रतिष्ठा विवाह यात्रा भूषणादि कर्म शुभ होते हैं, तृतीयामें द्वितीयाके उक्त कर्म और गमनसंबंधी कृत्य, शिल्प, सीमंत, चूडा, अन्नप्राशन, गृहप्रवेशभी शुभ होते हैं. रिक्ता ४ । ९ । १४ में अग्निकर्म मारणकर्म बंधन-

कृत्य शस्त्र विष अग्निदाह घात आदिक विषयिक कृत्य शुभ और मंगल कृत्य अशुभ होते हैं, पंचमीमें समस्त शुभकृत्य सिद्धि देते हैं परन्तु ऋण (कर्जा) इसमें न देना देनेसे नाश हो जाता है. षष्ठीमें तैलाभ्यंग, यात्रा, पितृकर्म और दंतकाष्ठोंके विना सभी मंगल पौष्टिक कर्म करने तथा संग्रामोपयोगी शिल्प, वास्तु, भूषण, वस्त्रभी शुभ हैं, सप्तमीमें जो जो कृत्य द्वि० तृ०पं०स०में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं. अष्टमीमें रणोपयोगी कर्म, वास्तुकृत्य, शिल्प, राजकृत्य, लिखनेका काम, स्त्री, रत्न, भूषण कृत्य शुभ होते हैं. दशमीमें जो जो द्वि०तृ० पं०स० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं. एकादशीमें व्रत उपवासादि समस्त धर्मकृत्य देवताका उत्सव, वास्तुकर्म, सांग्रामिक कर्म, शिल्प शुभ होते हैं. द्वादशीमें समस्त स्थावर जंगमके धर्म पुष्टिकारक शुभकर्म सभी सिद्ध होते हैं. त्रयो० में द्वि०तृ०पं०स०के उक्त कृत्य शुभदायक होते हैं. पूर्णिमामें यज्ञक्रिया, पौष्टिक, मंगल, संग्रामोपयोगी, वास्तुकर्म, विवाह, शिल्प, समस्त भूषणादि सिद्ध होते हैं. अमावास्यामें पितृकर्म मात्र होते हैं कहीं शाबरोक्त उग्रकर्मभी कहे हैं अन्य मंगल पौष्टिकोत्सवादि कृत्य न करने ॥ ३ ॥

(उपजाति)

नन्दाचभद्राचजयाचरिक्तापूर्णेतितिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ॥
सितेऽसितेशस्तसमाधमाःस्युःसितज्ञभौमार्किगुरौचसिद्धाः ॥ ४ ॥

तिथियोंके तीन आवृत्तिमें नंदादि पंच संज्ञा क्रमसे हैं: जैसे-१ । ६ । ११ नंदा. २ । ७ । १२ भद्रा. ३ । ८ । १३ । जया. ४ । ९ । १४ । रिक्ता. ५ । १० । १५ । पूर्णा संज्ञक हैं इनके जैसे नाम वैसेही फलभी हैं तथा शुक्लपक्षमें पूर्वत्रिभाग (प्रतिपदासे पंचमी) पर्यंत अशुभ अर्थात् इनमें चन्द्रमा क्षीणही रहता है द्वितीयत्रिभाग (पंचमीसे दशमी) पर्यन्त मध्य और अंतिम त्रिभाग (दशमीसे पूर्णमासी) पर्यंत शुभ होती हैं, तथा कृष्णपक्षमें पू० त्रि० (पंचमी पर्यन्त) शुभ म० त्रि० (पंचमीसे दशमी पर्यंत) मध्यम और अं० त्रि० (एकादशीसे अमा० पर्यंत) अधम होती हैं. चतुर्थपादका अर्थ यह है कि, शुक्रवारके दिन नंदा १ । ६ । ११ । बुधके भद्रा २ । ७ । १२ । मंगलके जया ३ । ८ । १३ । शनिवारके रिक्ता ४ । ९ । १४ । गुरुवारके दिन पूर्णा ५ । १० । १५ । सिद्धि देनेवाली हैं. इसका प्रयोजन यह है कि "सिद्धा तिथिर्हंति समस्तदोषान्०" इत्यादि० मासशून्य, मासदग्ध, दिनदग्ध आदि दोषोंको हटाकर कार्यसिद्धि देती हैं ॥ ४ ॥

(शालिनी)

नन्दाभद्रानन्दिकाख्याजयाच रिक्ताभद्राचैवपूर्णामृताकांत् ॥
याम्यंत्वाष्ट्रंवैश्वदेवंधनिष्ठार्यम्णंज्येष्ठांत्यंरवेर्दग्धभंस्यात् ॥ ९ ॥

सूर्यादिवारोंमें नन्दादि उक्ततिथि क्रमसे अशुभ (घातक) होती हैं. जैसे-रविवारको नंदा १ । ६ । ११ । सोमवारको भद्रा २ । ७ । १२ । मंगलको नंदा १ । ६ । ११ । बुधको जया ३ । ८ । १३ । गुरुवारको रिक्ता ४ । ९ । १४ । शुक्रवारको भद्रा २ । ७ । १२ । शनिवारको पूर्णा ५ । १० । १५ । ऐसेही नक्षत्रभी. जैसे रविवारको भरणी, सोमवारको चित्रा, मंगलको उत्तराषाढा, बुधको धनिष्ठा, गुरुवारको उत्तराफाल्गुनी, शुक्रको ज्येष्ठा, शनिवारको रेवती दग्धनक्षत्र होते हैं. उक्त घातकतिथि तथा ये दग्धनक्षत्र शुभकृत्यमें वर्ज्य हैं ॥ ९ ॥

तिथिचक्रम् ।

तिथि	तिथि फ.	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पालन
१	सिद्धि	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कोहडा
२	कार्यसाधन	ब्रह्मा	भद्रा	अ०	शुभ	वनभंटा
३	आरोग्य	गौरी	जया	अ०	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्ता	अ०	शुभ	तिल
५	शुभ	सर्प	पूर्णा	अ०	शुभ	खट्टा
६	अशुभ	स्कंद	नन्दा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	शुभ	सूर्य	भद्रा	म०	म०	आमला
८	व्याधि	शिव	जया	म०	म०	नारियल
९	मृत्युदा	दुर्गा	रिक्ता	म०	म०	लडुआ
१०	धनदा	यम	पूर्णा	म०	म०	चिचेंडा
११	शुभा	विश्वे	नन्दा	शुभ	अशुभ	सेमदाना
१२	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	सर्वसिद्धि	काम	जया	शुभ	अ०	भंटा
१४	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अ०	सहद
१५	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अ०	जुवा
३०	अशुभ	पितर	०	०	०	मैथुन

(अनुष्टुप्) षष्ठ्यादितिथयोमन्दाद्विलोमंप्रतिपद्बुधे ॥
सप्तम्यर्केऽधमाःषष्ठ्याद्यामाश्चरदधावने ॥ ६ ॥

शनिवारसे विपरीत तथा षष्ठीसे सीधे क्रमसे गिननेमें तथा प्रतिपदाको बुध सप्तमीको रवि अधम शुभकार्यमें वर्जनीय क्रकचयोग होता है. पंचांगोंमें इसे वारदग्ध लिखते हैं. इनकी सुगमता यहभी है कि, तिथिवार जोडनेसे १३ जिसे दिन हो वही वा० द० जैसे शनिवारको षष्ठी शुक्रकी सप्तमी बृहस्पतिवारकी अष्टमी बुधकी नवमी मंगलकी दशमी चंद्रवारकी एकादशी रविवारकी द्वादशी और बुधकी प्रतिपदा रविकी सप्तमी ये पृथक् २ ही कही हैं. और षष्ठी, प्रतिपदा, अमाके दिन काष्ठविशेष नीमआदिसे दंतधावन (दांतन) न करना, किसी आचार्यके मतसे नवमी तथा रविवारकोभी वर्जित है ॥ ६ ॥

(इन्द्रवंशा) षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेष्वुनोसेवेतनातैलपलेक्षुररतम् ॥
नाभ्यञ्जनंविश्वदशाद्विकेतिथौधात्रीफलैः स्नानममाद्रिगोष्वसत् ॥ ७ ॥

षष्ठीके दिन तैलाभ्यंग, अष्टमीको मांसभोजन, चतुर्दशीको क्षौर, अमावास्याके दिन स्त्रीसंभोग मनुष्योंने न करना; किसीका मत है मैथुन सभी पर्वदिनोंमें न करना. चतुर्दशी, कृष्णाष्टमी, अमा, पूर्णिमा, सूर्यसंक्रांति पर्व होते हैं उक्त कामोंमें तिथि तात्काल मानी जाती है; उदयादिव्यापिनी नहीं तथा त्रयोदशी, दशमी, द्वितीयाके दिन तैलाभ्यंग (उबटन) न करना यह नियम केवल मलापकर्षस्नानमात्रको ब्राह्मणरहित तीन वर्णोंको है और अमा, सप्तमी, नवमीको आमलेके चूर्णसे स्नान न करना करनेसे धन एवं संतति क्षीण होती है अन्य दिनों आमले तिलकल्कसहितसे स्नान पुण्य देता है, यह वैद्यशास्त्रसेभी स्नानकी औषधी वर्णकांतिकारक है ॥ ७ ॥

(इन्द्रवज्रा) सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दावेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः ॥
सूर्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशादग्धाविषाख्याश्चहुताशनाश्च ॥ ८ ॥

सूर्यवारकी द्वादशी चं० एकादशी मं० पंचमी बु० तृतीया बृ० षष्ठी शु० अष्टमी शनिवारकी नवमी दग्धयोग होता है. रविवारकी चतुर्थी चं० षष्ठी मंगलकी सप्तमी बु० द्वितीया बृ० अष्टमी शु० नवमी श० सप्तमी विषयोग होता है. रविवारकी द्वादशी चं० षष्ठी मं० सप्तमी बु० अष्टमी बृ० नवमी शु० दशमी श० एकादशी हुताशनयोग होता है. ये ३ योग नामसदृश फल देते हैं शुभकार्यमें वर्जित हैं ॥ ८ ॥

(उपजाति) सूर्य्यादिवारेतिथयोभवन्तिमघाविशाखाशिवमूलवह्निः ॥
ब्राह्मंकरोर्काद्यमघण्टकाश्चशुभेविवर्ज्यागमनेत्ववश्यम्॥९॥

रविवारकी मघा, चं० विशाखा, मं० आर्द्रा, बु० मूल, बृ० कृत्तिका, शु० रोहिणी, श० हस्त यमघंटयोग होते हैं. इतने दग्ध, विषाख्य, हुताशन, यमघंट योग शुभकार्यमें वर्जित हैं. विशेषतः यात्राहीमें वर्ज्य हैं आवश्यकमें इनके परिहारभी ग्रंथांतरोंमें हैं कि, विंध्याचल तथा हिमालयके बीच इनका विचार मुख्य है अन्यदेशोंमें नहीं तथा लग्नसे केंद्रत्रिकोणमें शुभ ग्रह हो तो इनका दोष नहीं और किसीका मत है कि, यमघंटकी ८ घटी वर्ज्य हैं वसिष्ठमत है कि उक्त ४ योग दिनमें अनिष्ट फल देते हैं रात्रिमें नहीं ॥ ९ ॥

(रव्यादिवारेएतास्तिथयोदग्धाद्याः)

र.	चं	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
१२	११	५	३	६	८	९	दग्धास्तिथयः
४	६	५	२	८	९	७	विषाख्यास्ति.
१२	६	७	८	९	१०	११	हुताशनास्ति.
मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति	रोहि.	हस्त	यमघण्टनक्ष०

(शा० वि०) भाद्रेचन्द्रदृशौनभस्यनलनेत्रेमाधवेद्वादशी
पौषेवेदशराइषेदशशिवामार्गेद्रिनागामधौ ॥
गोष्टौचोभयपक्षगाश्चतिथयः शून्याबुधैः कीर्त्तिता
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसांकृष्णेशराङ्गाब्धयः ॥१०॥

(अनुष्टुप्)शक्राःपञ्चसितेशक्राद्र्यग्निविश्वरसाः क्रमात॥

मासशून्य (मासदग्ध) तिथि कहते हैं, भाद्रपदकी १।२ तिथि श्रावणकी ३।२ वैशाखकी १२ पौषकी ४।५ आश्विनकी १०।११ मार्गशीर्षकी ७।८ चैत्रकी ९।८ दोनोंही पक्षोंमें शून्य होती हैं तथा कार्तिककी ५ आषाढकी ६ फाल्गुनकी ४ ज्येष्ठकी १४ माघकी ५ कृष्णपक्षमें शून्य होती हैं और कार्तिककी १४ आषा-

ढकी ७ फाल्गुनकी ३ ज्येष्ठकी १३ माघकी ६ शुक्लपक्षमें शून्य होती हैं इनहीको मासदग्धभी कहते हैं ॥ १० ॥

तथानिन्द्यंशुभेसार्पद्वादश्यांवैश्वमादिमे ॥ ११ ॥
अनुराधाद्वितीयायांपञ्चम्यांपित्र्यभंतथा ॥
त्र्युत्तराश्चतृतीयायामेकादश्यांचरोहिणी ॥ १२ ॥
स्वातीचित्रेत्रयोदश्यांसप्तम्यांहस्तराक्षसौ ॥
नवम्यांकृत्तिकाष्टम्यांपूभाषष्ठ्यांचरोहिणी ॥ १३ ॥

तिथिनक्षत्रसंबंधी दोष कहते हैं; द्वादशीमें आश्लेषा, प्रतिपदामें उत्तराषाढा, द्वितीयामें अनुराधा, तृतीयामें तीनहूं उत्तरा, एकादशीमें रोहिणी, त्रयोदशीमें स्वाती, चित्रा; सप्तमीमें हस्त, मूल; नवमीमें कृत्तिका, अष्टमीमें पूर्वाभाद्रपदा, पंचमीमें मघा शुभकार्यमें वर्जनीय हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

(अनुष्टुप्) कदास्रभेत्वाष्ट्रवायूविश्वेज्यौभगवासवौ ॥
वैश्वश्रुतीपाशिपौष्णेअजपादग्निपित्र्यभे ॥ १४ ॥
चित्राद्वीशौशिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूलेयमेन्द्रभे ॥
चैत्रादिमासेशून्याख्यास्ताराविनाशदाः ॥ १५ ॥

चैत्रमहीनेमें रोहिणी अश्विनी, वैशाखमें चित्रा स्वाती, ज्येष्ठमें उत्तराषाढा पुष्य, आषाढमें पूर्वाफल्गुनी धनिष्ठा, श्रावणमें उत्तराषाढा श्रवण, भाद्रपदमें शतभिषा रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिकमें कृत्तिका मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा विशाखा, पौषमें आर्द्रा अश्विनी हस्त, माघमें श्रवण मूल, फाल्गुनमें भरणी ज्येष्ठा शून्य नक्षत्र होते हैं; इनमें शुभकार्य करनेसे वित्त (धनादि) नाश होते हैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

(अनुष्टुप्) घटोझषोगौर्मिथुनंमेषकन्यालितौलिनः ॥
धनुःकर्कोमृगःसिंहश्चैत्रादौशून्यराशयः ॥ १६ ॥

शून्यराशि कहते हैं कि चैत्रमें कुंभ, वैशाखमें मीन, ज्येष्ठमें वृष, आषाढमें मिथुन, श्रावणमें मेष, भाद्रपदमें कन्या, आश्विनमें वृश्चिक, कार्तिकमें तुला मार्गशीर्षमें धन, पौषमें कर्क, माघमें मकर, फाल्गुनमें सिंहराशि शून्य होती हैं इनकाभी वही फल है ॥ १६ ॥

मासेषु शून्यसंज्ञकाः ।												
शून्य	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	क.	मा.	पौ.	मा.	फा.
तिथयः	९|८ उभ. पक्ष	११ उभ. पक्ष	कृ. १४ शु. १३	कृ. ६ शु. ७	३|२ उ. प.	१|२ उ. प.	१०|११ उ. प.	कृ. ५ शु. १४	७|८ उ. प.	४|५ उ. प.	कृ. ५ शु. ९	कृ. ४ शु. ३
शून्य नक्षत्राणि	रोहि. आश्विनी	चित्रा स्वाती	उत्तराषाढा पुष्य	पू. फा. धनि.	उ. षा. श्रव.	शततारा रेवती	पू. भा.	कृत्ति. मघा	चि. वि.	आर्द्रा अश्वि. हस्त	श्रव. मूल	भर. ज्ये.
शून्यराशयः	११	१२	२	३	१	६	८	७	९	४	१०	५

(इन्द्रवज्रा) पक्षादितस्त्वोजतिथौघटैणौ मृगेन्द्रनक्रौमिथुनांगनेच ॥
चापेन्दुभेकर्कहरीहयान्त्यौगोन्त्यौचनेष्टेतिथिशून्यलग्ने ॥ १७ ॥

(पक्षादि) प्रतिपदासे लेकर विषम तिथियोंमें ये लग्न शून्य होते हैं. जैसे-प्रतिपदामें तुला, मकर; तृ० में मकर, सिंह; पं० मिथुन, कन्या; स० धन, कर्क; न० सिंह, कर्क; ए० धन, मीन; ये शून्यलग्न शुभकार्योंमें वर्ज्य हैं ॥ १७ ॥

(अनु०) नारदः--तिथयोमासशून्याश्वशून्यलग्नानियान्यपि ॥
मध्यदेशेविवर्ज्यानिनदूष्याणीतरेषु तु ॥ १८ ॥
पंग्वन्धकाणलग्नानिमासशून्याश्वराशयः ॥
गौडमालवयोस्त्याज्याअन्यदेशेनगर्हिताः ॥ १९ ॥

जो मासशून्य तिथ्यादि कहे हैं इनके निमित्त विशेषता नारद कहते हैं कि मासशून्यतिथि तथा जो शून्यलग्न कहे हैं वेभी मध्यदेशहीमें वर्ज्य हैं और देशोंमें इनका दोष नहीं तथा पंगु, अन्ध, काण, लग्न (जो विवाह प्रकरणमें कहे हैं) और मासशून्यराशि गौडदेश, (मालव) मलवार (केरल) देशमें वर्जित करने और देशोंमें निंद्य नहीं है ॥ १८ ॥ १९ ॥

(अनु०) वर्जयेत्सर्वकार्येषुहस्तार्कपंचमीतिथौ ॥
भौमाश्विनीचसप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवंतथा ॥ २० ॥

वार नक्षत्र योगसे जो अमृतसिद्धियोग होतेहैं वे किसी तिथिके योगसे अनिष्टभी होजाते हैं. जैसे रविवारका हस्त सिद्धि है परंतु पंचमीके दिन हो तो विरुद्ध है ऐसेही मंगलवारकी अश्विनी सप्तमीको, सोमवारका मृगशिर षष्ठीको ॥ २० ॥

(अनु०) बुधानुराधामष्टम्यांदशम्यांभृगुरेवतीम् ॥
नवम्यांगुरुपुष्यंचैकादश्यांशनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

बुधवारकी अनुराधा अष्टमीको, शुक्रवारकी रेवती दशमीको, गुरुवारका पुष्य नवमीको, शनिवारकी रोहिणी एकादशीको विरुद्ध होती है ऐसे योग हो तो समस्त शुभकृत्यमें वर्जित करने ॥ २१ ॥

(अनु०) गृहप्रवेशेयात्रायांविवाहेचयथाक्रमम् ॥
भौमाश्विनींशनौब्राह्मंगुरौपुष्यंचवर्जयेत् ॥ २२ ॥

उक्त भौमाश्विनी आदि अमृतसिद्धियोग सभी कार्योंमें उक्त हैं तौभी गृहप्रवेशमें भौमाश्विनी, यात्रामें शनिरोहिणी, विवाहमें गुरुपुष्य वर्जितही करना ॥ २२ ॥

(शालिनी) आनन्दाख्यः कालदण्डश्चधूम्रोधातासौम्योध्वांक्षकेतूक्रमेण ॥ श्रीवत्साख्योवज्रकंमुद्गरश्चच्छत्रंमित्रंमानसंपद्मलुंबौ॥२३॥

(उप०) उत्पातमृत्यूकिलकाणसिद्धीशुभोमृताख्योमुशलंगदश्च ॥
मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्यप्रवर्द्धमानाः फलदाःस्वनाम्ना ॥ २४ ॥

आनन्दादियोगोंके नाम-आनंद १ कालदण्ड २ धूम्र ३ प्रजापति ४ सौम्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्रीवत्स ८ वज्र ९ मुद्गर १० छत्र ११ मैत्र १२ मानस १३ पद्म १४ लुंबक १५ उत्पात १६ मृत्यु १७ काण १८ सिद्धि १९ शुभ २० अमृत २१ मुसल २२ गद २३ मातंग २४ राक्षस २५ चर २६ स्थिर २७ वर्द्धमान २८ योग नक्षत्रवारके अनुसार होते हैं जैसे इनके नाम हैं वैसे फलभी देते हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

	आनंदादि	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	फल.
१	आनंद	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	सिद्धि
२	काल	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्यु
३	धूम्र	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	असुख
४	धाता	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	सौभाग्य
५	सौम्य	मृ.	आ	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	धनक्षय
७	ध्वज	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	सौख्यसंपत्ति
९	वज्र	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	क्षय
१०	मुद्गर	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	राजसन्मान
१२	मित्र	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	पुष्टि
१३	मानस	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	सौभाग्य
१४	पद्म	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	धनागम
१५	लुंबक	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	धनक्षय
१६	उत्पात	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	मृत्यु
१८	काण	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेश
१९	सिद्धि	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	वि.	कल्याण
२१	अमृत	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	राजसन्मान
२२	मुशल	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	धनक्षय
२३	गदा	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	अक्षयविद्या
२४	मातंग	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	महाकष्ट
२६	चर	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	गृहारंभ
२८	वर्द्धमान	रे.	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	विवाह.

(अनु०) दास्रादर्केमृगादिन्दौसार्पाद्भौमेकराद्बुधे ॥
मैत्राद्गुरौभृगौवैश्वाद्गण्यामन्देचवारुणात् ॥ २९ ॥

उक्त २८ योगोंके जाननेकी विधि यह है कि, रविवारको अश्विनीसे सोम-

वारको मृगशिरसे एवं मं० को आश्लेषासे बु० को हस्तसे बृ० अनुराधासे शु० उत्तराषाढासे श०को शतभिषासे गिनना, जितनी संख्यामें वर्तमान दिननक्षत्र हो उतनी संख्याका उक्त योगोंमेंसे योग जानना, जैसे रविवारको अश्विनी,आनंद; भरणी, कालदंड तथा सोमवारको हस्त, मृगशिरसे गिनकर ९ हुवा तो नवमयोग वज्र हुआ, ऐसेही अन्यभी जानने. यहां अभिजित्भी गिनना चाहिये तब २८ योग होंगे ॥ २५ ॥

(शालिनी) ध्वांक्षेवज्रेमुद्गरेचेषुनाड्योवर्ज्यावेदाःपद्मलुम्बेगदेश्वाः॥
धूम्रेकाणेमौशलेभूर्द्वयंद्वेरक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

आवश्यकतामें दुष्टयोगोंके वर्ज्य घटी संख्या कहते हैं कि, ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गरके ५ घटी, पद्म, लुम्बकके ४ घटी, गदकी ७ धूम्रकी १ काणकी २ मुसलकी २ और राक्षस, मृत्यु, उत्पात, कालदण्डकी समस्त ६० घटी वर्जित हैं अन्य ग्रन्थोंमें चरयोगकी तीन घटी वर्जित करनी लिखा है ॥ २६ ॥

(अनु०) सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ॥
चन्द्रर्क्षैरवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः॥ २७ ॥

जिस नक्षत्रपर सूर्य हो उससे गिनकर (दिननक्षत्र)जिसपर चन्द्रमा है उसपर्यंत ४।९।६।१०।१३।२० इनमेंसे कोई संख्या हो तो रवियोग होता है यह सभी कार्यमें शुभ होता है पूर्वोक्तादि दोषोंके समूहको नाश करता है ॥ २७ ॥

(इन्द्रवज्रा) सूर्येर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रंचन्द्रेश्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ॥
भौमेश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञेब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥ २८ ॥
(उपजाति) जीवेन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ॥ शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्धयैकथितानि पूर्वैः ॥ २९ ॥

सिद्धियोग कहते हैं कि, रविवारको हस्त, मूल, तीनहूं उत्तरा, पुष्य, अश्विनी. सोमवारको श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, तिष्य, अनुराधा. मंगलवारको अश्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका, आश्लेषा. बुधवारको अनुराधा, हस्त, कृत्ति-

का, आश्लेषा. बृहस्पतिवारको रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य. शुक्रवारको रेवती, पूर्वाफाल्गुनी, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण. शनिवारको श्रवण, रोहिणी, स्वाती सर्वार्थसिद्धि होती है यह प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ २८ ॥ २९ ॥

(शालिनी)

द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्च ब्राह्म्यात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ॥
स्यादुत्पातोमृत्युकाणौचसिद्धिर्वारेर्काद्येतत्फलंनामतुल्यम् ॥ ३० ॥

रविवारको विशाखासे चार नक्षत्र क्रमशः उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि योग होते हैं. जैसे–रविवारको विशाखा उत्पात, अनुराधा मृत्यु, ज्येष्ठा, काण मूल सिद्धि होते हैं. ऐसेही सोमवारको पूर्वाषाढासे मंगलको धनिष्ठासे बुधको रेवतीसे गुरुवारको रोहिणीसे शुक्रको पुष्यसे शनिको उत्तराफाल्गुनीसे उक्त ४ योग होते हैं इनके फलभी जैसे नाम वैसेही हैं ॥ ३० ॥

	योग.	सू.	चं	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	चरयोग	पू. स्वा.	आर्द्रा	वि.	रो.	पुष्य	भ.	मू.
२	क्रकचयोग	१२ ति.	११	१०	९	८	७	६
३	दग्धयोग	१२ ति.	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युयोग	ति. १।६।११	२।७।१२	१।१।६	भ. ९ १४	२।७ १२	३।८ ११	५।१० १५
५	सिद्धियोग	ति०	ति०	३।८ १३	७।२ १२	५।१० १५	१।६ ११	८।९ १४
६	उत्पातयोग	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.
७	मृत्युयोग	अनु.	उ.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.
८	कालयोग	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.
९	सिद्धियोग	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.
१०	यमदंष्ट्रयोग	म. ध.	मू. वि.	कृ. भ.	पू. षा. पु.	उ. षा. अ.	रो. अ.	श्र. श.
११	यमघंट	म.	वि.	आ.	मू.	कृ.	रो.	ह.
१२	मुशलवज्र	म.	चि.	उ. षा.	ध.	उ.	ज्ये.	रो.
१३	अमृतसिद्धि	ह.	श्र.	अ.	अनु.	पुष्य	रे.	रो.

(अनु०) कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः ॥
हूणवंगखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

दुष्टयोगोंके परिहार कहते हैं कि, जो तिथि वारसे उत्पन्न क्रकच (वारदग्ध) आदि हैं तथा तिथि और नक्षत्रसे उत्पन्न जैसे-"अनुराधा द्वितीयायाम्" इत्यादि तथा नक्षत्र वारसे उत्पन्न जैसे-"याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठांत्यं रवेर्दग्धभं स्यात" इत्यादि और तिथि वार नक्षत्र तीनहूंसे उत्पन्न जैसे-"वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्के पंचमीतिथौ" इत्यादि हैं. ये समस्तदोष हूण-देश (वंग) बंगाला और (खशदेश) उत्तरखण्डमें वर्जित हैं और देशोंमें निषिद्ध नहीं हैं ॥ ३१ ॥

(शा० वि०) सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धेनिशाह्नोर्घटी
त्र्यंशं वैकुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम् ॥
उत्पातग्रहतोऽद्र्यहांश्च शुभदोत्पातैश्च दुष्टंदिनं
षण्मासंग्रहभिन्नभंत्यजशुभेयौद्धंतथौत्पातभम्॥३२ ॥

समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित पदार्थ कहते हैं कि, चन्द्रमा तथा पापग्रह, सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतुसे युक्त लग्न एवं नवांशभी सभी कार्यमें त्याज्य हैं तथा मध्याह्न एवं अर्द्धरात्रिके मध्य १ घटी अभिजित् मुहूर्त्त उत्तम होता है; परंतु इसके ठीक मध्यके (घटीत्र्यंश) २० पला (१० पूर्वकी १० परभागकी) भी त्याज्य हैं, ऐसेही सूर्य चन्द्र ग्रहणसे पूर्व तीन और (उत्पात) प्रकृतिसे विरुद्ध होनेको उत्पात कहते हैं सो तीन प्रकार हैं. (१) दिव्य-केतुदर्शन, ग्रहनक्षत्र वैकृत, उल्का, निर्घात, परिवेषादि. (२) अन्तरिक्ष-गंधर्वनगर, इंद्र-धनुषादि. (३) भौम-पृथ्वीसम्बंधी भूमिकंप, वृक्षवैकृत, पशुवैकृत, अग्निजल-वैकृतादि हैं. जिस दिन ऐसा कोई उत्पात हो उससे तथा ग्रहण दिनसे ७ दिन पर्यन्त शुभकृत्य न करना ऐसेही केतु (पुच्छलतारा) के दर्शनमेंभी जानना और मतांतरसे ग्रहणका नियम सर्वग्रासमें ७ दिन, त्रिभागोंमें ६ दिन, अर्द्धग्रास-में ४ दिन, चौथाई ग्रासमें ३ दिन, और १ । २ । ३ अंगुल ग्रासमें १

दिन मात्र वर्ज्य है (शुभदोत्पातमें) १ दिन वर्ज्य (शुभदोत्पात) बिजली गिरना, भूकंप सन्ध्यासमयमें निर्घातशब्द, परिवेष रेज विना अग्निधूम, सूर्यबिम्ब रक्त, उदयास्तमें वृक्षोंमें आसव, तेल, गोंद, फल, पुष्प निकलना, वसंतमें गौ तथा पक्षियोंकी मदवृद्धि, तारापतन, उल्कापतन, विना अग्नि शब्द, वायुमें धूमरेखा रक्तकमल संध्यामें (अरुण) गुलाबीरंग, आकाशमें क्षोभ, विना ग्रीष्म नदी सूखना अकस्मात् पृथ्वी फट जाना, जलजीवोंका स्थलमें आना अकस्मात् पहाड उड जाना, दिव्य स्त्री, विमान, भूतगंधर्वनगर, अद्भुतदर्शन, दिनमें शुक्ररहित ताराओंका देखना, पर्वतोंमें विना मनुष्य गीत तथा बाजे सुनना, ठंडे वायुमें शर्करा, मृग तथा पक्षियोंका नाचना, यक्ष राक्षसादिकोंका देखना, विना मनुष्य मनुष्यकी वाणी सुनना, दिशाओंमें घूमता अन्धकार, अकाल हिमपात आकाशका कृष्णरंग होना, स्त्री तथा गौ बकरी घोडी मृगपक्षियोंके गर्भसे अन्य रूपजीव उत्पन्न होना इत्यादि हैं. पापग्रहवेधितनक्षत्र तथा जिस नक्षत्रसे ग्रहयुद्ध हुआहो और जिस नक्षत्रमें दारुण उत्पात हुआ हो ये सब छःमहीने पर्यंत वर्ज्य हैं ॥ ३२ ॥

(इं०व०) नेष्टंग्रहर्क्षंसकलार्द्धपादग्रासेक्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ॥
पूर्वंपरस्तादुभयोस्त्रिघस्राग्रस्तेस्तगेवाभ्युदितेर्द्धखण्डे ॥ ३३ ॥

नक्षत्रकी ग्रासपरत्वसे वर्जनीयता कहते हैं कि, सर्वग्रास ग्रहण हो तो ग्रहणनक्षत्र छः महीने, अर्द्धग्रासमें तीन महीने और चौथाई ग्रासमें एक महीना वर्जित करना और ग्रस्तास्त हो तो पहलेके तीन दिन वर्ज्य हैं पूर्वके शुभ हैं यदि ग्रस्तोदय हो तो पीछेके तीन दिन नेष्ट पूर्वके शुभ हैं जो अर्धग्रास हो तो पूर्व तथा पीछेकेभी ३ । ३ दिन, सर्व ग्रासमें सातही दिन हैं ॥ ३३ ॥

(व० ति०) जन्मर्क्षमासतिथयोव्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानितिथिक्षयर्द्धी॥न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपातविष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ॥ ३४ ॥

शुभकृत्योंमें जन्मके नक्षत्र, महीना, तिथि आदि वर्ज्य हैं, मासप्रमाण चान्द्रमाससे जन्मतिथिसे ३० दिनपर्यंतका है, विष्कम्भादि योगोंमें व्यतीपात तथा वैधृति सर्वकर्ममें वर्जित हैं तथा भद्रा, अमावास्या (पितृदिन), मातापिताका श्राद्धदिन (क्षयतिथि), जो एक वारमें तीन तिथि स्पर्श होती हैं, (वृद्धितिथि) जो एक तिथि तीन वारोंको स्पर्श करती है तथा (क्षयमास) जिस महीने सावनमें अर्थात् दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति दो आवें, (अधिकमास) जो दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति न आवे, एवं कुलिक योग, प्रहरार्द्धयोग

(आगे कहेंगे) तथा महापात, महावैधृति (ये योग गणितसे ज्ञात होते हैं) और विष्कम्भयोग वज्रयोगके आदिकी तीन घटिका वर्जित करनी; उक्तदोषोंमें तिथि उपलक्षणसे नक्षत्रयोगभी क्षयवृद्धिके परिहार ग्रन्थान्तरोंमें हैं कि, बृहस्पति केन्द्रमें हो तो (क्षय) अवमका और बुध केन्द्रमें हो तो (वृद्धि) त्रिस्पृशाका दोष नहीं होता ॥ ३४ ॥

(अनुष्टुप्) परिघार्धपञ्चशूलेषट्चगण्डातिगण्डयोः ॥
व्याघाते नवनाडयश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥ ३५ ॥

परिघयोगका पूर्वार्ध, शूलयोगकी प्रथम पांच घटी गण्ड एवं अतिगण्डकी छः घटी व्याघातकी नौ घटी आदिकी सर्व कर्ममें वर्जित हैं ॥ ३५ ॥

(अनु०) वेदांगाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत् ॥
वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाशरानाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशीचतुर्दशी ये पक्षरंध्रतिथि हैं आवश्यकतामें इनके ८ । ९ । १४ । २५ । १० । ५ इतनी घटिका आदिकी वर्जित हैं; जैसे चतुर्थीकी ८ षष्ठीकी ९ अष्टमीकी १४ नवमीकी २५ द्वादशीकी १० चतुर्दशीकी ५ घटी वर्जित करके शेष शुभकृत्यमें ग्राह्य हैं ॥ ३६ ॥

(अनु०) कुलिकः कालवेलाचयमघण्टश्चकंटकः ॥
वाराद्विघ्नेक्रमान्मन्देबुधेजीवेकुजेक्षणः ॥ ३७ ॥

वर्तमानवारसे गिनकर जितनी संख्यामें शनि हो उसे दूना कर जो अंक हो उस दिन उतनवांमुहूर्त यमघंट होता है, तथा वर्तमान वारसे जितनवां बुध हो उसे दूना कर जो अंक हो उतनी संख्याका मुहूर्त कालवेला होती है, ऐसेही वर्तमान वारसे बृहस्पत्ति जितनी संख्यामें हो उसे दूना कर यमघंट मुहूर्त होता है तथा वर्तमानवारसे मंगल जिस संख्यामें हो वह कंटक मुहूर्त होता है. उदाहरण— जैसे रविवारके दिन रविसे शनि सातवां है इसे दूना कर १४ भया तो रविवारके दिन चौदहवां मुहूर्त कुलिक हुवा तथा रविसे बुध चौथा है द्विगुण ८ हुवा इस दिन आठवां मुहूत कालवेला है तथा इससे बृहस्पति पांचवाँ २ गुण १० इस दिन दशवां मुहूर्त यमघंट है ऐसेही रविसे मंगल तीसरा २ गुण ६ रविवारको छठा मुहूर्त कंटक है इसी प्रकार सभी वारोंके मुहूर्त जानने. ये मुहूर्त ४ । ४ घडीके होते हैं शुभकृत्योंमें वर्जित हैं किंतु किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि, इन मुहूर्तोंका उत्तरार्द्ध निषिद्ध है पूर्वार्द्ध दूषित नहीं और रात्रिमें इनका दोष नहीं अर्द्धयाम सर्वदा त्याज्य है इसको आगे कहेंगे ॥ ३७ ॥

यामार्धचक्रम् ।

वार	यामार्ध. संख्या.	यामार्ध. प्रहर.	यामार्ध. तिथि.
र.	४	१२	१
च.	७	२४	२८
मं.	२	४	८
बु.	५	१६	२०
गु.	८	२८	२२
शु.	५	८	१२
श.	६	२०	२४

कुलिक आदि मुहूर्तचक्रम् ।

	रवि.	चन्द्र.	मंगल.	बुध.	बृह.	शुक्र.	शनि.
कुलिक. दुर्मुहूर्त.	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला.	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक.	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्द्धयाम.	७	९	३	९	१५	५	९

(शा० वि०) सूर्य्येषट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्ज-
रांङ्कार्का विश्वपुरन्दराः क्षितिसुतेद्व्यब्ध्याग्नितर्कादिशः ॥
सौम्येद्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिता जीवेद्विषड्भास्कराः
शक्राख्यास्तिथयः कलाश्चभृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः ॥ ३८ ॥
(व० ति०) दिग्भास्करामनुमिताश्चशनौशशिद्विनागादिशो
भवदिवाकरसंमिताश्च ॥ दुष्टक्षणःकुलिककण्टककालवेलाः
स्युश्चार्द्धयामयमघण्टगताः कलांशाः ॥ ३९ ॥

सुगमतासे दोष जाननेके हेतु दुर्मुहूर्त्तादि कहते हैं कि, रविवारको ६ । ७ । ८ । १० । १४ । सोमवारको ४ । ६ । ८ । ९ । १२ । १३ । १४ । मंगलको २ । ४ । ३ । ६ । १० । बुधको २ । ४ । ८ । ९ । १० । १४ । बृहस्पतिवारको २ । ६ । १२ । १४ । १५ । १६ । शुक्रको ४ । ५ । ६ । ९ । १० । १२ । शनिवारको १ । २ । ८ । १० । ११ । वे मुहूर्त निंद्य अर्थात् दुष्टक्षण कुलिक, कंटक, कालवेला, अर्द्धयाम, यमघंट नामक यथावकाश होते हैं. जैसे–रविवारके दिन १४ वां मुहूर्त दुर्मुहूर्त्त; एवं कुलिकभी ६ छठा कंटक ७ सातवां ८ आठवां अर्धयाम तथा आठवां कालवेलाभी और १० दशम यमघंट संज्ञक होते हैं ऐसेही सोमवारादिमेंभी उक्त संख्याओंमें उक्तनामक जानने. मुहूर्त्त २ घडिका होता है परंतु दिनमान न्यूनाधिक होनेसे यहां दिनका षोडशांश लिया है जिस दिन जो दिनमान है उससे १६ से भाग लेकर जो मिले उतनेका एक मुहूर्त जानना ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

(अनु०) विपाशेरावतीतीरेशतद्रोश्चत्रिपुष्करे ॥
विवाहादिशुभेनेष्टंहोलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ ४० ॥

विपाशा (ब्याशा) एवं इरावती नदी (पंजाब देशमें है) के तीर तथा शतद्रु (शतलज) के तीर और त्रिपुष्कर देशमें (होलाष्टक) फाल्गुन शुक्ल अष्टमीसे फाल्गुनी " हुताशनी " पूर्णमासी पर्यंत विवाहादि शुभकार्य्य शुभ नहीं अन्य- देशोंमें इनका दोष नहीं ॥ ४० ॥

(अनु०) मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दौशस्तेशुभाऽगुः ॥
केचिद्यामोत्तरंचान्येयात्रायामेवनिन्दितान् ॥ ४१ ॥

आनंदादियोगोंमें मृत्युयोग, (क्रकच) वारदग्ध (दग्धयोग) " सूर्येशपं चाग्नीत्यादि " और विषयोग, हुताशन योगादि, पूर्वोक्त दुष्टयोग चंद्रमाके गोचर प्रकरणोक्त प्रकारसे शुभ होनेमें शुभ अर्थात् उक्त दुष्टफल छोडकर शुभ फल देनेवाले होते हैं. किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि उक्त दुष्टयोगोंका एक प्रहरसे उपरांत दोष नहीं है और किसी किसीका मत है कि उक्त योग यात्राहीमें वर्जित हैं और कार्योंमें नहीं ॥ ४१ ॥

(भुजंगप्रयातं) अयोगेसुयोगोपिचेत्स्यात्तदानीमयोगं
निहत्यैषसिद्धिंतनोति ॥ परेलग्नशुद्ध्याकुयोगादिनाशं
दिनार्द्धोत्तरंविष्टिपूर्वंचशस्तम् ॥ ४२ ॥

जिस दिन मृत्यु क्रकचादि कोई दुष्टयोग हो तथा सिद्धि (अमृतसिद्धि) योगभी हो तो दुष्टयोगके फलको नाश करके कार्यसिद्धि देता है; अन्य आचा- र्योंका मत है कि (लग्नशुद्धि) लग्न समीचीन बलवान् होनेमें मृत्युक्रकचद- ग्धादियोगोंका नाश होता है और भद्रा व्यतीपात आदियोंका दोष मध्याह्नपर्यंत होता है मध्याह्नोत्तर नहीं है ऐसेभी भौमवार प्रत्यरि जन्मनक्षत्रकाभी है ॥ ४२ ॥

(शालिनी) शुक्लेपूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यांचतुर्थ्यांपरार्द्धे ॥
कृष्णेऽन्त्यर्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योःपूर्वेभागेसप्तमीशम्भुतिथ्योः ॥ ४३ ॥

शुक्लपक्षकी अष्टमी, पूर्णमासीके पूर्वार्ध एवं एकादशी, चतुर्थीके उत्तरार्धमें भद्रा होती है, कृष्णपक्षकी तृतीया दशमीके उत्तरार्धमें तथा सप्तमी, चतुर्दशी पूर्वभाग (पूर्वार्ध) में भद्रा होती है यह (भद्रा) विष्टिकरण है. करण गिननेकी रीतिसे उक्त तिथियोंके उक्त दलोंमें यह करण आता है, यह बडा दोष समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित है ॥ ४३ ॥

(शा० वि०) पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघटचः शरा
विष्टेरास्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु ॥
याम्येष्वन्त्यघटीत्रयंशुभकरंपुच्छंतथावासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्द्धजाशुभकरी रात्रौतुपूर्वार्द्धजा ॥ ४४ ॥

भद्राके मुख पुच्छविभाग कहते हैं कि, चतुर्थ्यादि तिथियोंके पंचमादि प्रहरोंके आदिकी पांच (५) घटी भद्राका मुख होताहै; जैसे चतुर्थीके पंचम प्रहरके, आदिकी ५ घटी, अष्टमीके दूसरे प्रहरकी ५ घटी, एकादशीके, सातवें प्रहरकी, पूर्णमासीके चौथे, तृतीयाके आठवें, सप्तमीके तीसरे, चतुर्दशीके पहले प्रहरकी पांच घटी भद्राका मुख होताहै. यह अति दोषद हैं और चतुर्थीके आठवें, अष्टमीके प्रथम, एकादशीके छठे, पूर्णिमाके तीसरे, तृतीयाके सातवें, सप्तमीके दूसरे, दशमीके पांचवें, चतुर्दशीके चौथे प्रहरके अंतिम (पिछली) तीन (३) घटी पुच्छसंज्ञक होती हैं. यह पुच्छ भद्राका दुष्ट नहीं होता अर्थात शुभकार्यमें ग्राह्य है यहां प्रहरगणना तिथिके आरम्भसे है तिथिका सर्व भोग्यके आठ भाग ८ प्रहर मानने चाहियें । भद्राके अंगविभाग ग्रन्थान्तरोंमें ऐसे हैं मुखमें ५ गलेमें १ हृदयमें ११ नाभिमें ४ कटिमें ६ पुच्छमें ३ घटी हैं इनमेंसे पुच्छकी ३ घटी शुभ हैं. श्रीपतिआचार्य कहते हैं कि, एक समय दैत्योंने देवताओंको जीतलिया तब महादेवजीने क्रोधसे भालनेत्र खोला खोलतेही क्रोधाग्निका एक कण निकला वह खरमुखी तीन पैरकी, लांगूल लिये, सात हाथवाली, सिंहसमान गला, कृशोदरी, प्रेतवाहिनी मूर्ति उत्पन्न होकर दैत्योंका संहार करती भई । तब देवताओंने स्तुति करके इसका नाम भद्रा रक्खा और बवादिकरणोंमें स्थान एवं भाग दिया आवश्यक कृत्यमें भद्राका परिहार कहते हैं कि तिथिउत्तरार्धकी भद्रा दिनमें तथा तिथिपूर्वार्द्धकी रात्रिमें शुभ होती है और आचार्यांतरमत ऐसाभी है कि भद्रा, मंगलवार, व्यतीपात, वैधृति, मृत्युयोग, मध्याह्नसे ऊपर दोष नहीं देते ॥ ४४ ॥

(अनुष्टुप्) कुम्भकर्कद्वयेमर्त्येस्वर्गेऽब्जेजात्रयेलिगे ॥
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेधोभद्रायत्रैवतत्फलम् ॥ ४५ ॥

भद्रावास कहते हैं कि कुम्भ, मीन, कर्क, सिंहके चन्द्रमामें भद्रा हों तो मृत्युलोकमें तथा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिकमें, स्वर्गलोकमें और कन्या, धन, तुला, मकरमें पाताललोकमें भद्राका निवास है. जिस दिन जिस लोकमें भद्रा रहती है वहीं अपना फल देती है अन्य २ लोकोंमें नहीं यहभी परिहारही है ॥ ४५ ॥

(शा० वि०) वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठेव्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानिसोमाष्टके ॥
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्म वेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम्॥४६॥
दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वंदेवतीर्थेक्षणंस-
न्यासाग्निपरिग्रहौनृपतिसंदर्शाभिषेकौगमम् ॥
चातुर्मास्यसमावृतीश्रवणयोर्वेधंपरीक्षांत्यजेद्वृद्ध-
त्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासेतथा ॥ ४७ ॥

कालशुद्धि कहतेहैं कि, नवीन बावडी बनाना, बगीचा, तालाव, कूवा, गृह इनका आरम्भ, गृहप्रतिष्ठा (गृहप्रवेश) व्रतोंका आरम्भ, व्रतोंका उद्यापन, तुलादि सोलह महादान, सोमयाग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान (केशांतकर्म), इष्टि-संचयन, जलशाला (प्याउ), प्रथम उपाकर्म (श्रावणी), वेदव्रत, उपनिषद व्रत, महानाम्न्यव्रत, काम्यवृषोत्सर्ग "न कि ग्यारहवें दिनवाला" तथा बालकोंके जातकर्मादि संस्कार किंतु जिनका मुख्य काल व्यतीत होगया हो, दीक्षा (मंत्र-ग्रहण, चूडाकर्म, अपूर्व देवता एवं तीर्थ) का दर्शन, अग्निहोत्र, चातुर्मास्ययज्ञ, समावर्त्तन, कर्णवेध, तप्तमाषादि परीक्षा (जो दिव्यमें न्यायविषय होती है) नववधूप्रवेश, देवताकी प्रतिष्ठा, व्रतबन्ध, विवाह, संन्यासग्रहण, प्रथम राजदर्शन, राज्याभिषेक, यात्रा इतने कृत्य बृहस्पति शुक्रके अस्तमें, बालत्वमें, वृद्धत्वमें और अधिमास (मलमास), क्षयमासमें न करने. इसमें ग्रंथांतरीय निर्णय है कि "सीमंतजातकादीनि प्राशनांतानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यत्वं गुरुशुक्रयोः ॥ १ ॥ तथा, अतीतकालान्यखिलानि तानि कार्याणि सौम्यायनगे दिनेशे ॥ सिते गुरौ चापि हि दृश्यमाने तदुक्तपश्चाङ्गदिनेप्यखण्डे ॥ २ ॥" अर्थात सीमंत, जातकर्मसे लेकर अन्नप्राशनपर्यंत जितने शिशुसंस्कार हैं नियत कालपर होनेसे इनके लिये मलमास, क्षयमास, गुर्वस्त शुक्रास्तका दोष नहीं। जब उक्त कृत्योंका मुख्यकाल (जैसे नामकर्म ११ । १२ दिनमें अन्नप्राशन छठे महीनेमें नियत है) किसी कारण बीत जाय तो वह कृत्य उत्तरायणमें बृहस्पति शुक्रके उदयमें और उस कृत्यके उक्त पंचांग अखंड (समस्त शुद्ध)में करना॥४६॥४७॥

(शालि०)अस्तेवर्ज्यंसिंहनक्रस्थजीवेवर्ज्यंकेचिद्वक्रगेचातिचारे॥
गुर्वादित्येविश्वघस्रेपिपक्षेप्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥ ४८ ॥

जो जो कार्य बृहस्पतिके अस्तमें वर्जित कहेहैं वेही कार्य सिंह तथा मकरके बृहस्पतिमेंभी वर्जित हैं परन्तु आचार्यांतरमतसे गया, गोदावरी यात्रामें दोष नहीं, किसी आचार्योंका मत है कि, बृहस्पतिके वक्र एवं अतिचारमेंभी उक्त कृत्य वर्जित हैं परन्तु २८ दिन पर्यंत और ऐसाभी है कि गोचरसे ५ । ९ । ७ । २ । ११ राशिमें बृहस्पति जिसका हो उसको वक्रातिचारमेंभी ऊक्त कृत्योंका दोष नहीं यहभी मतान्तर है तथा (गुर्वादित्य) गुरु सूर्यके एकराशिगत होनेमेंभी उक्तकृत्य वर्जित हैं मतान्तरसे (गुर्वादित्य) बृहस्पतिके राशिमें सूर्य, सूर्यके राशिमें बृहस्पति होनेमें कहाहै परन्तु मुख्यपक्ष पूर्वोक्तही है तथा (विश्वघस्र पक्ष) जिस पक्षमें दो (२) तिथियोंका अवम होकर तेरह १३ दिनका पक्ष हो इसमेंभी उक्तकृत्य वर्जित हैं और हस्तिदन्तादि तथा रत्नादिसंबन्धी भूषणधारण भी उक्त दोष (सिंहे गुरु आदि) में न करना ॥ ४८ ॥

(इं० व०) सिंहेगुरौसिंहलवेविवाहोनेष्टोथगोदोत्तरतश्चयावत् ॥
भागीरथीयाम्यतटंहिदोषोनान्यत्रदेशेतपनेपिमेषे ॥ ४९ ॥

सिंहस्थ गुरुके परिहार तीन प्रकारसे कहते हैं कि, विवाह तथा मतांतरसे व्रतबन्धमें मात्र सिंहस्थगुरुका दोष है अन्यकार्योंमें नहीं है वहभी सिंहराशिके सिंहांशक १३ । २० अंशसे १६ । ४० अंशके समस्त सिंहराशिके गुरुमें नहीं, गोदावरीके उत्तर, भागीरथीके दक्षिण अर्थात् गंगा गोदावरी नदियोंके बीच जो देश हैं उनमें उक्त दोष है अन्यदेशोंमें नहीं और मेषके सूर्य (सौरमान) के वैशाखमेंभी उक्त दोष सर्वत्र नहीं है ॥ ४९ ॥

(अनुष्टुप्) मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ॥
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ ५० ॥
मेषेर्के सद्व्रतोद्वाहौ गंगागोदान्तरेपि च ॥
सर्वसिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्त मतको पुष्ट करते हैं कि मघा आदि पांच चरण मघाके चार (४) पूर्वा फाल्गुनीके (१) प्रथम पर्यंत बृहस्पति जबतक रहे तबतक सभी देशोंमें निंद्य है अन्यचरणों (पूर्वाके तीन उ०फा के प्रथम)में गंगा गोदावरीके मध्यवर्तिदेशोंमें मात्र वर्जित है अन्यदेशोंमें नहीं ॥ ५० ॥ और सिंहके बृहस्पतिमें सूर्य मेषका हो तो गंगा गोदावरीके मध्यदेशोंमेंभी विवाह व्रतबंध शुभ होते हैं समस्त सिंहका गुरु कलिंग, गौड, गुर्जरदेशोंमें वर्ज्य है अन्यत्र नहीं ॥ ५१ ॥

(शालिनी) रेवापूर्वेगण्डकीपश्चिमेचशोणस्योदग्दक्षिणेनीचइज्यः ॥
वर्ज्योनायंकौंकणेमागधेचगौडेसिन्धौवर्जनीयःशुभेषु ॥ ५२ ॥

(नीच) मकरके बृहस्पतिका दोषपरिहार दो प्रकारसे कहते हैं कि, रेवा (नर्मदा-दक्षिण अमरकंटकसे जबलपूर विंध्यके पार्श्व २ होसंगाबाद, ॐकारनाथ, मंडलेश्वर महेसर होकर भडोचके समीप खम्भातकी खाडीमें द्वारकाके समीप पश्चिम समुद्रमें मिली) इसके पूर्वभागके देशमें तथा (गंडकी) नेपाल जिलाके पश्चिम भाग हिमालय मुक्तिनाथसे पटना हरिहर क्षेत्रपर गंगामें मिली इससे लेकर मानपर्वत वा सारस्वतदेश अर्थात् द्वारकाके उत्तर पश्चिम समुद्रपर्यंत गंडकीका पश्चिम है इन देशोंमें तथा शोणनद (अमरकंटकसे विंध्याचल होकर जिला आरा और मनेरके बीच गंगामें मिला) इसके दक्षिण उडेला, सिरगुजा, लुहारदगा, रुहता, सगड, विहार आदि एवं उत्तरमें बुंधेलखंड, प्रयागराज (इलाहाबाद) अवध रुहेलखंड, दिल्ली,(इंद्रप्रस्थ) आगरा, मथुरा, नदीनाथ, ज्वालामुखी आदि उत्तर हिमालयपर्यंत इन देशोंमें मकरगुरुका दोष नहीं तथा (कोंकण) मुंबईसे १४० मील दक्षिण समुद्रके तीर (गौडदेश) गौडबंगाला, मालदह, पुरनिया (लक्ष्मणावती) जन्नताबाद, (मगधदेश)जिला गया, पटना (सिंधुदेश) अटक और झमलके बीच जिसको सिंधुसागर कहते हैं इन देशोंमें शुभकार्य वर्जित हैं इन दोनोंही पक्षसे अतिरिक्त देशोंको ग्रंथांतरीयमतसे ६० दिन वर्जित हैं तथा मकरमें मकरांशमात्र वर्जित हैं समस्त मकर गुरु तथा सभी देशोंके लिये नहीं ॥ ५२ ॥ इस विषयमें संवत १९४६ ईसवी सन् १८९० में किसी २ मत्सारियोंके उत्तेजनपर मैंने समाचारपत्रोंमें इस विषयकी समालोचना की थी जिसपर काशीवासी६४ विद्वान् शास्त्रियोंके ओरसे एक निर्णयसंबंधी विजयपत्र मिला जिसमें उपरोक्त अर्थ अनेक प्रमाणोंसे प्रतिपादित हैं ॥ ५२ ॥

(वंशस्थवृ०) गोजान्त्यकुम्भेतरभेतिचारगोनोपूर्वराशिंगुरु
रेतिवक्रितः ॥ तदाविलुप्ताब्दइहातिनिन्दितःशुभेषुरे
वासुरनिम्नगान्तरे ॥ ५३ ॥

वृष, मेष, मीन, कुंभराशियोंके विना अन्यराशियोंमें बृहस्पति अतिचारसे (दश ग्यारह महीने) दूसरी राशिपर जाकर कुछ दिनोंमें वक्र होकर पुनः पूर्वराशिमें न आवे तो वह संवत्सर लुप्त कहाता है, यह शुभकृत्योंमें अतिनिंदित है यदि १ । २ । ११ । १२ राशियोंमें अतिचार करे तो लुप्तसंवत्सरका दोष

नहीं होता. देशभेदसे परिहार है कि रेवा (नर्मदा) और (गंगा) भागीरथीके बीचके देशोंमें लुप्त संवत्सरका दोष है अन्यत्र नहीं. आचार्यांतरमतसे बृहस्पति शुक्रके सम सप्तम (एकसे दूसरी: सातवीं राशि) में होनेपरभी उक्त देशोंमें अस्तके तुल्य दोष है ॥ ५३ ॥

(उपजा०) पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयोदिनार्द्धतः ॥ ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैःपलैरूर्ध्वंतथाधोदिनपप्रवेशनम् ॥ ५४ ॥

लंकासे सुमेरुपर्यंत एक समसूत्र बांधकर उसके नीचे जो जो देश आवे वह मध्यरेखा है जहांसे वह रेखागत कोई देश समीप हों वह जितने योजन (चार-कोशका एक) होवे देशांतर योजन कहाते हैं उन योजनोंमें चतुर्थांश घटायके पंद्रह (१५) में (न्यूनाधिक) पर योजन हो तो जोडना पूर्व हो तो घटाना जिस दिन वारप्रवेश देखना है उस दिनके दिनार्द्धमें (न्यूनाधिक) पंद्रहमें न्यून वा अधिक किया गया जो देशांतर है वह (१५) से अधिक हो तो उसमें १५ घटाना यदि १५ से न्यून हो तो पंद्रहमें उसे घटायदेना यह प्रवृत्ति होती है. उसमेंभी स्मरण चाहिये कि, दिनार्द्धसंस्कार विशिष्ट अंकसे यदि १५ न्यून हो तो सूर्योदयसे पीछे उक्त पलाओंमें, यदि १५ से न्यून वह गणितागत अंक हो तो सूर्योदयसे प्रथमही वारप्रवेश जानना. उदाहरण–काशीपुरी प्राक् मध्यरेखा कुरुक्षेत्रसे ६३ योजन है. चौथाई घटाया ४७ । १५ प्राक्योजन होनेसे १५ में पला ४७ घटाई तो १४ । १३ हुये दिनार्द्ध १७ । २ से न्यून होनेसे १४ । १३ घटाया २ । ४९ शेष रहा; दिनार्धसे न्यून गणितांग अंक होनेसे सूर्योदयसे पीछे २ । ४९ में वारप्रवेश होगा ॥ ५४ ॥

(अनुष्टुप्) वारादेर्घटिकाद्विघ्नाःस्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः ॥ सैकातष्टा नगैः कालहोरेशादिनपात्क्रमात् ॥ ५५ ॥

वारप्रवृत्तिकी इष्टघटी द्विगुण करके २ जगे स्थापन करना एक जगे (५) से भाग लेकर लाभ छोडके शेष द्वितीयस्थानस्थितिमें घटाय देना शेष जो रहे उसमें १ जोडना सातसे अधिक हो तो (७) से भाग लेकर शेष काल होरेश दिनके वारसे गिनकर जानना ऐसेही एक दिनमें सभी ग्रहोंकी होरा जाननी. एकहोरासे दूसरी होरा उससे छठे ग्रहकी होती है. जैसे रविवार प्रवेश इष्टघटी६ में हुआ द्विगुण (१२) दो जगे स्थापन किया एकजगे (५) से भाग लेकर

२ पाया दूसरे स्थानके १२ में घटाया १० रहा इसमें ७ से भाग लेकर ३ शेष रहा एक और जोडदिया ४ रविवारके दिनकी होरा देखनी है इसलिये रविसे चौथी बुधकी होरा हुई यहां वारप्रवृत्ति केवल कालहोराके निमित्त है और कार्योंमें वार सूर्योदयहीसे माना जाता है यह वसिष्ठसिद्धांतमें लिखा है ॥ ५५ ॥

(शालिनी) वारेप्रोक्तेकालहोरासुतस्यधिष्ण्येप्रोक्तस्वामिति-
थ्यंशकेऽस्य ॥ कुर्य्याद्दिक्शूलादिचिन्त्यंक्षणेषुनैवोल्लंघ्यः
पारिघश्चापिदण्डः ॥ ५६ ॥

कालहोराका प्रयोजन है कि,जो कार्य्य जिस वारमें करना कहा है वह उसके कालहोरामें हरएक वारमें करलेना, जैसे रविवारके दिन प्रवेशका निषेध है परंतु चन्द्र बुध गुरु शुक्रके होरामें रविवारके दिनभी आवश्यकमें प्रवेश कर लेना ऐसेही जिस नक्षत्रमें जो कार्य नहीं करना कहाहै उसमें यदि आवश्यक हो तो उस नक्षत्रमें जिस मुहूर्तमें पूर्वोक्त नक्षत्रके स्वामीकी कालहोरा हो उसमें वह कृत्य करलेना। मुहूर्तके स्वामी विवाहप्रकरणमें कहे हैं उक्तविषय मुहूर्त्तमें इतना अवश्य स्मरण चाहिये कि दिक्शूल तथा पारिघदंडादि विचार लेने इनका विचार यात्राप्रकरणमें है ॥ ५६ ॥

(शा० वि०) मन्वाद्यास्त्रितिथीमधौतिथिरवीऊर्ज्जेंशुचौदिक्तिथी
ज्येष्ठेन्त्येचतिथिस्त्विषेनवतपस्यश्वाःसहस्येशिवाः ॥
भाद्रेग्निश्चसितेत्वमाघ्नभसःकृष्णेयुगाद्यासितेगोग्नी-
बाहुलराधयोर्मदनदर्शौभाद्रमाघासिते ॥ ५७ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ प्रथमं शुभाशुभप्रकरणम् ॥ १ ॥

चैत्र शुक्लपक्षकी ३। १५ कार्तिक शुक्लकी १५। १२ आषाढशुक्लकी १०। १५ ज्येष्ठ तथा फाल्गुनकी १५ आश्विन शुक्लकी ९ माघशुक्लकी ७ पौष शुक्लकी ११ भाद्रशुक्लकी ३ श्रावणकृष्णकी ३० (अमा) ८ (अष्टमी) ये मन्वादि हैं और कार्तिकशुक्लके ९ वैशाखशुक्लकी ३ भाद्रकृष्णकी १३ माघकी ३० (अमा) ये युगादि हैं इतनी तिथि पुण्यपर्व हैं इनमें व्रतबंध विद्यारंभ व्रतोद्यापनमें अनध्याय मानते हैं तथा नित्य पढनेमेंभी अनध्याय हैं और प्रकार तत्कालीन अनध्याय सन्ध्यागर्जन होनेमें निर्घातशब्द, भूकम्प, उल्कापतनमें तत्कालमात्र तथा और आरण्यक समाप्त करके एक दिनरात, तथा पूर्णमासी, चतुर्दशी,

अष्टमी, राहुसूतक, ऋतुसंधिमें श्राद्धभोजन करके, श्राद्धमें दान लेके, (पशु) मेंडक नेवल कुत्ता सर्प बिल्ली चूहा आदिके गुरु शिष्योंके बीचमें आजानेमें एक दिनरात; वज्र पडनेमें इन्द्रधनुषमें, गधा ऊंट गीध उल्लू कौवाओंके अति दुःखित बडा शब्द करनेमें, प्रेत शूद्र चांडाल, श्मशान पतितके समीप जानेमें भोजनोत्तर गीले हाथ पर्यंत, अर्द्धरात्रिमें अति प्रचण्ड वायु चलनेमें रंजवर्षणमें दिग्दाह, सन्ध्यामें, नीहारमें, भयस्थानमें, दौडनेमें, दुर्गंधमें, श्रेष्ठजनके अपने घर आनेमें गधा ऊंट हाथी घोडेकी सवारीमें वृक्षारोहणमें तात्कालिक अनध्याय होते हैं औरभी अनध्याय होते हैं औरभी अनध्याय धर्मशास्त्रोक्त सूतकादिभी हैं ॥ ५७ ॥ इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां प्रथमं शुभाशुभप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम् ।

(शा० वि०) नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगा
ऋक्षेशाः पितरोभगोर्यमरवीत्वष्टासमीरःक्रमात् ॥
शक्राग्नीखलुमित्रइन्द्रनिर्ऋतिःक्षीराणिविश्वेविधि-
र्गोविन्दोवसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ १ ॥

नक्षत्रोंके स्वामी कहतेहैं. अश्विनीके अश्विनीकुमार । भरणीका यम । ऐसेही कृत्तिकाका अग्नि । रोहिणीका ब्रह्मा । मृगशिरका चंद्रमा । आर्द्राका शिव । पुनर्वसुका अदिति । पुष्यका बृहस्पति । आश्लेषाका सर्प । मघाका पितर । पूर्वाफाल्गुनीका भग। उत्तराफाल्गुनीका अर्यमा । हस्तका सूर्य । चित्राका विश्वकर्मा । स्वातीका वायु । विशाखाके इंद्र एवं अग्नि । अनुराधाका मित्र (सूर्य)। ज्येष्ठाका इंद्र । मूलका निर्ऋति । पूर्वाषाढाका जल। उत्तराषाढाका विश्वेदेव । अभिजितका विधि । श्रवणका विष्णु । धनिष्ठाका वसु । शतभिषाका वरुण । पूर्वाभाद्रपदाका अजचरण । उत्तराभाद्रपदाका अहिर्बुध्न्य । रेवतीका पूषा यह नक्षत्रोंके स्वामी हैं. स्वस्वामिनामसेभी ग्रंथोंमें प्रसिद्ध रहतेहैं. जैसे जहां कर नाम नक्षत्र संबंधमें हो वहां हस्त जानना. जो नक्षत्र जिस कार्यके योग्य हैं इसका विस्तार ग्रंथांतरोंसे कहतेहैं । अश्विनीमें वस्त्र, उपनयन, क्षौर, सीमंत, भूषण, स्थापना, हाथीका कृत्य, स्त्री, कृषि, विद्या आदि । भरणीमें बावडी, कूवा, तालाव आदि तथा विषशस्त्रादि उग्र एवं दारुण कर्म, रंध्रप्रवेश, गणित, धरोहर बारवे-

त्तेमें वस्तु रखना । कृत्तिकामें अग्न्याधान, अस्त्र, शस्त्र, उग्रकर्म, मिलाप, विग्रह, दारुण कर्म, संग्राम, औषधि, वादित्रकर्म । रोहिणीमें सीमंत, विवाह, वस्त्र, भूषण, स्थिरकर्म, हाथी घोडेके कृत्य, अभिषेक, प्रतिष्ठा। मृगशिरमें प्रतिष्ठा, भूषण, विवाह, सीमंत, क्षौर, वास्तुकृत्य, हाथी घोडे ऊंट संबंधी कृत्य, यात्रा । आर्द्रामें ध्वजा, तोरण, संग्राम, दीवाल, अस्त्र, शस्त्रक्रिया, संधि, विग्रह, वैर, रसादिकृत्य । पुनर्वसुमें प्रतिष्ठा, सवारी, सीमंत, वस्त्र, वास्तु, उपनयन, धान्य, भक्षण, क्षौर । पुष्यमें विवाह विना समस्त शुभकृत्य । आश्लेषामें झूंठ, व्यसन, द्यूत, धातुवाद, औषधि, संग्राम, विवाद, रसक्रिया, व्यापार । मघामें कृषि, व्यापार, गौ, अन्न, रणोपयोगी कृत्य, विवाह, नृत्य, गीत । तीनहू पूर्वामें कलह, विष, शस्त्र, अग्नि दारुण, उग्र, संग्राम, मांसविक्रय । तीनहू उत्तराओंमें प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत, अभिषेक, व्रतबंध, प्रवेश, स्थापना, वास्तुकर्म । हस्तमें प्रतिष्ठा विवाह, सीमंत, सवारी, उपनयन, वस्त्र, क्षौर, वास्तु, अभिषेक, भूषण । चित्रामें क्षौर, प्रवेश वस्त्र, सीमंत, प्रतिष्ठा, व्रतबंध, वास्तुविद्या, भूषण । स्वातीमें प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, वस्त्र, सीमंत, भूषण, विवाद, हस्तिकृत्य, कृषि, क्षौर । विशाखामें वस्त्रभूषण, व्यापार, रसधान्यसंग्रह, नृत्य, गीत, शिल्प, लिखना आदि । अनुराधामें प्रवेश, स्थापना, विवाह, व्रतबंध, अष्टप्रकार मंगल, वस्त्र, भूषण, वास्तु, संधि, विग्रह । ज्येष्ठामें क्रूरकर्म, उग्रकर्म, शस्त्र, व्यापार, गौ भैंसका कृत्य, जलकर्म, नृत्य, वादित्र, शिल्प, लोहाके काम, पत्थरके काम, लिखना । मूलमें विवाह, कृषि, वाणिज्य, उग्र, दारुण, संग्राम, औषधि, नृत्य, शिल्प, संधि, विग्रह, लेखन । श्रवणमें प्रतिष्ठा, क्षौर, सीमंत, यात्रा, उपनयन, औषधि, पुर ग्राम गृहका आरंभ, पट्टाभिषेक । धनिष्ठामें शस्त्र, उपनयन, क्षौर, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, वास्तु, सीमंत, प्रवेश, शस्त्र । शतभिषामें प्रवेश, स्थापन, क्षौर, मौंजी, औषधि, अश्वकर्म, सीमंत, वास्तुकर्म । रेवतीमें विवाह, व्रतबंध, अश्वकर्म, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, क्षौर, औषधिके कृत्य करने ॥ १ ॥

(अनु०) उत्तरात्रयरोहिण्योभास्करश्चध्रुवंस्थिरम् ॥ तत्रस्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥ स्वात्यादित्येश्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापिचरंचलम् ॥ तस्मिन्गजादिकारोहोवाटिकागमनादिकम् ॥ ३ ॥ पूर्वात्रयंयाम्यमघेउग्रंक्रूरंकुजस्तथा ॥ तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानिविषशस्त्रादिसिद्ध्यति ॥ ४ ॥ विशाखाग्नेय-

भेसौम्योमिश्रंसाधारणंस्मृतम् ॥ तत्राग्निकार्य्यंमिश्रंचवृषोत्सर्गादिसिद्धयति ॥ ५ ॥हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रंलघुगुरुस्तथा ॥ तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥ मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षंमृदुमैत्रंभृगुस्तथा ॥ तत्रगीताम्बरक्रीडामित्रकार्य्यंविभूषणम् ॥ ७ ॥ मूलेन्द्रार्द्राहिभंसौरिस्तीक्ष्णंदारुणसंज्ञकम् ॥ तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

नक्षत्रोंकी संज्ञा तथा कर्मभी कहते हैं, तीनों उत्तरा रोहिणी रविवार ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक हैं;इनमें स्थिरकर्म बीज बोना, गृहारम्भ, शांतिकर्म, बगीचाका कार्य तथा मृदुनक्षत्रोक्त कार्यभी सिद्ध होते हैं ॥ २ ॥ स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और चन्द्रवार चर एवं चलसंज्ञक हैं; इनमें हाथी घोडे आदि सवारी, बावडी, यात्रादि तथा लघुनक्षत्रोक्त कर्मभी सिद्ध होतेहैं ॥ ३ ॥ तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और भौमवार उग्र एवं क्रूरसंज्ञक हैं; इनमें मारणकृत्य, अग्निकृत्य, विषयसंबंधी कृत्य, शस्त्रकर्म, अन्य अरिष्टकृत्य और दारुण नक्षत्रोक्त कृत्य भी सिद्ध होते हैं ॥४॥ विशाखा, कृत्तिका और बुधवार मिश्र एवं साधारणसंज्ञक हैं; इनमें अग्निहोत्रादि, काम्यवृषोत्सर्गादि और उग्रनक्षत्रोक्त कर्मभी सिद्ध होते हैं ॥ ५ ॥ हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और गुरुवार क्षिप्र एवं लघुसंज्ञक हैं इनमें दुकान, स्त्रीसंभोग, शास्त्रादिज्ञानारम्भ, भूषण, शिल्पविद्या, नृत्यादि ६४ कला और चरनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥ ६ ॥ मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार मृदु एवं मैत्रसंज्ञक हैं, इनमें गीतकृत्य, वस्त्र, स्त्रीक्रीडा, मित्रसम्बन्धी कृत्य, भूषण और ध्रुवनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥ ७ ॥ मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा आश्लेषा, और शनिवार तीक्ष्ण एवं दारुणसंज्ञक हैं, इनमें अभिचार (जादूगरी) मारणादि (भयानककर्म) तथा विद्वेषण, हाथी, घोडे आदि पशुओंका (दमन) शिक्षा, वा बंधन यद्वा उन्हें नपुंसक बनाना और उग्रनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होतेहैं ॥ ८ ॥

(इं०व०)मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखंभवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयंध्रुवम् ॥ तिर्यङ्मुखंमैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषुसत् ॥ ९ ॥

मूल, आश्लेषा, मिश्रनक्षत्र अधोमुखसंज्ञक हैं इनमें वापी, कूप, खात आदि कृत्य शुभ होते हैं। आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और ध्रुवनक्षत्र

ऊर्ध्वमुख हैं इनमें राज्याभिषेक, पट्टबंधन, इमारत आदिकृत्य शुभ होते हैं । मृदु नक्षत्र हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी (तिर्यङ्मुख) समदृष्टि संज्ञक हैं. इनमें चक्र रथ हल बीज पशुकृत्यादि सिद्ध होते हैं ॥ ९ ॥

(व० ति०) पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्येप्रवालरद-
शङ्खसुवर्णवस्त्रम् ॥ धार्यंविरिक्तशनिचन्द्रकुजेह्निरक्तंभौमेध्रुवा-
दितियुगेसुभगानदध्यात् ॥ १० ॥

रेवती, ध्रुवनक्षत्र, अश्विनी, हस्तसे अनुराधापर्यंत और पुष्य पुनर्वसुमें मूंगा मोती हाथीदांतके एवं शंखके भूषण चूडी आदि और सुवर्ण वस्त्र धारण करना परन्तु जिस दिन रिक्तातिथि शनि चन्द्र मंगलवार न हो तथा मंगलवारको लालरंग वस्त्र सुवर्ण धारणका दोष नहीं और मंगलवार ध्रुवनक्षत्र पुनर्वसु तिष्यमें सौभाग्यवतीने उक्त वस्तु धारण न करना ॥ १० ॥

(शा० वि०) वस्त्राणांनवभागकेषुचचतुष्कोणेऽमराराक्षसा
मध्यत्र्यंशगतानरास्तुसदशेपार्श्वेचमध्यांशयोः ॥
दग्धेवास्फुटितेम्बरेनवतरेपङ्कादिलिप्तेनसद्रक्षों-
शेनृसुरांशयोः शुभमसत्सर्वांशकेप्रान्ततः ॥ ११ ॥

नवीनवस्त्र, उपलक्षणसे शयन पादुका छत्र ध्वजादिभी यदि किसी स्थानमें अग्निसे दग्ध हो वा फटे वा कज्जल पंक आदिसे लिप्त हों तो उसके बराबर नव (९) भाग करने. चारों कोणोंमें देवता बीचके ऊर्ध्वाधःत्रिभागमें मनुष्य और पार्श्वके दो भागोंमें राक्षसोंके स्थान हैं इनमेंसे दग्धादिभाग राक्षसोंका हो तो दुष्टफल है उस वस्त्रादिको त्यागके सुवर्णादि दान करना. यदि उक्तभाग मनुष्य वा देवताओंका हो तो शुभ होता है. मतांतर है कि, दग्धादिपर यदि श्रीवत्स सर्वतोभद्रादि शुभचिह्न हो तो राक्षसभागमेंभी शुभ होता है. यदि सर्पादि दुष्टचिह्न शुभभागोंमें हों तोभी अशुभही होता है ॥ ११ ॥

(अनुष्टुप्) विप्राज्ञयातथोद्वाहेराज्ञाप्रीत्यार्पितंचयत् ॥
निन्द्येपिधिष्ण्येवारादौवस्त्रंधार्य्यंजगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

ब्राह्मणकी आज्ञासे विवाहमें और राजा जब प्रसन्नतापूर्वक वस्त्रादि देवे तो विना उक्त मुहूर्त्त यद्वा निंद्य नक्षत्रवारादिमेंभी धारण करलेना ॥ १२ ॥

(शा० वि०) राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोथोनृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ॥
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषुमद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्द्राम्बुपवासवेषुहिगवांशस्तःक्रयोविक्रयः ॥ १३ ॥

अनुराधा, मूल, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र, नक्षत्र शतभिषा और शुभवार तिथियोंमें लता वृक्ष, अन्नादिरोपण बीज वापन करना तथा ध्रुव मृदु क्षिप्र नक्षत्र एवं श्रवण धनिष्ठामें प्रथम राजदर्शन करना तथा तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र और शतभिषामें मद्यका आरंभ करना क्षिप्र नक्षत्र, रेवती, कृत्तिका, ज्येष्ठा, मृगशिर, पुनर्वसु, शतभिषा, धनिष्ठामें गौ आदि पशुओंका (क्रय विक्रय) लेना देना आदि व्यवहार करना ॥ १३ ॥

(इं० व०) लग्नेशुभेचाष्टमशुद्धिसंयुतेरक्षापशूनांनिजयोनिभेचरे ॥
रिक्ताष्टमीदर्शकुजःश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषुयानंस्थितिवेशनंनसत्॥ १४॥

(शुभलग्न) शुभग्रहोंके राशिलग्न जिससे अष्टमस्थानभी (शुद्ध) ग्रहरहित हो तथा पशुयोनिनक्षत्रोंमें एवं चरनक्षत्रोंमें पशुओंका रक्षासंबंधी, कार्य्य करने और रिक्ता ४।९।१४। अष्टमी अमा तिथि मंगलवार श्रवण चित्रा ध्रुवनक्षत्रोंमें पशुओंकी स्थिति एवं प्रवेश न करना ॥ १४ ॥

(मं० क्रां०) भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्व्यंगलग्नेशुक्रेन्द्वीज्ये
विदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च ॥ शुद्धेरिःफद्युनमृतिगृहेसत्तिथौ
नोजनेभेसूचीकर्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

लघु मृदु चर, नक्षत्र तथा मूलमें द्विस्वभाव राशि ३।६।९।१२। के लग्न जिनसे १२।७।८ भाव, शुद्ध ग्रहरहित हों तथा शुक्र, चंद्र, बृहस्पति बुध रविवारमें (सत्तिथौ): रिक्ता अमारहित तिथियोंमें औषधिसेवन करना परंतु जन्मनक्षत्र तिथि उस दिन हो तो न करना और पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, अश्विनीमें (सूचीकर्म) सिलाई कसीदा आदि काम करना ॥ १५ ॥

(अनुष्टुप्) क्रयर्क्षेविक्रयोनेष्टोविक्रयर्क्षेक्रयोपिन ॥
पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राःक्रयेशुभाः ॥ १६ ॥

जिन नक्षत्रोंमें वस्तु मोल लेना कहाहै उनमें बेचनेका आरंभ न करना जिनमें बेचनेका आरंभ कहा है उनमें खरीद न करना यह नियम साधारण व्यवहारके आरंभमात्रका है सर्वदा नहीं यदि सर्वदाको यह नियम माना जाय तो व्यापार

ही न होवे; जैसे-किसी किसी दिन खरीदनेका नक्षत्र देखकर कोई खरीदने आया परंतु बेचनेका नक्षत्र न होनेसे उस दिनको ही न बेचेगा तो क्रेता कहांसे उक्त मुहूर्त्तपर खरीद सकेगा ? ऐसे ही बेचनेके मुहूर्त्तपर किसीने बेचना चाहा परंतु खरीददार उस मुहूर्त्तपर लेता नहीं तो किसको बेचना ? ऐसी शंकामें यह नियम प्रथमारंभमात्रको है. जैसे-कोठावाले आदि महाजन समयपर बहुत माल खरीदते हैं पुनः विक्रीके समयपर बेचते हैं ऐसेमें यह मुहूर्त्त है नित्यके व्यापारको नहीं. रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती, श्रवण खरीदनेको शुभ हैं ॥ १६ ॥

(शा० वि०) पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभेकेन्द्रद्विकोणेशुभैः
षट्र्त्र्यायेष्वशुभैर्विनाघटतनुंसन्विक्रयःसत्तिथौ ॥
रिक्ताभौमघटान्विनाचविपणिर्मैत्रध्रुवाक्षिप्रभे-
र्लग्नेचन्द्रसितेव्ययाष्टरहितैः पापैःशुभैर्द्व्यायखे ॥ १७ ॥

तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, आश्लेषा, भरणी, नक्षत्रमें तथा केन्द्र १। ४।७।१०। द्वि २ कोण ९।५ लग्नसे शुभग्रह हों ३ । ६ । ११ भावोंमें पापग्रह हों कुंभलग्न न हो एवं शुभतिथियोंमें विक्रय-वेचनेका आरंभ करना और दूकानके आरंभके लिये रिक्तातिथि मंगलवार कुंभलग्न छोडके अनुराधा ध्रुव, क्षिप्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नमें चन्द्रमा शुक्र हो पापग्रह आठवें बारहवें न हों शुभग्रह २ । ११ । १० भावोंमें हो ऐसे मुहूर्तमें पण्यारंभ करना, लग्नका चंद्रमा सर्व कार्योंमें वर्जित है परंतु (वैश्यों) दुकानदारोंके स्वामी होनेसे तथा शुक्रके साथ होनेसे लग्नका चन्द्रमा गुणी कहा है ॥ १७ ॥

(इं०व०) क्षिप्रांत्यवास्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिनेप्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यंत्वथहस्तिकार्य्यंकुर्य्यान्मृदुक्षिप्रचरेषुविद्वान् ॥१८॥

क्षिप्र नक्षत्र, रेवती, मृगशिर, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसुमें रिक्तातिथि भौमवार छोडके घोडोंका क्रयविक्रय आदि कृत्य करना; घोडेकी सवारीके लिये ग्रन्थान्तरोंमें चक्र है कि, घोडेका आकार बनाके सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्र पर्यंत कन्धामें ५ नक्षत्र लक्ष्मी । पीठमें १० न० अर्थसिद्धि । पुच्छमें २ स्त्रीनाश । पैरोंमें ४ रणमें भंग । पेटमें ५ घोडानाश । मुखमें २ धनलाभ और विद्वानने मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें ऐसेही हाथीका कृत्य करना तथा शुभलग्न अंशक तारामें और शनिवारमें एवं शनि लग्नमें ही हाथीको अंकुशारम्भ करना ॥ १८ ॥

(शा० वि०) स्याद्भूषाघटनंत्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवेरत्नयुक्त-
त्तीक्ष्णोग्रविहीनभे रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ ॥
तन्मुक्तासहितंचरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ
तीक्ष्णोग्राश्विमृगेद्विदैवदहनेशस्त्रंशुभंघट्टितम् ॥ १९ ॥

त्रिपुष्कर (जिन नक्षत्रोंके ३ चरण एक राशिपर एक एक राशिपर हैं) चर, क्षिप्र, ध्रुव नक्षत्रोंमें भूषण गढने जो भूषण रत्नसहित (जडाऊ) हो तो तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र, वर्जित नक्षत्र, तथा रवि मंगलवार, मेष वृश्चिक सिंह लग्नमें करना, यदि मोतियोंका भूषण हो तो चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्र चन्द्र शुक्रवार ४ । २ । ७ लग्नमें करना, यही चांदीके भूषणोंकोभी जानना. तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र अश्विनी, मृगशिर, विशाखा, कृत्तिकामें शस्त्र गढना शुभ होता है ॥ १९ ॥

(स्रग्धरा) मुद्राणां पातनं सद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे
घस्रेपूर्णाजयाख्येनचगुरुभृगुजास्तेविलग्नेशुभैःस्यात् ॥
वस्त्राणांक्षालनं सद्वसुहयदिनकृत्पञ्चकादित्यपुष्ये
नोरिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषुकार्य्यंकदापि ॥ २० ॥

ध्रुव, मृदु, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें सोम शनिवाररहित पूर्णा, जयातिथियों ५ । १० । १५ । ३ । ८ । १३ में शुभलग्नमें गुरुशुक्रास्तादि दोषरहित समयमें (मुद्रापातन) और धनिष्ठा, अश्विनी, हस्तसे पांच नक्षत्र पुनर्वसु, पुष्य, नक्षत्रोंमें स्वयं वस्त्रक्षालन करना यद्वा (रजक) धोबीको देना हो तो उक्तनक्षत्रोंमें देना परंतु रिक्तातिथि, षष्ठी, पर्वदिन, अमावास्या और शनि बुधवारमें वस्त्रप्रक्षालन कदापि न करना ॥ २० ॥

(स्रग्धरा) संधार्याः कुन्तवर्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्योविरिक्ते
शुक्रेज्यार्केह्निमैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ॥
स्युर्लग्नेपि स्थिराख्येशशिनिचशुभदृष्टेशुभैः केन्द्रगैःस्या-
द्भोगःशय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्यइष्टः ॥२१ ॥

रिक्तातिथिरहित शुक्र बृहस्पति रविवार, मैत्र, ध्रुव, लघु नक्षत्र तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, विशाखामें कुन्त (प्रास) गात्रासहित तलवार वा खुंखरी छुरी (वर्म) कवच बक्तर धारण करने तथा इस कृत्यमें स्थिरलग्न तथा चन्द्रमापर

शुभग्रहोंकी दृष्टि और शुभग्रह केन्द्रमें आवश्यक हैं ध्रुव मृदु, लघु, श्रवण, भरणी, पुनर्वसु, नक्षत्रोंमें शय्या (चारपाई पलंग) पीठ, मृगचर्म पादुका आदि बैठने तथा सोनेके उपयोगी वस्तु काममें लेनी ॥ २१ ॥

(शा० वि०) अन्धाक्षंवसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रंभवेत् ॥
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षंस्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ २२ ॥

रोहिणी, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, पुष्य विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, अन्धाक्ष संज्ञक हैं. हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिर मंदाक्षसंज्ञक हैं. आर्द्रा मघा पूर्वाभाद्रपदा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित, भरणी मध्याक्षसंज्ञक हैं. उत्तराभाद्रपद्वा मूल पूर्वाफाल्गुनी स्वाती पुनर्वसु श्रवण कृत्तिका सुलोचनसंज्ञक हैं. इनकी गिननेकी सुगम रीति यहभी है कि रोहिणीसे ४ । ४ नक्षत्र क्रमसे अंध, मंद, मध्य, सुलोचन होते हैं. जैसे रो० अंध मृ० मंद आ० मध्य पु० सुलोचन पुनः तिष्य अंध आश्लेषा मंद इत्यादि ॥ २२ ॥

(अनु०) विनष्टार्थस्यलाभोऽन्धेशीघ्रंमन्देप्रयत्नतः ॥
स्याद्दूरेश्रवणंमध्येश्रुत्यातीनसुलोचने ॥ २३ ॥

नक्षत्रोंकी उक्त संज्ञाओंका प्रयोजन यह है कि कुछ वस्तु, अंधलोचन नक्षत्रमें खोई गई हो तो शीघ्र मिले. मंदलोचनमें यत्न करनेसे मिले. मध्यलोचनमें दूरतर पता मात्र लगे, वस्तु हाथ न आवे. सुलोचनमें मिलना तो कहां रहा किन्तु पता सुनाईभी न देवे. जब वस्तु खोये जानेका दिन वा नक्षत्र ज्ञात न हो तो प्रश्नसमय वर्त्तमान नक्षत्रसे कहना ॥ २३ ॥

(अनु०) तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ॥
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पातेचनाप्यते ॥ २४ ॥

तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव, उग्र, नक्षत्र तथा भद्रा व्यतीपातमें जो धनादि किसीको पुनः लेनेके हेतु दिया वा चोर लेगया वा खोया गया वा कर्जा दियाजाय तो पुनः मिलेगा नहीं ॥ २४ ॥

(शा० वि०) मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनौ सुरगुरौज्ञेवाभृगौखेविधौ ॥

आप्येसर्वजलाशयस्यखननंव्यंभोमघैः सेन्द्रभै-
स्तैर्नृत्यंहिबुकेशुभेतनुगृहेज्ञेऽजेज्ञराशौशुभम् ॥ २५ ॥

अनुराधा, हस्त, ध्रुवनक्षत्र, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढा, रेवती, पुष्य, मृगशिरमें, तथा पापग्रह हीनबली हों शुभलग्नमें बुध बृहस्पति शुक्रमेंसे कोई हो, चन्द्रमा दशम स्थानमें जलचर राशिका हो ऐसे समयमें बावडी, कूप, तालाव आदि जलाशय खनना वा बनाना और पूर्वाषाढा मघारहित ज्येष्ठा सहित उक्तनक्षत्र तथा लग्नसे चौथे शुभग्रह और लग्नमें बुध बुधकी राशि ३ । ६ के चन्द्रमामें "नृत्यारंभ" नाच खेल नाटकादिकोंका आरम्भ करना ॥ २५ ॥

(शालिनी) क्षिप्रैमैत्रेवित्सिताऽर्केज्यवारेसौम्येलग्नेर्केकुजेवाखलाभे॥
योनेर्मैत्र्यांराशिपोश्चापिमैत्र्यांसेवाकार्यास्वामिनःसेवकन ॥२६॥

क्षिप्र, मैत्र नक्षत्र, बुध, शुक्र, रवि, गुरुवार, तथा शुभग्रहयुक्त लग्नमें और सूर्य वा मंगल दशम वा ग्यारहवां हो ऐसे मुहूर्त्तमें सेवक (नोकर) ने स्वामीकी सेवाका आरंभ करना परन्तु स्वामिसेवककी योनियोंकी मैत्री तथा राशियोंकी मैत्री मुख्य विचार्य है, यदि योनि एवं राशियोंकी परस्पर मैत्री हो तो सेवा शुभ होती है ॥ २६ ॥

(शा० वि०) स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभेकर्णत्रयाश्वेचरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहितेद्रव्यप्रयोगः शुभः ॥
नारेग्राह्यमृणंतु संक्रमदिनेवृद्धौकरेर्केह्नि य-
त्तद्वंशेषुभवेद्दणंनचबुधेदेयं कदाचिद्धनम् ॥ २७ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुनक्षत्र, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, अश्विनी नक्षत्र, तथा चर लग्नमें एवं ९।५ स्थानोंमें शुभग्रह हों, पापग्रह नहीं अष्टमभावमें कोई ग्रह न हो ऐसे मुहूर्त्तमें (द्रव्यप्रयोग) धनवृद्धिके लिये ऋणादि देना, तथा मंगलवार संक्रांति और रविवारयुक्त हस्तमें ऋण न लेना यदि लेवे तो उसके वंशसेभी ऋण न उतरे और बुधवारको कदाचित्भी ऋण न देना ॥ २७ ॥

(शा० वि०) मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कंशनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौजललवेशुक्रेविधौमांसले ॥
लग्नेदेवगुरौ हलप्रवहणं शस्तंनसिंहेघटेकर्का-
जैणधटेतनौक्षयकरंरिक्तासुषष्ठ्यांतथा ॥ २८ ॥

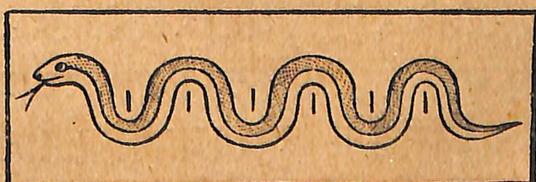
मूल, विशाखा, मघा, चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्रोंमें रविशनिरहित वारोंमें तथा पापग्रह हीनबली चंद्रमा जलचर राशिके अंश तथा राशिमें हों और शुक्र चंद्रमा (बलवान्) उदय हो, बृहस्पति लग्नमें हो सिंह, कुंभ, कर्क, मेष, मकर, धन लग्न रिक्ता षष्ठी तिथि न हो ऐसे मुहूर्त्तमें हल जोतना आदि कृषिकर्मका आरंभ करना, रिक्ता षष्ठी आदि वर्जितोंमें करनेसे कृषि क्षय होती है ॥ २८ ॥

(शा० वि०) एतेषुश्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनिभौमं विना
बीजोप्तिर्गदिताशुभात्वशुभतोघ्राग्नीन्दुरामेन्दवः ॥
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युत्तौहलेर्कोज्झिता-
द्धाद्रामाष्टनवाष्टभानिमुनिभिः प्रोक्तान्यसत्सन्तिच॥२९॥

श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा और मंगलवाररहित पूर्वश्लोकोक्त हलप्रवाह नक्षत्रोंमें बीजवापन करना. जब सूर्य आर्द्राके प्रथम चरणपर जाताहै तो उस दिनसे तीन दिन पृथ्वीका रज उत्पन्न होता है. इन दिनों पृथ्वीमें बीज न बोना. बीजवापनमें विशेषविचार फणिचक्रका है कि, राहुके नक्षत्रसे ८ नक्षत्र अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ ४ अशुभ; दिननक्षत्रपर्यंत गिनके जहां आवे ऐसा फल जानना. ऐसेही हलप्रवाह (खेती जोतनेके) लिये हलचक्र है कि, सूर्यके भुक्तनक्षत्रसे ३ अशुभ ८ शुभ ९ अशुभ ८ शुभ इसमें २८ नक्षत्र अभिजित् सहित हैं. इन चक्रोंमें पूर्वोक्त नक्षत्र शुभ स्थानमें हों तो लेना, अशुभ स्थानमें हों तो न लेना, अनुक्तनक्षत्र चक्रोंमें शुभभी हों तो न लेना ग्रंथांतरमतसे चक्र ऐसे हैं ॥ २९ ॥

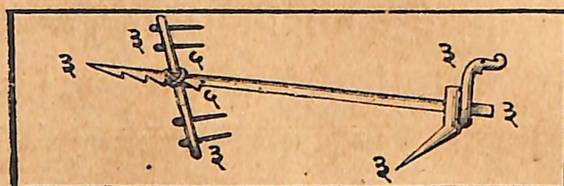
बीजोप्तिचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे-भवेद्भत्रितयं मूर्ध्नि धान्यनाशाय राहुभात् ।
गले त्रयं कज्जलाय वृद्धिर्भद्वादशोदरे ॥
निस्तण्डुलत्वं लांगूले, भचतुष्टयमीरितम् ।
नाभावहिपंचकं च बीजोप्तावीतयः क्रमात् ॥



हलचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे–हलदण्डिकयूपानां द्विद्विस्थानेत्रिकंत्रिकम् ।
योक्त्रयोः पञ्चकं मध्ये गणनाचक्रलाङ्गले ॥
दण्डस्थे च गवां हानिर्यूपस्थे स्वामिनो भयम् ।
लक्ष्मीर्लांगलयोक्त्रेषु क्षेत्रारम्भदिनर्क्षके ॥



(शार्दू०) त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद्वयेम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्की विना ॥
मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाह लग्नवर्गे विदो
जीवस्यापितनौगुरौनिगदिताधर्मक्रियातद्बले ॥ ३० ॥

चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिर, शतभिषा, श्रवण और लघुनक्षत्रोंमें मंगल बृहस्पति रविवारमें (शिरामोक्षण) नसोंद्वारा रुधिर निकालना तथा उक्तनक्षत्रोंमें बुध शनि विना अन्य वारोंमें (वमनविरेक) औषधिसे रद्द, दस्त लेने और मित्र, क्षिप्र, चर, ध्रुव नक्षत्रोंमें रवि चंद्र बुध बृहस्पतिवार बुध गुरुके (वर्ग) नवांशादि किसी लग्नमें तथा लग्नके बृहस्पति एवं कर्त्ताके बृहस्पति शुद्धिमें (धर्मक्रिया) कोटिहोम रुद्रानुष्ठनादि करने ॥ ३० ॥

(व० ति०) तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ॥ मन्दाररिक्तरहितेदिवसेऽतिशस्ताधान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभेविलग्ने ॥ ३१ ॥

तीक्ष्ण नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा हस्त कृत्तिका धनिष्ठा श्रवण मृगशिर स्वाती मघा तीनहूं उत्तरा पूर्वाषाढा भरणी चित्रा पुष्यमें तथा शनि मंगलवार रिक्ता तिथि सहित और स्थिरराशिके लग्नोंमें (अन्न) पकी खेती काटनी चाहिये॥ ३१ ॥

(व० ति०)भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्र्यान्त्यभेषुगदितंकणमर्दनंसत् ॥ द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे सस्यस्यरोपणमिहार्किकुजौविनासत् ॥ ३२ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा, रेवती नक्षत्रोंमें शुभतिथिवारोंमें (अन्नमर्दन) चना गेहूँ आदिका मर्दन भूसेसे अलग करना. विशाखा पूर्वाभाद्रपदा मूल रोहिणी शततारा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रोंमें शनि मंगलवार वर्जित करके अन्न पौदेसे लेके दूसरे स्थल पानीके खेतीमें रोपण करना ॥ ३२ ॥

(व० ति०)मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषुकर्काजतौलिरहिते-
चतनौ शुभाहे ॥ धान्यस्थितिः शुभकरीगदिताध्रुवे-
ज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषुचधान्यवृद्धिः ॥ ३३ ॥

मिश्र, उग्र, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठारहित नक्षत्रोंमें कर्क मेष तुलारहित लग्नमें शुभवारमें (अन्नस्थिति) खेतीको ढार आदिमें स्थापन करना. ध्रुव, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा और चरनक्षत्रोंमें (धान्यवृद्धि) अन्न व्याजपर देना अर्थात् अन्न उधारे देकर कुछ महीनोंमें सवाया वा डयौढा लेते हैं ॥ ३३ ॥

(व० ति०) क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासुशस्तंस्याच्छान्तिकंसह
चमंगलपौष्टिकाभ्याम् ॥ खेर्केविधौसुखगतेतनुगे गुरौ
नोमौढ्यादिदुष्टसमयेशुभदंनिमित्ते ॥ ३४ ॥

क्षिप्र, ध्रुव, रेवती, चर, मैत्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नसे दशम सूर्य चतुर्थ चंद्र लग्नके गुरु होनेमें मूल गण्डांतादि वा केतु,उत्पातदर्शनादि शांतिल तथा पौष्टिक कर्म करने नैमित्तिकशांति गुर्वस्त शुक्रास्त बालवृद्धादि दुष्टसमयमेंभी शुभ होती है ॥३४॥

(अनुष्टुप्) सूर्यभात्त्रित्रिभेचान्द्रेसूर्यविच्छुक्रपंगवः ॥
चन्द्रारेज्यागुशिखिनोनेष्टाहोमाहुतिःखले ॥ ३५ ॥

होमको आहुति कहते हैं-शुभग्रहकेमें होम करना पापग्रहकी आहुतिमें न करना. सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रर्क्षपर्यंत ३ । ३ गिनके प्रथम ३ में सूर्यकी फिर ३ में बुधकी एवं शुक्र,शनि, चंद्रमा मंगल गुरु राहु केतुकी क्रमसे आहुति जानो॥३५॥

(इं० व०) सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषेगुणेभ्रेभुविवह्निवासः ॥
सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्राणार्थनाशौदिविभूतलेच ॥ ३६ ॥

वर्तमानतिथिमें १ जोडके वार जोडना ४ से (शेष) नष्ट करना. जो शेष० वा ३ रहे तो पृथ्वी में अग्निका वास जानना. हवन करनेमें सुख होगा. यदि २ । १ शेष रहे तो वह्निवास नहीं होम करनेसे प्राण धन नाश होते हैं ॥ ३६ ॥

(अनुष्टुप्) नवान्नंस्याच्चरक्षिप्रमृदुभेसत्तनौ शुभम् ॥
विनानन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

पौषं, चैत्रमास, शनि, मंगलवार, नंदा १ । ६ । ११ तिथि, (विषघटी) विवाहप्रकरणोक्त इन सबको छोडकर शुभयुक्त दृष्टलग्नमें तथा चर, क्षिप्र, मृदु, नक्षत्रोंमें (नवान्न) नई फसलका अन्न प्राशन करना ॥ ३७ ॥

(अनु०) याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे ॥
भृग्वीज्यार्केदिनेनौकाघटनंसत्तनौशुभम् ॥ ३८ ॥

भरणी, कृतिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, आर्द्रा रहित नक्षत्रोंमें तथा शुक्र गुरु रविवारमें शुभ लग्नमें, नौका नाव डोंगीआदि गढनी॥ ३८॥

(अनु०) मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगेसौम्येघटेतनौ ॥
सुखेशुक्रेष्टमेशुद्धेसिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिर नक्षत्रोंमें तथा कुम्भलग्नमें बुध अथवा चतुर्थ शुक्र तथा अष्टम शुद्ध हो ऐसे मुहूर्तमें वीरसाधन एवं (अभिचार) मारणादि जादूगरी करनी. यहां लग्नके बुध चतुर्थ शुक्र कहा यह असम्भव है. इससे 'अथवा' पद लिखा ॥ ३९ ॥

(व०ति०) व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्येरिक्तेतिथौचरतनौविकवीन्दुवारे ॥ स्नानंरुजाविरहितस्यजनस्यशस्तंहीनेविधौखलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

जब रोगी रोगसे निर्मुक्त होता है उसके स्नानका मुहूर्त है कि, रेवती पुनर्वसु ध्रुवनक्षत्र मघा स्वाती आश्लेषा रहित अन्य नक्षत्रोंमें तथा रिक्तातिथि चरलग्नमें शुक्र चन्द्रवाररहित वारोंमें लग्नसे पापग्रह ११ और केन्द्रकोणोंमें हो तथा (चंद्रमा हीन) जन्मराशिसे ४ । ८ । १२ । स्थानमें हो ऐसेमें रोग मुक्त स्नान करना ॥ ४० ॥

(अनु०) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेज्ञेगुरौवाखलग्नगे ॥
विधौज्ञजीववर्गस्थेशिल्पारम्भःप्रसिद्ध्यति ॥ ४१ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें बृहस्पति वा बुध दशम वा लग्नमें हो और चंद्रमा बुध वा गुरुके नवांशादि षड्वर्गमेंसे किसीमें हो तो (शिल्पविद्या) कारीगरीके कामका आरंभ करना ॥ ४१ ॥

(अनु०) सुरेज्यमित्रभाग्येषुचाष्टम्यांतैतिलेहरौ ॥
शुक्रदृष्टेतनौसौम्येवारेसन्धानमिष्यते ॥ ४२ ॥

पुष्य अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र अष्टमी द्वादशी तिथिमें वा तैतिलकरणमें लग्नमें शुक्र हो वा शुक्रदृष्टलग्न हो और शुभवारमें (प्रीति) मैत्री दोस्तानेका आरंभ करना ॥ ४२ ॥

(व० ति०) त्यक्त्वाष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भमासौमृतौर-
विविधूअपिभानिनाड्यः ॥ द्व्यंगेचरेतनुलवेशशि-
जीवताराशुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपेपरीक्षा ॥ ४३ ॥

अष्टमी चतुर्दशी तिथि शनि मङ्गलवार भद्रा जन्मनक्षत्र जन्ममास गोचरसे अष्टम सूर्य चंद्रमा और नाडीनक्षत्र जन्मनक्षत्रसे १० । १६ । १८ । २३ । २५ १ नाडीसंज्ञक हैं. इतने छोडके द्विस्वभाव चरलग्ननवांशकोंमें चंद्र गुरु ताराशुद्धिमें और हस्त पुनर्वसु श्रवण ज्येष्ठा शतभिषामें (परीक्षा) दिव्यादि करना ॥ ४३ ॥

(अनु०) व्ययाष्टशुद्धोपचयेलग्नगेशुभदृग्युते ॥
चन्द्रेत्रिषट्दशायस्थेसर्वारम्भःप्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

लग्नसे १२ । ८ भाव शुद्ध ग्रहरहित तथा तात्काल लग्नजन्म राशिसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ और १ में चंद्रमा ३ । ६ । ११ । १० में हो ऐसी लग्नशुद्धि समस्त शुभकार्य्योंमें आरम्भ सिद्ध होता है ॥ ४४ ॥

(उप०) स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभेमृतिर्ज्वरेन्त्यमैत्रे स्थिरता
भवेद्रुजः ॥ याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवाघस्राहि-
पक्षोद्व्यधिपार्कवासवे ॥ ४५ ॥

(उपें०) मूलाग्निदास्रेनवपित्र्यभे नखा बुध्न्यार्यमेज्यादिति-
धातृभेनगाः ॥ मासोऽब्जवैश्वेथयमाहिमूलभेमिश्रेसपि-
त्र्येफणिदंशनेमृतिः ॥ ४६ ॥

स्वाती ज्येष्ठा तीन पूर्वा आर्द्रा आश्लेषामें ज्वरादिरोग उत्पन्न हों तो मृत्यु होवे. रेवती अनूराधामें रोग (स्थिर) बहुत दिन रहे. भरणी श्रवण शततारा चित्रामें ११ दिनपर्यन्त, विशाखा हस्त धनिष्ठामें १५ दिन, मूल कृत्तिका अश्विनीमें ९ दिन, मघामें २० दिन, तीन उत्तरा पुष्य पुनर्वसु रोहिणीमें ७ दिन,

मृगशिर उत्तराषाढामें ३० दिन रोग रहता है, भरणी आश्लेषा मूल मिश्र मघा कृत्तिका विशाखा आर्द्रामें सर्प काटे तो मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

(उ० जा०) रौद्राहिशक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे। रिक्ताहारिस्कन्ददिनेचरोगेशीघ्रंभवेद्रोगिजनस्यमृत्युः ॥ ४७॥

आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा शततारा भरणी तीन पूर्वा विशाखा धनिष्ठा कृत्तिका नक्षत्र तथा पापवारमें रिक्ता ४ । ९ । १४ द्वादशी षष्ठी तिथिमें जो रोगी होवे तो शीघ्र मृत्यु पावे, चन्द्रमा गोचरसे ४ । ८ । १२ होनेमें विशेष है ॥ ४७ ॥

(इं० व०) क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रियास्याज्झषकुम्भगेविधौ ॥ प्रेतस्यदाहंयमदिग्गमंत्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनादिच ॥ ४८ ॥

अश्विनी पुष्य हस्त आश्लेषा मूल मृग ज्येष्ठा श्रवण आर्द्रा स्वाती नक्षत्रोंमें (प्रेतक्रिया) और्ध्वदैहिक क्रिया न करनी। तथा मकरकुंभके चंद्रमामें पंचक होते हैं इनमें प्रेतका दाह, दक्षिणदिशागमन, (शय्या) विस्तरका कृत्य (चांदनी) चंदोया और घरकी लिपाई पोताई आदि मरम्मत उपलक्षणसे तृण काष्ठादि संग्रह न करना, प्रेतदाह आवश्यकमें कुश तथा रूईको ५ मूर्ति बनाकर प्रेतके साथ दाह करते हैं, पंचकशांतिभी करते हैं ॥ ४८ ॥

(व० ति०) भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारेद्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ॥ त्रैपुष्करोभवतिमृत्युविनाशवृद्धौत्रैगुण्यदोद्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ ४९ ॥

भद्रा २ । ७ । १२ तिथि शनि मंगल रविवार विशाखा उत्तराफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा इतने तिथिवार नक्षत्रोंमें एकही समय होनेमें त्रिपुष्करयोग होता है. इसमें कोई मरे तो उस घरमें दो और मरें, कुछ वस्तु खोई जाय तो दो और खोई जावें, कुछ वस्तु मिले वा बढे तो दो और मिलें, नक्षत्रके स्थानमें धनिष्ठा चित्रा वा मृगशिर हो तो उक्तफल द्विगुण होते हैं. यह द्विपुष्कर है ॥ ४९ ॥

(शा० वि०) शुक्रारार्किषुदर्शभूतमदनेनन्दासुतीक्ष्णोग्रभे पौष्णेवारुणभेत्रिपुष्करदिनेन्यूनाधिमासेयने ॥

याम्येब्दात्परतश्चपातपरिघेदेवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतयोःशवप्रतिकृतेर्दाहोनपक्षेसिते ॥ ५० ॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येब्जेचकर्तुर्नसन्म-
ध्योमैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्रयङ्घ्रिभेज्ञेपिच ॥
श्रेष्ठोर्केज्यविधोर्दिनेश्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्येतथा
त्वाशौचात्परतोविचार्य्यमखिलंमध्येयथासंभवम् ॥५१॥

जब किसी मरेका प्रेत नहीं मिले तो (प्रतिकृति) पर्णशर करनेका मुहूर्त्त कहतेहैं कि, शुक्र मंगल शनिवारमें चतुर्दशी अमावास्या त्रयोदशी नंदा १।६।११ में तीक्ष्ण उग्र रेवती शततारा नक्षत्रोंमें त्रिपुष्करयोगमें मलमास क्षयमासमें कर्क मकर संक्रांतिमें एकवर्षसे अधिक मरेको होगया हो तो दक्षिणायनमेंभी तथा व्यतीपात परिघयोगमें शुक्रास्त गुर्वस्तमें भद्रा वैधृतिमें कृष्णपक्षमें पर्णशरका दाह न करना ॥ ५० ॥ क्रिया करनेवालेका उस दिन जन्म प्रत्यरि तारा चौथा आठवां बारहवां चंद्रमा जन्म राशिसे न हो और अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी पुनर्वसु ध्रवनक्षत्र विशाखा मृगशिर चित्रा धनिष्ठा बुधवारमें उक्त कृत्य मध्यम कहा है, तथा रवि गुरु चंद्रवार श्रवण हस्त स्वाती पुष्य अश्विनी नक्षत्र शुभ होते हैं. (इतने विचार अशौचसे उपरांत) यदि किसी कारण अशौचमें प्रेतक्रिया न हुई हो तो तब हैं, अशौचमें उक्त विचार कुछ नहीं ॥ ५१ ॥

(उ० जा०) अभुक्तमूलंघटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हिनारदः ॥ वसिष्ठएकद्विघटीमितंजगौबृहस्पतिस्त्वेक-घटीप्रमाणकम् ॥ ५२ ॥

अभुक्त मूलका प्रमाण नारदमतसे ज्येष्ठाके अंत्यकी ४ घटी मूलके आदिकी ४ घटी मिलाके ८ घटी अभुक्त मूल होता है. वसिष्ठ ज्येष्ठांत्यकी एक मूलादिकी दो कहता है. बृहस्पति एकही घटी कहता है ॥ ५२ ॥

(उ० जा०) अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघटचोमूलस्यशक्रान्तिमपञ्चना-डचः ॥ जातंशिशुंतत्रपरित्यजेद्वासुखंपितास्याष्टसमानपश्येत्॥५३॥

अन्य आचार्य्य कहते हैं कि, मूलादिकी ८ घटी ज्येष्ठान्त्यकी ५ घटी अभुक्त मूल है. यहां बहुमत होनेसे आचार्यने नारदमतही प्रमाण किया है इस अभुक्त

मूलमें जो बालक उत्पन्न हो तो उसे त्याग करना अथवा उस बालकका मुख आठ वर्षपर्यंत न देखे तब शांति करके उपलक्षणसे आश्लेषांत्य मघादिमेंभी ऐसाही विचार है ॥ ५३ ॥

(उपजा०) आद्येपितानाशमुपैतिमूलपादेद्वितीयेजननी तृतीये ॥ धनंचतुर्थस्यशुभोथशान्त्यासर्वत्रसत्स्यादहिभे विलोमम् ॥५४॥

कन्या वा पुत्र मूलके प्रथम चरणमें उत्पन्न हो तो पिता नाश होवे. दूसरेमें हो तो माता मरे. तीसरेमें हो तो धननाश होवे. चौथे चरणमें हो तो शांति करके शुभ होवे किसीको दोष नहीं, आश्लेषामें यही विचार विपरीत है, जैसे—चतुर्थचरणमें पिता मरे, तीसरेमें माता, दूसरेमें धननाश; प्रथम चरण शांति करके शुभ होताहै. प्रकारांतर है कि १ वर्षमें पिताका ३ वर्षमें माताका २ वर्षमें धनका ९ वर्षमें श्वशुरका ५ वर्षमें भाईका ८ वर्षमें साले वा मामाका अन्य अनुक्त बांधवादियोंका ७ वर्षमें नाश करताहै, तस्मात् शांति करनी योग्य है. प्रकारांतरसे मूल तथा आश्लेषाका वृक्ष वा लतारूपसे चक्रन्यासपूर्वक विशेष विचार चक्रमें लिखाहै ॥ ५४ ॥

मूलवृक्षचक्रं	मूलपुरुषचक्रं	कन्याजन्मानिमूलचक्रम्	अश्लेषाचक्रम्	सार्पवृक्षचक्रम्
मूले ७ मूलनाशः	मूर्ध्नि ५ राजा	शीर्षे ४ पशुनाशः	शिरसि ५ पुत्रादि	फले १० धनं
स्तंभे ८ वंशनाशः	मुखे ७ पितृमृत्यु	मुखे ६ धनहानिः	मुखे ७ पितृक्षयः	पुष्पे ५ धनं
त्वचि १० मातृक्लेश	स्कंधे ४ बली	कंठे ५ धनागमः	नेत्रे २ मातृनाशः	दले ९ राजभयं
शाखा ११ मातुला	बाहौ ८ बली	हृदये५ कुटिलताः	ग्रीवा ३ स्त्रीलंपट	शाखा ७ हानिः
क्लेश—पत्रे ५मंत्रिपदं	हस्ते ३ दानी	बाहौ ५ धनागमः	स्कंधे ४ गुरुभक्तः	त्वचा १३ मातृहा
फले ४ विपुलाल०	हृदये ९ मंत्री	हस्ते ४ दयाधर्मौ	हस्ते ८ बली	लता १२ पितृहा
शिखा ३ अल्पजीवी	नाभौ २ ज्ञानी	गुह्ये ४ कामिनी	हृदये११ आत्महा	स्कंध ४ अल्पायुः
	गुह्ये १० कामी	जंघे ४ मातुलघ्नी	नाभौ ६ भ्रमः	
	जानु ६ मतिमान्	जानु४ भ्रातृनाशः	गुदे ८ तपस्वी	
	पादे ६ मतिमान्	पादे १० वैधव्यं	पादे ५ धनहा	

(इं० व०) स्वर्गेशुचिप्रौष्ठपदेषुमाघेभूमौनभःकार्तिकचैत्रपौषे ॥ मूलं ह्यधस्तात्तुतपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभंचतत्र ॥५५॥

आषाढ भाद्रपद आश्विन माघ महीनोंमें मूलका वास स्वर्गमें है, श्रावण कार्तिक चैत्र पौष पृथ्वीमें वास है, फाल्गुन मार्गशीर्ष वैशाख ज्येष्ठ पातालमें रहताहै. जिस महीनेमें जहाँ रहताहै वहाँही फल करताहै. अन्यलोकोंमें विशेषतः दोष नहीं ॥ ५५ ॥

(शा० वि०) गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमेसं-क्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ॥ वज्रे कृष्णचतु-र्दशीषुयमघण्टेदग्धयोगेमृतौ विष्टौसोदरभेजनिर्नपितृभेशस्ता शुभाशान्तितः ॥ ५६ ॥

गंडांत, ज्येष्ठा, शूल, पात, परिघ, व्याघात, अतिगंड, क्षयतिथि, संक्रांति, व्यतीपात, वैधृति, (सिनीवाली) शुक्लप्रतिपदाका पूर्वदल (कुहू) कृष्णचतुर्दशी, उत्तरदल (दर्श) अमावास्या, वज्रयोग, कृष्णचतुर्दशी, यमघंट, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, सहोदर भाई, तथा मातापिताके जन्मनक्षत्र, इतनोंमें पुत्रक न्याजन्म अनिष्ट होता है. इनकी शांति अन्य ग्रंथोंमें कही है उनके करनेसे शुभ होता है उपलक्षणसे ग्रहणजन्म (त्रिक) तीन पुत्रोंके पीछे कन्या तीन कन्या-ओंके पीछे पुत्रजन्म आदिभी ऐसेही हैं ॥ ५६ ॥

(उ० जा०) त्रित्र्यंगपञ्चाग्निकुवेदवह्नयःशरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः ॥ वेदाग्निरुद्राग्नियमाग्निवह्नयोऽब्धयःशतंद्विद्विरदाभतारकाः ॥ ५७ ॥

अश्विन्यादि नक्षत्रोंके तारा कहते हैं कि, अश्विनीके ३ भरणीके ३ एवं कृ० ६ रो० ५ मृ० ३ आ० १ पु० ४ पु० ३ आ० ५ म० ५ पू० २ उ० २ ह० ५ चि० १ स्वा० १ वि० ४ अ० ४ ज्ये० ३ मू० ११ पू० ३ उ० २ अभि० ३ श्र० ३ ध० ४ श० १०० पू० २ उ० २ रेवतीके ३२ इन ताराओंके गणती तथा वक्ष्यमाणरूपोंसे तारा पहँचाने जाते हैं ॥ ५७ ॥

(उ० जा०) अश्व्यादिरूपंतुरगास्ययोनीक्षुरोनएणास्यमणीगृहंच ॥ पृषत्कचक्रेभवनं च मञ्चः शय्याकरो मौक्तिकविद्रुमंच ॥ ५८ ॥
(रथोद्धता) तोरणंबलिनिभंचकुण्डलंसिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः ॥ त्र्यस्त्रिचत्रिचरणाभमर्दलौ वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः ॥ ५९ ॥

अश्विन्यादियोंके रूप-अश्विनी घोडाकासा मुख, भरणी भग, कृ० (क्षुर) उस्तरा, रो० गाडी, मृ० हरिणमुख, आ० मणि, पु० मकान, पु० बाण, आ० चक्र, म० मकान, पू० मञ्चा, उ० बिस्तर, ह० हाथ, चि० मोती, स्वा० मूंगा, वि० तोरण, अ० भातका पुंज, ज्ये० कुंडल, मू० शेरका पूंछ, पू० हाथीदांत, उ० मंजा, अ० त्रिकोण, श्र० वामन, ध० मृदंग, श० वृत्त, पू० मंजा, उ० यमल, रेवती मृदंगस्वरूप है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

नक्षत्रचक्रम्

नक्षत्र	तारा	रूप	देवता	अनवहडाचक्र	मण	योनि	नाडी
अ.	३	घोडा	अश्विनी कुमार	चूचेचोला	दे.	अश्व	१
भ.	३	भग	यम	लीलूलेलो	म.	गज	२
कृ.	६	छुरी	अग्नि	आईऊए	रा.	छाग	३
रो.	५	गाडी	ब्रह्मा	ओवावीवू	म.	नाग	३
मृ.	३	हरिण	चंद्र	वेवोकाकी	दे.	नाग	२
आ.	१	मणि	शिव	कूघंङछ	म.	श्वान	१
पु.	४	मकान	अदिति	केकोहाही	दे.	मार्जार	१
ति.	३	बाण	अंगिरा	हूहेहोडा	दे.	छाग	२
आ.	५	चक्र	सर्प	डीडूडेडो	रा.	मार्जार	३
म.	५	घर	पिता	मामीमूमे	रा.	मूषक	३
पू.	२	मंजा	भग	मोटाटीटू	म.	मूषक	२
उ.	२	बिस्तर	अर्यमा	टेटोपापी	म.	गौ	१
ह.	५	हात	सूर्य	पूषाणाठा	दे.	महिषी	१
चि.	१	मोती	त्वष्टा	पेपोरारी	रा.	व्याघ्र	२
स्वा.	१	मूंगा	वायु	रूरेरोता	दे.	महिषी	३
वि.	४	तोरण	इंद्राग्नी	तीतूतेतो	रा.	व्याघ्र	३
अ.	४	भातपुं	मित्र	नानीनूने	दे.	मृग	२
ज्ये.	३	कुंडल	इन्द्र	नोयायीयू	रा.	मृग	१
मू.	११	सिंहपु	राक्षस	येयोभाभी	रा.	श्वान	१
पू.	२	हा. दां	जल	भूधाफाढा	म.	कर्कट	२
उ.	२	मंजा	विश्वेदेव	भेभोजाजी	म.	नेवला	१
अ.	३	त्रिको	विधि	जूजेजोखा	दे.	नेवला	३
श्र.	३	वामन	विष्णु	खीखूखेखो	दे.	मर्कट	३
ध.	४	मृदंग	वसु	गागीगूगे	रा.	सिंह	२
श.	१००	वृत्त	वरुण	गोसासीसू	रा.	अश्व	१
पू.	२	मंजा	अजपाद	सेसोदादी	म.	सिंह	१
उ.	२	यमल	अहिर्बु०	दूझाञथा	म.	गौ	२
रे.	३२	मृदंग	पूषा	देदोचाची	दे.	गज	३

(उ० जा०) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठासौम्यायनेजीवशशाङ्कशुक्रे॥
दृश्येमृदुक्षिप्रचरध्रुवेस्यात्पक्षेसितेस्वर्क्षतिथिक्षणेवा ॥ ६० ॥

जलस्थान, बगीचा और देवता आदि प्रतिष्ठाका मुहूर्त कहते हैं कि, उत्तरायणमें बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्रके उदयमें मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रमें शुक्लपक्षमें शुभ नक्षत्र तिथि वार मुहूर्तमें तथा जिस देवताकी प्रतिष्ठा हो उसी स्वामीके नक्षत्रमें जैसे विष्णुके श्रवणमें शिवके आर्द्रामें जलाशयका पूर्वाषाढा शततारामें तथा रिक्तातिथि मंगलवार रहितमें उक्त कृत्य करना इसमें अगले श्लोकके प्रथम चरणका अर्थभी आगया ॥ ६० ॥

(उ०जा०) रिक्तारवर्जेदिवसेतिशस्ताशशांकपापैस्त्रिभवांगसंस्थैः॥
व्यन्त्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रेसूर्य्योघटेकोयुवतौचविष्णुः॥६१॥
शिवोनृयुग्मेद्वितनौचदेव्यः क्षुद्राश्चरेसर्वइमेस्थिरर्क्षे ॥
पुष्येग्रहाविघ्नपयक्षसर्पभूतादयोन्तेश्रवणेजिनश्च ॥ ६२ ॥
इति श्रीदैव० रामविर० मुहूर्तचिंता० द्वि० नक्ष० प्र० समाप्तम्॥२॥

प्रथम पादका अर्थ पूर्व कहा गया. शेषका यह है कि, जलाशय एवं बगीचाके प्रतिष्ठा शुभलग्नमात्र विचार्य है, ग्रहयोगकी विशेषता नहीं. देवप्रतिष्ठामें चन्द्रमा तथा पापग्रह ३ । ६ । ११ में शुभ ग्रह ८ । १२ भावरहित, स्थानोंमें होने शुभ होते हैं. विशेषता है कि, सूर्यकी प्रतिष्ठा सिंहलग्नमें, ब्रह्माकी कुम्भमें, विष्णुकी कन्यामें, शिवकी मिथुनमें, मिथुनकन्याधनमीनमें देवीकी तथा दक्षिणामूर्त्यादियोंकी चरलग्नोंमें (क्षुद्र) चतुःषष्टियोगिनी आदियोंकी (अनुक्त) इन्द्रादियोंकी स्थिरलग्नोंमें स्थापना करनी तथा चंद्रादिग्रह पुष्यनक्षत्रमें उपलक्षणसे सूर्य हस्तमें शिव ब्रह्मा पुष्य श्रवण अभिजित्में कुबेर स्कन्द अनुराधामें दुर्गा आदि मूलमें सप्तर्षि व्यास वाल्मीकी आदि जिन नक्षत्रोंमें सप्तर्षि देखेजाते हैं अथवा पुष्यमें गणेश; यज्ञ, नाग, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्धादि रेवतीमें बुद्ध (जिन) श्रवणमें इंद्र, कुबेर वर्जित लोकपाल धनिष्ठामें, शेषदेवता तीन उत्तरा रोहिणीमें प्रतिष्ठा युक्त करने॥६१॥६२॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां माहीधर्य्यां भाषाटीकायां द्वितीयं नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ संक्रान्तिप्रकरणम् ।

(वसन्तति०) घोरार्कसङ्क्रमणमुग्रखौहिशूद्रान्ध्वाङ्क्षीविशोलघुविधौचचरर्क्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुतानृपतीन्नज्ञमैत्रेमन्दाकिनीस्थिरगुरौसुखयेच्चमन्दा ॥ १ ॥ विप्रांश्चमिश्रभभृगौतुपशूंश्च मिश्रातीक्ष्णार्कजेन्त्यजमुखान्खलुराक्षसीच ॥

ग्रहोंकी एकराशिसे दूसरी राशिमें जाना संक्रांति कहाती है; यह (१) मध्यमसे (२) स्पष्टसे है, यहां मध्यसंक्रमण छोडकर स्पष्ट संक्रांति कहते हैं. यहभी सायन निरयन २ प्रकार हैं अन्यग्रहोंके संक्रांति घटी विवाहप्रकरणमें "देवद्वयंकर्तव" इत्यादि कहेंगे. यहां मुख्यता सूर्यकी वारनक्षत्रभेदसे कहतेहैं कि सूर्यकी निरयनांश संक्रांति यदि (उग्रनक्षत्र) तीन पूर्वा भरणी मघामें तथा रविवारमें हो तो घोरा नामकी शूद्रोंको प्रसन्न करनेवाली होती है, लघुनक्षत्र चंद्रवारमें हो तो ध्वांक्षीनामकी वैश्योंको सुख देती है, चरनक्षत्र मंगलवारमें हो तो महोदरानाम चोरोंको सुख करती है. मैत्रनक्षत्र बुधवारमें हो तो मंदाकिनी नामकी राजाओंको सुख देती है, स्थिरनक्षत्र गुरुवारमें हो तो मंदानाम ब्राह्मणोंको सुख देती है मिश्रनक्षत्र शुक्रवारमें हो तो मिश्रानाम पशुओंको सुख करती है, तीक्ष्ण नक्षत्र शनिवारमें हो तो राक्षसीनाम चांडालोंको सुख देती है ॥ १ ॥

त्र्यंशेदिनस्यनृपतीन्प्रथमेनिहन्तिमध्येद्विजानपिविशोपरकेचशूद्रान् ॥ २ ॥ अस्तेनिशाप्रहरकेषुपिशाचकादीन्नक्तञ्चरानपिनटान्पशुपालकांश्च ॥ सूर्य्योदयेसकललिङ्गिजनंचसैम्यियाम्यायनंमकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

दिनमानमें ३ से भाग लेके अंश होता है, यदि संक्रांति दिनके प्रथम अंशमें हो तो राजाओंको, (द्वितीय) मध्यत्र्यंशमें हो तो ब्राह्मणोंको, तीसरेमें हो तो वैश्योंको, अस्तसमयमें हो तो शूद्रोंको (अनिष्ट) नाश फल कहा है. रात्रिके प्रथम प्रहरमें हो तो पिशाच भूतादियोंको, दूसरेमें रात्रिचरोंको, तीसरेमें नाचनेवालोंको, चौथेमें पशु पालनेवालोंको और सूर्य्योदयसमयमें (लिंगिजन) पाखंडी वा कृत्रिमवेषधारियोंको नाश फल करती है और मकरसंक्रमणसे (सौम्य) उत्तरायण कर्क संक्रमणसे दक्षिणायन होती है. ग्रंथांतर मत है कि, मेष संक्रांति भरण्या-

दि ४ नक्षत्रोंमें हो तो अन्नवृद्धि, मघादि १० में हानि, अन्यनक्षत्रोंमें सौख्य होता है, जन्मनक्षत्रमें संक्रांति राजाओंको शुभ औरको क्लेश धनक्षय करती है. संक्रांतिवर्षका फल १ । ६ । १२ । ४ में हो तो सुख सुभिक्ष ११ । ९ । ५ । ३ में रोग युद्ध २ । ८ । ७ । १० में रोग चोर अग्निभय होता है ॥ २ ॥ ३ ॥

(अनु०) षडशीत्याननंचापनृयुक्कन्याझषेभवेत् ॥
तुलाजौविषुवद्विष्णुपदंसिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

धन, मिथुन, कन्या, मीनकी संक्रांति षडशीतिमुखा नामकी, तुलामेषकी विषुवती, सिंह वृश्चिक वृष कुंभकी विष्णुपदा होती है. इनका प्रयोजन है कि दक्षिणायन विष्णुपदके आद्यकी ७ । ८ के मध्यकी षडशत्यानन और मकरकी पीछेकी घटी अति पुण्य देनेवाली हैं ॥ ४ ॥

(उ० जा०) संक्रान्तिकालादुभयत्रनाडिकाःपुण्यामताःषोडशषोडशोष्णगोः ॥ निशीथतोर्वागपरत्रसंक्रमेपूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ॥ ५ ॥

संक्रांतिसमयसे १६ घटी पूर्व १६ घटी परेकी पुण्यकाल होता है, यदि संक्रमण रात्रिमें हो तो अर्द्धरात्रिके पूर्व होनेमें पूर्वदिनका उत्तरार्द्ध तथा अर्द्धरात्रिके उत्तर संक्रम होनेमें दूसरे दिनका पूर्वार्द्ध पुण्यकाल होता है ॥ ५ ॥

(उप०)पूर्णेनिशीथेयदिसंक्रमःस्यादिनद्वयंपुण्यमथोदयास्तात् ॥
पूर्वपरस्ताद्यदियाम्यसौम्यायने दिनेपूर्वपरेतुपुण्ये ॥ ६ ॥

यदि मध्यरात्रिमें संक्रमण हो तो पूर्व एवं परके दोनोंही दिन पुण्यकाल होता है. कर्कसंक्रांति सूर्यास्तसे ऊपर हो तो दूसरा दिन पुण्यकाल होता है ॥ ६ ॥

(इं० व०)संध्यात्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्द्धोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ॥
चेद्याम्यसौम्येअयने क्रमात्स्तःपुण्यौतदानींपरपूर्वघस्रौ ॥ ७ ॥

सूर्योदयसे पूर्वकी तथा सूर्यास्तसे ऊपरकी ३ । ३ घटी संध्यासमय होता है यही हेतु कर्क मकर संक्रांतिके पूर्वपर दिन पुण्यकाल कहे हैं कि, सूर्योदय संध्यामें दक्षिणायन हो तो पूर्वदिन तथा सायंसंध्यामें उत्तरायण हो तो उत्तर दिन पुण्यकाल स्नान दानादि योग्य होता है ॥ ७ ॥

(अनु०) याम्यायनेविष्णुपदेचाद्यामध्यातुलाजयोः ॥
षडशीत्याननेसौम्येपरानाड्योऽतिपुण्यदाः ॥ ८ ॥

याम्यायन विष्णुपद ४ । २ । ५ । ८ । ११ के संक्रांतियोंके पूर्वकी १६ घटी तुलामेषके मध्यकी, षडशीत्यानन ३ । ६ । ९ । १२ के तथा मकर संक्रांतिके आगेकी १६ घटी अतिपुण्य देनेवाली होती है ॥ ८ ॥

(उ०जा०)तथायनांशाःखरसाहताश्चस्पष्टार्कगत्याविहृतादिनाद्यैः ॥
मेषादितःप्राक्चलसंक्रमाःस्युर्दानेजपादौबहुपुण्यदास्ते ॥ ९॥

ऊपर निरयनसंक्रांति कही अब सायनसंक्रांति कहते हैं कि, अयनांश ६० से गुणाकर सूर्यस्पष्टगतिसे भाग लेकर दिनघटी पलात्मक ३ लब्धि लेना. मेषादि संक्रांति कालसे पहिले उतने दिनादि चलसंक्रम होता है, दानजपादिमें बहुत पुण्य देनेवाला होता है ॥ ९ ॥

(उ०जा०)समंमृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निमघात्रिपूर्वास्त्रपभंबृहत्स्यात् ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभंजघन्यंसार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥ १० ॥

मृदु, क्षिप्र, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीन पूर्वा और मूल ये १५ नक्षत्र समसंज्ञक हैं; ध्रुव, विशाखा, पुनर्वसु ये ६ नक्षत्र बृहत्संज्ञक और आश्लेषा, शततारा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी ६ नक्षत्र जघन्यसंज्ञक हैं ॥ १० ॥

(उ० जा०)जघन्यभेसंक्रमणेमुहूर्त्ताःशेरन्दवोबाणकृताबृहत्सु ॥
खरामसङ्ख्यासमभेमहर्घसमर्घसाम्यंविधुदर्शनेपि ॥ ११ ॥

जघन्य नक्षत्रोंमें संक्रम हो तो १५ मुहूर्त्त बृहतमें४५ सम नक्षत्रोंमें ३० मुहूर्त्त जानने. जो १५ मूहूर्त्तवाली संक्रांति हो तो (महर्घ) अन्नभाव तेज होवे; ४५ मुहूर्त्तकी हो तो, (सुलभ) सस्ता मंदा होवे, ३० मुहूर्त्तवाली हो तो (सम) न तेज न मंदा सामान्य रहे, ऐसाही विचार चंद्रोदयमें भी जानना ॥ ११ ॥

(अनुष्टुप्) अर्कादिवारेसंक्रांतौकर्कस्याब्दाविंशोपकाः ॥
दिशो नखागजाःसूर्याधृत्योष्टादशसायकाः ॥ १२ ॥

कर्कसंक्रांति रविवारको हो तो १० सोमवारको २० मंगलको ८ बुधको१२ बृहस्पतिको १८ शुक्रको १८ शनिको ५ अब्दविशोपका होती हैं ॥ १२ ॥

(इं०व०) स्यात्तैतिलेनागचतुष्पदेरविःसुप्तोनिविष्टस्तुगरादिपञ्चके ॥
किंस्तुघ्नऊर्ध्वःशकुनौसकौलवेनेष्टः समः श्रेष्ठइहार्घवर्षणे ॥१३॥

तैतिल नाग चतुष्पद करणोंमें संक्रम हो तो सुप्त रवि हो तो अन्नके भाव, (मूल्य) वर्षाके लिये अनिष्ट होता है (गरादि पांच) गर वणिज विष्टि बालव

ववमें मध्यम किंस्तुघ्नसे ऊपर शकुनि और कौलवमें श्रेष्ठ होता है, इसको आगे प्रकट कहेंगे ॥ १३ ॥

(शार्दू०) सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहद्विषड्घोटकाः
श्वाजौगौश्चरणायुधश्चबवतोवाहा रवेः संक्रमे ॥
वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपांडुरक्तकालासितं
चित्रंकंबलदिग्घनाभमथशस्त्रंस्याद्भुशुण्डीगदा ॥ १४ ॥
खड्गोदण्डशरासतोमरमथो कुन्तश्चपाशोंकुशो-
स्त्रंबाणास्त्वथभक्ष्यमन्नपरमान्नंभैक्षपक्वान्नकम् ॥
दुग्धंदध्यपिचित्रितान्नगुडमध्वाज्यंतथाशर्कराऽ-
थोलेपोमृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमृद्रोचनम् ॥ १५ ॥
यावश्चोतुमदोनिशांजनमथोकालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ॥
क्षत्रावैश्यकशूद्रसंकरभवाःपुष्पंचपुन्नागकं
जातीबाकुलकेतकानिचतथांबिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ॥ १६ ॥

(इं०व०) स्यान्मल्लिकापाटलिकाजपाचसंक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः॥
नाशश्चतद्वृत्त्युपजीविनांचस्थितोपविष्टस्वपतांचनाशः ॥ १७ ॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये ७ करण स्थिर और शकुनि, किंस्तुघ्न, नाग, चतुष्पद ये चर संज्ञक हैं. इनमें संक्रांति होनेसे क्रमसे वाहनादि कहते हैं कि, बव १ में सिंह । बालव २ में व्याघ्र । कौलव ३ में सूकर । तैतिल ४ में गदहा । गर ५ में हाथी । वणिज ६ में महिष । विष्टि ७ में घोड़ा । शकुनि ८ में कुत्ता । चतुष्पद ९ में मेंढा । नाग १० में बैल । किंस्तुघ्न ११ में मुर्गा । बवादि क्रमसे १ में श्वेतवस्त्र २ पीत ३ नीला ४ गुलाबी ५ लाल ६ कृष्ण ७ श्याह ८ चित्र ९ कंबल १० नंगा ११ मेघवर्ण । एवं क्रमसे शस्त्र १ (भुशुण्डी) दंडविशेष २ गदा ३ खड्ग ४ लाठी ५ धनुष ६ बाण ७ मुद्गर ८ कुंत ९ पाश १० अंकुश ११ बाण । भोजन १ अन्न २ पायस ३ भिक्षा ४ पक्वान्न ५ दूध ६ दही ७ खिचरी ८ गुड ९ मध्वन्न १० घी ११ शर्करा । १ कस्तूरी २ कुंकुम ३ सुर्खचंदन ४ मिट्टी ५ गोरोचन ६ हरिद्रा (७ यावक) जौखार

८ (ओतु) बिडालमद ९ सुर्मा १० अगरु ११ कर्पूर। १ देवता २ भूत ३ सर्प ४ पक्षी ५ पशु ६ मृग ७ ब्राह्मण ८ क्षत्रिय ९ वैश्य १० शूद्र ११ (मिश्र) संकर। १ (नागकेशर) पुन्नाग २ जाती ३ बकुल ४ केतकी ५ बिल्व ६ आक ७ दूर्वा ८ कमल ९ वेला १० गुलाब ११ (जपा) ओंड्र। १ शिशु २ कुमार ३ गतालका ४ युवा ५ प्रौढा ६ प्रगल्भा ७ वृद्धा ८ वंध्या ९ अतिवंध्या १० सुतार्थिनी ११ प्रव्राजिका। १ पंथा २ भोग ३ रति ४ हास्य ५ दुर्मुखी ६ जरा ७ मुक्ता ८ कंपा ९ ध्याना १० कर्कशा ११ वृद्धा॥ इतने जो वाहनादि कहे हैं इनका प्रयोजन है कि, उन महीनोंमें उन वस्तुओंका अथवा उन वस्तुओंसे आजीवन करनेवालोंका (जो कोई खड़े; बैठे, सोयेमें जैसे आजीवन करते हों) नाश होता है॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥

करण	वाहन	वस्त्र	शस्त्र	भोजन	लेपन	जाति	पुष्प	वय	अवस्था
बव	सिंह	श्वेत	भुशुंडी	अन्न	कस्तूरी	देवता	नाकेशर	शिशु	पंथा
बालव	व्याघ्र	पीत	गदा	पायस	कुंकुम	भूत	जाती	कुमार	भोग
कौलव	वराह	नील	खड्ग	भिक्षा	सुर्खचंदन	सर्प	बकुल अशोक	गतालका	रति
तैतिल	गदहा	गुलाबी	लट्ठी	पक्वान्न	मिट्टी	पक्षी	केतकी	युवा	हास्य
गर	हाथी	लाल	धनुष	दूध	गोरोचन	पशु	बिल्व	प्रौढ	दुर्मुखी
वणिज	महिष	कृष्ण	बाण	दही	हरिद्रा	मृग	आक	प्रगल्भा	जरा
विष्टि	घोड़ा	श्याम	मुद्गर	खिचरी	जौखार	ब्राह्मण	दूर्वा	वृद्धा	भुक्ता
शकुनि	कुत्ता	चित्र	कुंत	गुड़	बिडालमद	क्षत्रिय	कमल	वंध्या	कंपा
किंस्तुघ्न	मेंढा	कंबल	पाश	मध्वन्न	सुर्मा	वैश्य	वेला	वंध्या	ध्यान
नाग	बैल	नंगा	अंकुश	घी	अगरु	शूद्र	गुलाब	सुतार्थिनी	कर्कशा
चतुष्पद	मुर्गा	बादल रंग	बाण	शक्कर	कपूर	संकर	ओंड्र	परिव्राजिका	वृद्धा

(उप०) संक्रांतिधिष्ण्याधराधिष्ण्यतस्त्रिभेस्वभेनिरुक्तंगमनंततोऽङ्गभे॥सुखंत्रिभेपीडनमंगभेसुखंत्रिभेर्थहानीरसभेधनागमः॥ १८॥

संक्रांति जिस नक्षत्रमें हो उसको पहिले नक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रपर्यंत गिनना ३ के भीतर हो तो उस महीनेमें गमन होवे, परे ६ हो तो सुख एवं ३ पीडन ६ वस्त्रादिलाभ ३ धनहानि ६ धनागम होता है॥ १८॥

(उ० जा०) नृपेक्षणंसर्वकृतिश्चसंगरःशास्त्रंविवाहोगमदीक्षणेरवेः ॥
वीर्येथताराबलतःशुभोविधुर्विधोर्बलेर्कोर्कबलेकुजादयः ॥ १९ ॥

सूर्यके बल देखके अथवा रविवारको राजदर्शन, एवं चंद्रके समस्त शुभकृत्य मंगलके संग्राम बुधके शास्त्र पढाना पढना बृहस्पतिके विवाह: शुक्रके यात्रा शनिके यज्ञ दीक्षा शुभ होती हैं तथा ताराबलसे चंद्रमा शुभ: जानना, चंद्रसंक्रमणमें तारा शुभ हो तो अनिष्टचंद्रभी शुभ होता है ऐसेही चंद्रबलसे रविसंक्रम शुभ होता है अन्य भौमादि ग्रहसंक्रमणमें सूर्यके (बल) उपचयादि होनेमें शुभ होते हैं ॥ १९ ॥

(उप०) स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीनउक्तोमासोधिमासःक्षयमासकस्तु ॥
द्विसंक्रमस्तत्रविभागयोःस्तस्तिथेर्हिमासौप्रथमान्त्यसंज्ञौ ॥२०॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामविरचिते मुहूर्तचिं० संक्रांतिप्रकरणम् ॥३॥

शुक्लप्रतिपदासे अमावास्यापर्यंत चांद्रमास है, यदि यह मास सूर्यके स्पष्ट संक्रांतिसे रहित हो तो (अधिमास) मलमास वा लौंद कहते हैं, ऐसेही उक्तमासमें सूर्यस्पष्ट संक्रांति दो आवें तो क्षयमास होता है. उक्तमासकी शुक्लकृष्ण भेदसे (शुक्लांतमास, कृष्णांतमास) क्षयमासमें जन्म वा मरणमें तिथिका पूर्वभाग हो तो पूर्वमास उत्तरार्द्ध हो तो परमास वर्धापनादियोंको मानते हैं ॥ २० ॥
इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां तृतीयं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ गोचरप्रकरणम् ।

(उ० जा०) सूर्योरसान्त्येखयुगेग्निनन्देशिवाक्षयोर्भौमशनीतमश्च ॥
रसांकयोर्लभशरेगुणांत्येचंद्रोम्बराब्धौगुणनन्दयोश्च ॥ १ ॥
लाभाष्टमे चाद्यशरेरसान्त्येनगद्वये ज्ञो द्विशरेब्धिरामे ॥
रसांकयोर्नागविधौखनागेलाभव्ययेदेवगुरुःशराब्धौ ॥ २ ॥
(इं० व०) द्व्यंत्येनवाशोद्रिगुणेशिवाहौशुक्रःकुनागेद्रिनगेग्निरूपे ॥
वेदांबरेपञ्चनिधौगजेषौनंदेशयोर्भानुरसेशिवाग्नौ ॥ ३ ॥
(उप०) क्रमाच्छुभोविद्धइतिग्रहःस्यात्पितुःसुतस्यात्रनवेधमाहुः ॥
दुष्टोपिखेटोविपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणेशुभदःसितेब्जः ॥ ४ ॥

जन्मराशिसे ग्रहभाव फलको गोचर कहते हैं सूर्य जन्मराशिसे ६ । १२ तथा १० । ४ तथा ३ । ९ तथा ११ । ५ स्थानोंमें शुभ तथा विद्धभी होता है. जैसे छठा सूर्य है और बारहवां कोई ग्रह हो तो वेध हुआ ऐसेही दशमपर चतुर्थसे ३ पर ९ से ११ पर ५ से वेध होता है, परंतु पितापुत्र श० सू० चं० बु० का परस्पर वेध नहीं होता.तथा मंगल शनि राहु ६ । ९ । ११ । ५ ।३ ।१२ में चंद्रमा १० ।४ । ३। ९।११ ।८। १ । ५ ।६। १२।७ । २ स्थानोंमें पूर्वोक्तक्रमसे शुभ तथा विद्धभी होता है । बुध २ । ५आदिमें गुरु ५ । ४ । २ ।१२ ।९।१०।७ । ३ । ११ । ८ । शुक्र १ । ८ । २ ।७ । ३ । १ । ४ । १० । ५ । ९ । ८ । ५ । ९ । ११ । १२ । ६ । ११ । ३ ये ग्रह इन स्थानोंमें शुभ तथा विद्धभी होते हैं, विना वेधके शुभवेधसहित अशुभ होतेहैं, अनुक्तस्थानोंमें अशुभही जानना यह क्रमवेध कहा-गया इससे विपरीत वामवेध होताहै जैसे–छठे सूर्यपर बारहवें ग्रहका क्रमवेधहै जो सूर्य बारहवां छठे ग्रहसे विद्ध हो तो यह बामवेधहै जो ग्रह दुष्टस्थानमेंभी हो और उसपर वामवेध हो तो शुभ होता है और चंद्रमा शुक्लपक्षमें २ ।९।५ स्थानमें यदि६ । ८ । ४स्थानस्थित ग्रहोंसे विद्ध न हो तो शुभ होताहै॥ १ ॥ २॥ ३॥४ ॥

वेदचक्रम् ।

रवेः				मं.	श.	रा.	चं.						बुधस्य.			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६	
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९	
गुरोः								शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

(उ० जा०) स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितःसः ॥
हिमाद्रिविंध्यांतरएववेधोनसर्वदेशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥ ५ ॥

एक जन्मराशिसे दूसरा ग्रहाधिष्ठितराशिसे वेध दो प्रकारका किसीके मतसे है. काश्यपादि आचार्योंने जन्मराशिहीसे दो भेद कहे हैं; जैसा--छठा सूर्य स्वराशिसे द्वादशस्थग्रहसे विद्ध न हो तो शुभ है १ । तथा सूर्य जन्मराशिसे द्वादश नेष्ट है परंतु स्वाक्रांतराशिसे छठे भावगत ग्रहोंसे विद्ध (वामवेध) हो तो शुभ होता है. यह दो प्रकारका वेध हिमालय और विंध्याचलके मध्य (आर्यावर्त्त) देशको है सभी देशोंको नहीं ॥ ५ ॥

(शा० वि०) जन्मर्क्षेनिधनंग्रहंजनिभतोघातःक्षतिःश्रीर्व्यथा
चिंतासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम् ॥
लाभोपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपस्वर्णगोदानं
शांतिरथोग्रहंत्वशुभदंनोवीक्ष्यमाहुःपरे ॥ ६ ॥

जन्मराशिसे ग्रहणका फलाफल कहते हैं कि, राशिपर हो तो शरीरपीडा दूसरा हानि ३ धन ४ रोग ५ पुत्रकष्ट ६ सौख्य ७स्त्रीकष्ट ८ मृत्यु ९ माननाश१० सुख ११ लाभ १२ नाश ये फल छः महीनेपर्यंत होते हैं. अशुभफल दूर करनेके लिये गायत्र्यादि मंत्रोंका जप, गोदान, भूमि सुवर्ण आदि यथाशक्ति दान और कल्पोक्तशांति करनी. किसीका मत है कि, अनिष्टफलसूचक ग्रहण देखना नहीं यही उपाय है ॥ ६ ॥

(अनु०) पापान्तः पापयुग्द्यूनेपापाच्चन्द्रःशुभोप्यसत् ॥
शुभांशेचाधिमित्रांशेगुरुदृष्टोऽशुभोपिसत् ॥ ७ ॥

(शुभफल देनेवाला) शुभभावस्थ चंद्रमाभी पापग्रहोंके बीच तथा पापयुक्त और पापग्रहोंसे सप्तम भावमें हो तो अशुभफल देता है, यदि शुभग्रह नवांशमें वा अधिमित्रांशकमें हो और गुरुदृष्ट हो तो अशुभभी शुभ फल देता है ॥ ७ ॥

(अनु०) सितासितादौसद्दुष्टेचन्द्रेपक्षौशुभावुभौ ॥
व्यत्यासेचाशुभौप्रोक्तौसंकटेब्जबलंत्विदम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षकी प्रतिपदामें यदि चंद्रमा गोचरसे शुभ हो तो सारा शुक्लपक्ष शुभ और कृष्णपक्षकी प्रतिपदामें अनिष्ट हो तो सारा कृष्णपक्ष शुभ होता है. विपरीतमें विपरीत जानना अर्थात् शुक्ल १ में चन्द्र अनिष्ट हो तो वह पक्ष अनिष्ट कृष्णप्रतिपदामें शुभ हो तो वह पक्ष अनिष्ट होवे ॥ ८ ॥

(शालि०)वज्रंशुक्रेब्जेसुमुक्ताप्रवालंभौमेगोगोमेदमार्कौतुनीलम्॥
केतौवैडूर्यंगुरौपुष्पकंज्ञेपाचिःप्राङ्माणिक्यमर्केतुमध्ये ॥ ९॥

ग्रहोंके दुष्टफल परिहारको प्रत्येकके मणि तथा उनके नवरत्न धारणका विधि है कि, शुक्रका हीरा अँगूठी वा बाजूके पूर्व किनारेपर. चंद्रमाका मोती आग्नेयमें. मंगलका मूंगा दक्षिणमें. राहुका गोमेद नैर्ऋत्यमें. शनिका नीलम पश्चिममें. केतुका वैडूर्य वायव्यमें बृहस्पतिका पुष्पराज उत्तरमें. बुधका पाचि पन्ना ईशानमें. सूर्यका (माणिक्य) चुन्नी मध्यमें रखना अथवा एक २ ग्रहके प्रीत्यर्थ उक्त एक २ धारण वा दान करना ॥ ९ ॥

ग्रहदानचक्रम् ।

ग्रह	दा.	०	०	०	०	०	०	०	०	जप
रवि	माणिक	गेहूं	सवत्सागौ	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	रक्तचंदन	मजल	७०००
चंद्र	घृतकलश	श्वेतवस्त्र	दही	शंख	मोती	सोना	चांदी	०	०	११०००
मंगल	मूंगा	गेहूं	मसुरी	बैललाल	कनेरफूल	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	१००००
बुध	नीलवस्त्र	मूंग	सोना	दासी	पन्ना	रलस	घृत	कांसी	हाथिदांत	८०००
गुरु	पीतवस्त्र	घोडा	सहत	पीलाअन्न	नोंन	पुष्पराज	चीनी	हरिद्रा	सोना	१९०००
शुक्र	चित्रवस्त्र	चावल	घृत	सोना	चांदी	हीरा	सुगंध	शुभ्रधेनु	यक्षकर्दम	११०००
शनि	उडद	तेल	नीलम	तिल	कुलथी	भैंस	लोह	कृष्णगौ	भैंसी	२३०००
राहु	गोमेद	घोडा	नीलम	कंबल	तिल	उडद	लोहा	भेड	सोना	१८०००
केतु	वैडूर्य	रत्न	कस्तूरी	कंबल	शस्त्र	गेहूं	नोंन	धूम्रवस्त्र	बकरा	७०००

(इं०व०)माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिगारुत्मकंपुष्पकवज्रनीलम् ॥
गोमेदवैडूर्यकमर्कतःस्यूरत्नान्यथोज्ञस्यमुदेसुवर्णम् ॥ १० ॥

धारण योग्य माणिक्य हैं कि सूर्यका चुन्नी. चं० मोती. मं० मूंगा. बु० पन्ना. बृ० पुष्पराज. शु० हीरा. श० नीलम. रा० वैडूर्य. के० मरकत और बुधके प्रीत्यर्थ सुवर्ण धारण कहा है ॥ १० ॥

(शालि०) धार्यंलाजावर्त्तकंराहुकेत्वोरौप्यंशुक्रेन्द्वोश्चमुक्तागुरोस्तु ॥
लोहंमन्दस्यारभान्वोःप्रवालंताराजन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितःस्यात् ॥ ११ ॥

बहुमूल्य मणिधारणकी शक्ति न हो तो बुधका सुवर्ण धारण करे यह अर्थ प्रथमश्लोकसे अन्वय है तथा राहुकेतुका (लाजावर्त्त) चं० शु० का चांदी बृ० मोती श० लोहा सू० मं० मूंगा. ग्रंथांतरोंमें जडी धारणभी कहे हैं. सू० बेलकी, चं० दूदिया, मं० गोजिह्वा, बुधका विधारा, बृ० भारंगी, शु० सिंहपुच्छी, श० बिछली; रा० चंदन, के० असगंध और जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ९ । ९ करके ३ आवृत्ति गिननी जितनवां हो उतनवीं तारा जाननी ॥ ११ ॥

(अनु०) जन्माख्यसंपद्विपदःक्षेमप्रत्यरिसाधकाः ॥
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारानामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

पूर्वश्लोकोक्त क्रमसे गिनके क्रमसे ये तारा होती हैं. जन्म १ संपत् २ विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मित्र ८ परममित्र ९ जैसे इनके नाम हैं वैसेही फलभी हैं उनमें ३ । ५ । ७ तारा अनिष्ट हैं ॥ १२ ॥

(शार्दू०) मृत्यौस्वर्णतिलान्विपद्यपिगुडंशाकंत्रिजन्मस्वथो
दद्यात्प्रत्यरितारकासुलवणंसर्वोविपत्प्रत्यरिः ॥
मृत्युश्चादिमपर्ययेनशुभदोथैषांद्वितीयेंशका-
नादिप्रान्त्यतृतीयकाअथशुभाःसर्वेतृतीयेस्मृताः ॥ १३ ॥

आवश्यकतामें दुष्टताराओंका परिहार है कि, वध ७ तारामें, तिल सुवर्ण विपत ३ में, (गुड) चीनी आदि जन्मतारामें, (शाक) भूजी प्रत्यरि ५ में, लवण दान करना. दूसरा प्रकार परिहार है कि, पहिली आवृत्तिमें ३ । ५ । ७ तारा पूरी ६० घटीपर्यंत नेष्ट हैं दूसरी आवृत्तिमें विपतकी आदिकी २० घटी प्रत्यरिके मध्यकी २० घटी वधकी अंत्यकी २० घटी छोडनी, तीसरी आवृत्तिमें सभी शुभ हैं दोष नहीं करते ॥ १३ ॥

(अनुष्टुप्) षष्टिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम् ॥
शराब्धिहृल्लब्धतोर्कशेषेवस्थाःक्रियाद्विधोः ॥ १४ ॥

प्रत्येक राशियोंमें चंद्रमाकी १२ अवस्था होती हैं. नाम सदृश फल समस्त कार्यारंभमें देतीहैं. अश्विनीसे लेकर जितने नक्षत्र हों उससंख्याको ६० से गुनाकर वर्त्तमान नक्षत्रकी भुक्तघटी जोड देनी, ४ से गुनाकर ४५ से भाग लेना. जो लाभ हुआ वह गत अवस्था, शेष वर्त्तमान अवस्था होती है ४५ के भाग देनेसे लब्धि १२ से अधिक हो तो १२ से भाग लेकर शेषगत अवस्था जाननी उसके आधेकी वर्त्तमान अवस्था होतीहै, मेषके चंद्रमामें प्रवासादि, वृषमें नाशादि, मिथुनमें मरणादि ऐसेही सबका क्रम जानना. प्रकारांतरसे इन अवस्थाओंके गिननेका क्रम चक्रमें लिखाहै ॥ १४ ॥

चन्द्रावस्थाचक्रम् ।

अ.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
भ.	७॥ रति	१८॥। क्रीडित	३० सुप्त	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
कृ.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
रो.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीडा	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
मृगशि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
आर्द्रा.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८॥। क्रीडा	६० सुप्ति
पुन.	११। भुक्त	२२॥ ज्वर	३३॥। कंप	४५ स्थिरता	५६। प्रवास	६० नाश
तिष्य.	७॥ नाश	१८॥। मरण	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
आश्ले.	३॥। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर
मघा.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति

पूर्वाफा.	७॥ रति	१८॥। क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
उ. फा.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
हस्त.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
चि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
स्वा.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ स्थिर	४८॥। क्रीडा	६० सुप्ति
वि.	११। भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥। कम्प	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
अ.	७॥ नाश	१८॥। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
ज्ये.	३॥। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर
मू.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मृति	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
पूर्वा.	७॥ रति	१८॥। क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
उत्तरा.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
श्रव.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
धनि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
शत.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८॥। क्रीडा	६० सुप्ति
पूर्वा.	११। भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥। कंप	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
उत्तराभा.	७॥ नाश	१८॥। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
रेवती,	३॥। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर

(उ० जा०) प्रवासनाशौमरणंजयश्चहास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ॥ ज्वराख्यकंपस्थिरताअवस्थामेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाःस्युः ॥ १५ ॥

अवस्थाओंके नाम–प्रवास १ नाश २ मरण ३ जय ४ हास्य ५ आरति ६ क्रीडित ७ सुप्ति ८ भुक्ता ९ ज्वरा १० कंप ११ स्थिरा १२: जैसे इनके नाम वैसेही फलहैं ॥ १५ ॥

(शार्दू०) लाजाकुष्ठबलाप्रियङ्गुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितंस्नानंग्रहोत्थाघहृत् ॥
धेनुःकंब्वरुणोवृषश्चकनकंपीताम्बरंघोटकः
श्वेतोगौरसितामहासिरजइत्येताखेर्दक्षिणाः ॥ १६ ॥

दुष्ट ग्रहोंके परिहारार्थ स्नानकी औषधी (लाजा) खील, अथवा लज्जावती, कूट, (बला) भीमली, मालकांगनी, मुस्ता, सर्षप, देवदारु, हरिद्रा, शरपुंखा, लोध इतने जलमें मिलाके स्नान करनेसे ग्रहोंका अरिष्ट दूर होता है. दक्षिणा कहते हैं कि, सूर्यके प्रीत्यर्थ गौ, चं० शंख, मं० रक्तवृषभ, बु० सुवर्ण, बृ० पीतांबर, शु० घोडा, श० कृष्णगौ, रा० खड्ग, केतु बकरा दक्षिणामें देना ॥ १६ ॥

(उ० जा०) सूर्य्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडीः ॥ तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान्गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १७ ॥

सूर्य जिस राशिपर जानेवाला है उसका फल ५ दिन पहलेहीसे देताहै. तथा मंगल ८ दिनसे, बुध ७ दिनसे, शु० ७ दिनसे, चं० ३ घटी, राहु ३ महीने, शनि ६ महीने, बृ० दो महीने अर्थात् २७ अंशसे ऊपर स्पष्ट जब हो तो तभीसे यह अग्रिमराशिका फल देता है ॥ १७ ॥

(शालिनी) दुष्टेयोगेहेमचन्द्रेचशंखंधान्यंतिथ्यर्द्धेतिथौतंडुलांश्च ॥
वारेरत्नंभेचगांहेमनाड्यांदद्यात्सिन्धूत्थंचतारासु राजा॥ १८॥

आवश्यककृत्यमें दुष्टयोगोंका दान कहते हैं, यहां राजा उपलक्षणहै व्यतिपातादिमें सुवर्ण चंद्रदुष्टमें शंख तिथिमें तंडुल वारमें उक्तरत्न राशिमें गौ दुर्मुहूर्तमें सुवर्ण तारामें लवण देना ॥ १८ ॥

(व० ति०) राश्यादिगौरविकुजौफलदौसितेज्यौमध्येसदा-

शशिसुतश्चरमेब्जमन्दौ ॥ अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्य-
दुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ॥ १९ ॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ चतुर्थं
गोचरप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

सूर्य मंगल राहुयादि १० अंशमें अपना फल पूर्ण देते हैं, अन्य अंशोंमें थोडा थोडा देते हैं, एवं शुक्र बृहस्पति मध्यके १० अंशमें बुध पूरे ३० ही अंशोंमें चंद्रमा शनि अंत्य १० अंशमें पूरा फल देता है, जिस महीनेमें जन्मनक्षत्र रविवारको हो तो सफर, चंद्रवारको हो तो भोजन पदार्थ मिले, एवं मंगल० अग्निभय बु० धर्मबुद्धि बृ० वस्त्रप्राप्ति शु० सौख्य श० दुःख होता है ॥ १९ ॥

इति श्रीमु० चिं० महीधरकृतायां भा० चतुर्थगोचरप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ संस्कारप्रकरणम् ।

(अनु०) आद्यंरजःशुभंमाघमार्गराधेषफाल्गुने ॥
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्लेसद्वारेसत्तनौदिवा ॥ १ ॥
श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौसिताम्बरे ॥
मध्यंचमूलादितिभपित्र्यमिश्रेपरेष्वसत् ॥ २ ॥

संस्कार ४८ हैं इनमें गर्भाधानोपयोगी रजोदर्शन मुख्य है. यह प्रथम ऋतु (रजोदर्शन) माघ वैशाख आश्विन फाल्गुन ज्येष्ठ श्रावण महीनोंमें, शुक्लपक्षमें, शुभग्रहोंके वारमें शुभलग्न तथा दिनमें और श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, मृदु, क्षिप्र, ध्रुव, स्वाती नक्षत्रोंमें शुभ होता है, मूल पुनर्वसु मघा विशाखा कृत्तिकामें मध्यम, अन्य नक्षत्रोंमें अशुभ होता है. तथा उस समय श्वेतवस्त्र शुभ होता है ॥ १ ॥ २ ॥

(शालिनी) भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ॥
रोगेष्टम्यांचन्द्रसूर्योपरागेपातेचाद्यंनोरजोदर्शनंसत् ॥ ३ ॥

प्रथम रजोदर्शन भद्रामें, सोयेमें, संक्रांतिदिन, अमावास्या, रिक्तातिथि, संध्यासमय, षष्ठी द्वादशी, वैधृतिमें तथा ज्वरादिरोगमें, अष्टमीमें, सूर्यचंद्रग्रहणमें, व्यतीपातमें शुभ नहीं होता नेष्ट फल है ॥ ३ ॥

(व० ति०) हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च ॥ स्नायादथार्तववतीमृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ॥ ४ ॥

हस्त स्वाती मृगशिर अनुराधा धनिष्ठा ध्रुव ज्येष्ठा नक्षत्र (शुभतिथि) पूर्वोक्त भद्रादिरहित शुभग्रहोंके वारमें प्रथम रजोवती स्नान करे और मृगशिर रेवती स्वाती हस्त अश्विनी रोहिणीमें स्नान करनेसे शीघ्रही गर्भधारण करती है ॥४॥

(शार्दू०) गंडान्तंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलान्तकं
दास्रंपौष्णमघापरागदिवसंपातंतथावैधृतिम् ॥
पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघाद्यर्द्धस्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभम् ॥५॥

गर्भाधान मुहूर्त्त कहतेहैं–नक्षत्रतिथि लग्न गडांत, जन्मनक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा ग्रहणदिन व्यतीपात वैधृति मातापिताका श्राद्धदिन, दिनमें परिघार्द्ध दिव्यांतरिक्ष भूमिज उत्पात जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न पापयुक्त नक्षत्र लग्न इतने प्रथम ऋतुस्नाता अपने पत्नीके गमन, (गर्भाधानमें) वर्जित करने ॥ ५ ॥

(शालि०) भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्चसन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्च
तस्रः ॥ गर्भाधानंत्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्व
म्बुपेसत् ॥ ६ ॥

भद्रा षष्ठी पर्वदिन रिक्तातिथि संध्यासमय मंगल रवि शनिवार और रजोदर्शनसे लेकर ४ रात्रि वर्जित करके तीन उत्तरा मृगशिर हस्त अनुराधा रोहिणी स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषामें गर्भाधान करना ॥ ६ ॥

(इं० व०) केन्द्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैस्त्र्यायारिगैःपुंग्रहदृष्टलग्ने ॥
ओजांशगेन्दावपियुग्मरात्रौचित्रादितीज्याश्विषुमध्य
मंस्यात् ॥ ७ ॥

केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में शुभग्रह, ३।६।११ भावोंमें पापग्रह होवें तथा पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) लग्नको देखें चंद्रमा विषमराशिके अंशकमें होवे ऐसे लग्नमें तथा समरात्रिमें गर्भाधान करना. स्त्रीग्रह बली चंद्रमांशकमें तथा विषमरात्रिमें आधान हो तो कन्या होती है. पुंग्रह बली तथा समरात्रिमें पुत्र

होता है. मिश्रयोगोंमें नपुंसक होता है और चित्रा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी नक्षत्र गर्भाधानको मध्यम हैं, पूर्वोक्तोंके न मिलनेमें इनमेंभी करते हैं ॥ ७ ॥

(शार्दू०) जीवार्कारदिनेमृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभे
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ॥
सीमन्तोष्टमषष्ठमासिशुभदैः केन्द्रत्रिकोणे खलै-
र्लाभारित्रिषुवाध्रुवान्त्यसदहे लग्ने चपुम्भांशके ॥ ८ ॥

गर्भके निश्चय हुयेमें सीमंतोन्नयन मुहूर्त कहते हैं कि, बृहस्पति मंगल सूर्य-वार हस्त मृगशिर पुष्य मूल श्रवण पुनर्वसुमें सीमंत संस्कार करना. रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा द्वादशी षष्ठी अष्टमी तिथि छोडके छठे आठवें महीनेमें जिसमें मासेश बलवान् हो तथा शुभग्रह केंद्र त्रिकोणोमें पापग्रह ३ । ६ । ११ भावोंमें हो लग्नमें पुरुष राशिका अंशक हो शुभवारके दिन. नक्षत्र विकल्पसे कहते हैं कि, ध्रुवनक्षत्र एवं रेवतीमें सीमंत संस्कार करना ॥ ८ ॥

(व० ति०) मासेश्वराःसितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजास्त-
नुपचन्द्रदिवाकराःस्युः ॥ स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति
विवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव ॥ ९ ॥

गर्भ रहेमें प्रथम मासका स्वामी शुक्र २ का मंगल ३ का बृहस्पति ४ का सूर्य ५ का चंद्रमा ६ का शनि ७ का बुध आठवेका लग्नेश ९ का चन्द्रमा १० का सूर्य हैं. इनके बलवान होनेमें गर्भपुष्ट, निर्बलतासे अपने मासमें क्षीणादि करता है और विवाहमें एवं गर्भसंस्कार गर्भाधानादिकोंमें स्त्रियोंकी पृथक् (चन्द्रबल) चन्द्रशुद्धि आवश्यक है अन्य समस्त कृत्योंमें सौभाग्यवतीको भर्त्ताकी चंद्रशुद्धि देखी जाती है, स्त्रियोंकी पृथक् नहीं ॥ ९ ॥

(इं० व०) पूर्वोदितैःपुंसवनंविधेयंमासेतृतीयेत्वथविष्णुपूजा ॥
मासेष्टमेविष्णुविधातृजीवैर्लग्नेशुभे मृत्युगृहेचशुद्धे ॥ १० ॥

सीमंतोक्त तिथिवार नक्षत्रोंमें तीसरे वा चौथे महीनेमें गर्भका पुंसवन संस्कार करना तथा पुंवार पुरुषलग्न और पुरुषनाम नक्षत्रोंमें पुंसवन करते हैं, एवं तीसरे महीनेमें विष्णुपूजा आठवेमें विष्णु ब्रह्मा बृहस्पतिका पूजन करना. जितने गर्भसंस्कार कहे हैं इन सभीमें शुभलग्न तथा अष्टमभाव शुद्ध चाहिये ॥ १० ॥

(उप०) तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयंपर्वाख्यरिक्तोनतिथौशुभेह्नि॥
एकादशद्वादशकेपि घस्रेमृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषुस्यात् ॥ ११ ॥

पुत्र उत्पन्न होतेही नालच्छेदनके पहले जातकर्म करना, यदि वह समय किसी प्रकार व्यतीत होजाय तो नामकर्मके साथही करना. इसलिये जातकर्मादिकोंका एकही मुहूर्त्त कहते हैं कि, रिक्तातिथि पर्वदिन छोडके शुभवारमें ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रोंमें करना कहता है, ब्राह्मणका ११ दिनमें, क्षत्रियोंका १३ में, वैश्योंका १६ में, सूत्रधार सूतकांतमें करना. शूद्रोंका महीनेमें । मुख्य काल व्यतीत हुयेमें उत्तरायणादि समयकी पूर्वोक्त अपेक्षा है मुख्यकालमें विशेष विचार नहीं ॥ ११ ॥

(व० ति०) पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषुसूतीस्नानंसमित्रभरवीज्यकुजेषुशस्तम् ॥ नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रेज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

रेवती ध्रुव नक्षत्र मृगशिर हस्त स्वाती अश्विनीमें सूतिकाने स्नान करना. आर्द्रासे तीन श्रवण मघा भरणी मिश्रसंज्ञक एवं मूल चित्रा नक्षत्र बुध शनिवार ८ । ६ । १२ । ४ । ९ । १४ तिथि सूतिकाके स्नानमें न लेने ॥ १२ ॥

(शार्दू०) मासेचेत्प्रथमेभवेत्सदशनोबालोविनश्येत्स्वयं
हन्यात्सक्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान्द्व्यादिके ॥
षष्ठादौ लभते हि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मींसौख्यमथोजनौसदशनोवोर्ध्वेस्वपित्रादिहा ॥ १३ ॥

बालकके पहिले महीनेमें दांत उगें तो स्वयं नष्ट होवे. दूसरेमें कनिष्ठ भाईको एवं ३ में भगिनी ४ में माता ५ में ज्येष्ठभ्राताको नाशकरे. छटेमें बहुत भोग ७ में पितासे सुख ८ में पुष्टता ९धन १०सौख्य ११में सुख होवे. यदि जन्महीदंतसहित हो अथवा पहिले ऊपरके पंक्तिके दांत आवें तौ पित्रादिकोंका नाश करताहै १३

(अनुष्टुप्) दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः ॥
नैरुज्यंमरणंकार्श्यं व्याधिःसौख्यंक्रमाच्छिशोः ॥ १४ ॥

बालकको (दोला) पालनेमें झुलानेके लिये दोलाचक्र है कि, सूर्यके नक्षत्रसे ५ नक्षत्रमें निरोगी, उपरान्त ५ में मरण, फिर ५ में कृशता, ५ में रोगी, ७ में सौख्य होता है ॥ १४ ॥

(व० ति०) दन्तार्कभूपधृतिदिग्गमितवासरेस्याद्वारेशुभेमृदुल-
घुध्रुवभैः शिशूनाम् ॥ दोलाधिरूढिरथनिष्क्रमणंचतुर्थ-
मासेगमोक्तसमयेर्कमितेऽह्नि वा स्यात् ॥ १५ ॥

दोलारोहणको उक्त चक्रमें मुहूर्त है कि, ३२ । १२ । १६ । १८ । १० वें दिनोंमें शुभवारमें मृदु लघु ध्रुव नक्षत्रोंमें बालकोंका दोलारोहण करना और चौथे महीनेमें तथा यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रोंमें निष्कमण करना ॥ १५ ॥

(भुजं०) कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपौषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ।
बुधेंद्वीज्यवारेविरिक्तेतिथौहिश्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्य-
मैत्रे ॥ १६ ॥

शुक्रास्त, गुर्वस्त, चैत्र, पौषमास, रिक्तातिथि, मलमास छोडके प्रसूतिसे एक मास पूरे हुएमें बुध चंद्र बृहस्पतिवारमें श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा नक्षत्रोंमें सूतिकाका जलपूजन करना ॥ १६ ॥

(स्रग्धरा) रिक्तानंदाष्टदर्शंहरिदिवसमथोसौरिभौमार्कवारां
ल्लँग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ॥
हित्वा षष्ठात्समेमास्यथ च मृगदृशांपञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैःस्यात्स्थिराख्यैःसमृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनंसत् ॥ १७॥

निष्क्रमणसे उपरांत पुत्रका छठे आदि सममास ६ । ८ । १० । १२ में तथा कन्याका पांचवें आदि विषम ५ । ७ । ९ । ११ मासमें अन्नप्राशन करना. इसमें रिक्ता ४ । ९ । १४ नंदा १ । ६ । ११ अष्ट ८ दर्श ३० हरि १२ तिथि शनि मंगल सूर्यवार जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम लग्न एवं नवांशक और १२ । १ । ८ लग्न छोडके स्थिर मृदु लघु चर नक्षत्र लेने ॥ १७ ॥

(व० ति०) केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे लग्ने त्रिलाभरिपु-
गैश्च वदन्ति पापैः ॥ लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं मैत्रा-
म्बुपानिलजनुर्भमसच्च केचित् ॥ १८ ॥

अन्नप्राशनमें लग्नशुद्धि कहते हैं कि, केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ५ । ९ सहज ३ भावोंमें शुभग्रह ३ । ११ । ६ भावोंमें पापग्रह हों. दशम १० भाव (शुद्ध) ग्रहरहित हो. चंद्रमा १ । ८ । ६ स्थानोंसे अन्य भावमें हो ऐसे लग्नमें

अन्नप्राशन शुभ होता है, तथा अनुराधा शततारा स्वाती और जन्मनक्षत्रको कोई अशुभ कहते हैं ॥ १८ ॥

(अनु०) क्षीणेंदुपूर्णचंद्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ॥
त्रिकोणव्ययकेंद्राष्टस्थितैरुक्तंग्रहैः फलम् ॥ १९ ॥
भिक्षाशीयज्ञकृद्दीर्घजीवीज्ञानीचापित्तरुक् ॥
कुष्ठीचान्नक्लेशवातव्याधिमान्भोगभागिति ॥ २० ॥

अन्नप्राशनमें ग्रहभावका फल है कि, त्रिकोण ९ । ५ व्यय १२ केंद्र १ । ४ । ७ । १० अष्ट ८ वें भावोंमेंसे किसीमें क्षीणचंद्रमा हो तो भिक्षाका अन्न खानेवाला होवे एवं पूर्णचंद्रसे यज्ञ करनेवाला, बृहस्पतिसे दीर्घायु, बुधसे ज्ञानी, मंगलसे पित्तरोगी, सूर्यसे (कुष्ठी) रुधिरसंबंधी रोगी, शनिसे (अन्नक्लेश) अन्न पचे नहीं वा अन्न मिलना कठिन हो तथा वातरोगीभी होवे, शुक्रसे (भोगी) सुख भोगनेवाला वह बालक होवे ॥ १९ ॥ २० ॥

(व० ति०) पृथ्वींवराहमभिपूज्यकुजेविशुद्धेरिक्तेतिथौव्रजति
पञ्चममासिबालम् ॥ बध्वाशुभेह्निकटिसूत्रमथध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

पंचम मासमें वा अन्नप्राशनसमयमें भूम्युपवेशन संस्कार कहते हैं कि, पृथ्वी वराह की पूजा करके मंगलकी शुद्धिमें रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथियोंको छोडके चरलग्नमें ध्रुव, मैत्र, मृगशिर, ज्येष्ठा, लघुनक्षत्रोंमें बालकके (कटि-सूत्र) तागडी "कंदनी" बांधके पृथ्वीमें बिठलाना ॥ २१ ॥

(शालि०) तस्मिन्कालेस्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रंशस्त्रंपुस्तकंलेखनींच ॥
स्वर्णरौप्यंयच्चगृह्णाति बालस्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ॥ २२ ॥

भूम्युपवेशन समयमें आजीविकाकी परीक्षा है कि, बालकके आगे वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम, सोना, चांदी, औरभी आजीवनोपयोगी वस्तु रखनी. बालक जिस वस्तुको प्रथम ग्रहण करे उस वस्तुसंबंधी कृत्यसे आजीवन होवे उसीकी वृत्तिसे प्रतिष्ठा पावे ॥ २२ ॥

(स्रग्धरा) वारेभौमार्किहीनेध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ॥ सौम्यैः

केन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैस्ताम्बूलं सार्द्ध-
मासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥ २३ ॥

मंगल शनिरहित वारमें श्रवण मूल पुनर्वसु ज्येष्ठा स्वाती धनिष्ठा ध्रुव मृदु नक्षत्रोंमें मिथुन मकर कन्या कुंभ वृष मीन लग्नोंमें केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ के शुभग्रह ३।६।११ के पापग्रहोंमें बालकको पानसुपारी खिलाना यह कर्म ढाई महीनेमें अथवा अन्नप्राशनके दिन करना ॥ २३ ॥

(स्रग्धरा) हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनंजन्ममासंचरिक्तां
युग्माब्दंजन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमितेमास्यथो वा ॥ ज-
न्माहात्सूर्यभूपैःपरिमितदिवसेज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेथोजाब्देविष्णु-
युग्मादितिमृदुलघुभैःकर्णवेधःप्रशस्तः ॥ २४ ॥

कर्णवेधका मुहूर्त—चैत्र पौष महीना सौर मानसे तथा क्षयतिथि (जन्ममास) जन्मदिनसे ३० दिन, रिक्ता ४।९।१४ तिथि, युग्म २।४।६।८।१०।१२ वर्ष, जन्मतारा १।१०।१९ वें नक्षत्र, जन्मनक्षत्रसे इतने वर्जित करके ६।७।८ वें महीने अथवा जन्मदिनसे १२।१६ वें दिनमें इनसे उपरांत विषम वर्षमें बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवार एवं श्रवण धनिष्ठा, पुनर्वसु मृदु, लघु नक्षत्रोंमें कर्णवेध शुभ होता है ॥ २४ ॥

(प्रहर्षि०) संशुद्धेमृतिभवने त्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैःशुभखच-
रैःकवीज्यलग्ने ॥ पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थे
त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात ॥ २५ ॥

कर्णवेधमें लग्नशुद्धि, अष्टम स्थान ग्रहरहित हो, त्रिकोण ९।५ केन्द्र १।४।७।१० तथा ३।११ स्थानोंमें शुभग्रह बृहस्पति शुक्रके लग्नों २।७।९।१२ में तथा बृहस्पति लग्नमें हो ऐसे लग्नमें कर्णवेध शुभ होता है, और जन्मोत्सव कृत्य सौरवर्ष पूर्ण हुएमें "जिस दिन सूर्य जन्मके राश्यादिमें आवे" करते हैं. दाक्षिणात्य जन्मतिथिभी मानते हैं ॥ २५ ॥

(स्रग्धरा) गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलंराजाभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायनेस्यात् ॥
नोवाबाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात्
पक्षंवार्द्धेचकेचिज्जहतितमपरेयावदीक्षांतदुग्रे ॥ २६ ॥

देवमंदिर एवं जलाशयकी प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्यधान, गृहप्रवेश चूडाकर्म राज्याभिषेक बंध, दक्षिणायनमें तथा बृहस्पति शुक्रके बाल्य वृद्धत्व अस्तमें (केतु)

पुच्छलताराके उदयमें न करने. जब केतु अस्त होजावे तो १५ वा ७ दिन औरभी छोडने, किसीका मत है कि (उग्र) द्विशिख त्रिशिख तामस कीलकादि संज्ञक धूम्रकेतु जबतक देखे जावें तबतक दोष है उपरांत नहीं ॥ २६ ॥

(अनु०) पुरःपश्चाद्भृगोर्बाल्यंत्रिदशाहंचवार्द्धकम् ॥
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरोःपक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥
तेदशाहंद्वयोःप्रोक्तेकैश्चित्सप्तदिनं परैः ॥
त्र्यहंत्वात्ययिकेप्यन्यैरर्द्धाहंचत्र्यहंविधोः ॥ २८ ॥

शुक्रके पूर्व उदय होनेमें तीन दिन पश्चिमोदयमें १० दिन बालत्व रहता है तथा पूर्वास्तमें १५ दिन पश्चिमास्तमें ५ दिन वृद्धत्व होता है. बृहस्पति १५ दिन बाल १५ दिन वृद्ध होता है ॥ २७ ॥ किसीके मतसे बृहस्पति शुक्रके उदय तथा अस्तमें बाल्य वार्द्धकके १० । १० दिन हैं, किसीने ७ ही दिन कहे हैं और किसीका मत है कि, आत्ययिकमें (यदि कर्त्तव्य कृत्यकी फिर दिनशुद्ध्यादि न मिलें, समय निकल जाता हो, तथा उस समयके उस कार्यके न करनेसे पुनः वह कार्य नाश होता हो तो) तीनही दिन छोड़ने और चंद्रमाका वृद्धत्व ३ दिन बालत्वका आधा छोड़ना ॥ २८ ॥

(स्रग्ध०) चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवतिविषमेष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-
पर्वोनाहेविचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ॥
वारेलग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौनैधनेशुद्धियुक्तेशाक्रो
पेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ २९ ॥

(रथो०) क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपंगुताज्वराः ॥
स्युःक्रमेणबुधजीवभार्गवैःकेन्द्रगैश्वशुभमिष्टतारया ॥ ३० ॥

व्रतबंधसे पृथक् चूडाकर्म करना हो तो मुहूर्त है कि, तीसरे वर्षसे विषम ३ । ५ । ७ वर्षोंमें, रिक्ता ४ । ९ । १४ आद्य १ षष्ठी ६ पर्वदिन, चैत्रमास छोड़के उत्तरायणमें, बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवारमें, जन्म राशिलग्नसे अष्टम लग्न न हो-अष्टमस्थान शुक्रसे अन्य कोई ग्रह न हो, जन्ममास छोड़के और ज्येष्ठासहित अनुराधारहित मृदु चर लघु नक्षत्रोंमें, लग्नसे ११ । ६ । ३ भावोंमें पापग्रह, केंद्र कोणोंमें शुभग्रह होनेमें चूडाकर्म करना ॥ २९ ॥ लग्नमें, केंद्रों १ । ४ । ७ । १० में, क्षीण चंद्र हो तो मृत्यु, मंगल होतो शस्त्राघात, शनिसे (पंगुता) लँगडा,

सूर्यसे ज्वर तथा बुध बृहस्पति शुक्रसे शुभफल होता है, परंतु इसमें ताराशुद्धि आवश्यक है, जन्म विपत् प्रत्यरी वध तारा न लेनी, यह विचार (वैदिक मुंडन) चौल (अवैदिक मुंडन) सुखार्थ क्षौरमें तुल्य है ॥ ३० ॥

(अनु०) पञ्चमासाधिकेमातुर्गर्भेचौलंशिशोर्नहि ॥
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टंगर्भिण्यामपि मातरि ॥ ३१ ॥

चौलवाले बालककी माताका गर्भ पांच महीनेसे ऊपरका हो तो पांच वर्षके भीतर अवस्थावालेका चूडाकर्म न करना, यदि बालक पांच वर्षसे अधिक हो तो पांच महीनेसे अधिक गर्भवती माता होनेमेंभी दोष नहीं ॥ ३१ ॥

(शा०) तारादौष्ट्येऽब्जेत्रिकोणोच्चगेवाक्षौरंसत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ॥
सौम्येभेऽब्जेशोभनेदुष्टताराशस्ताज्ञेयाक्षौरयात्रादिकृत्ये ॥ ३२ ॥

यदि चंद्रमा त्रिकोण ५ । ९ वा उच्च राशिमें हो अथवा बुध गुरु शुक्रके षड्वर्गमें तथा गोचरसे शुभस्थानमें हो, शुभनक्षत्रमें क्षौर एवं यात्रादि कृत्य दुष्टतारामेंभी कर लेने ॥ ३२ ॥

(अनु०) ऋतुमत्याः सूतिकायाःसूनोश्चौलादि नाचरेत् ॥
ज्येष्ठापत्यस्यनज्येष्ठेकैश्चिन्मार्गेपिनेष्यते ॥ ३३ ॥

बालककी माता रजोवती अथवा प्रसूति हो तो (चौलादि) चूडा व्रतबंध विवाह न करने और आद्यगर्भ कन्या पुत्रके चौलव्रत विवाह ज्येष्ठके महीनेमें न करने, कोई मार्गशीर्षमें भी न करने कहते हैं ॥ ३३ ॥

(शार्दू०) दन्तक्षौरनखक्रियात्रविहिताचौलोदितेवारभे
मन्दांगाररवीन्विहाय नवमं घस्रं च संध्यां तथा ॥
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यतः
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहिपुनःकार्य्याहितप्रेप्सुभिः ॥ ३४ ॥

सामान्य क्षौर, दंत, केश, नखक्रियाभी चौलोक्त नक्षत्र वारादिकोंमें करने; परंतु शनि मंगल सूर्यवारमें तथा एक क्षौरसे नवमे दिनवें तथा संध्याकालमें, रिक्तातिथि पर्वदिन रात्रिसमयमें न करना और विना आसन, रण अथवा ग्रामांतरके तैयारीमें न्हायके नित्य नैमित्तिक कर्म करके, तेल उबटन लगायके भोजन करके, शृंगार भूषण वस्त्रादि पहनके अपने शुभ चाहनेवालोंने क्षौर न करना ॥ ३४ ॥

(मञ्जुभाषिणी) ऋतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणेक्षुरकर्म चद्विजनृपाज्ञयाचरेत् ॥ शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनक्षुरमाचरेन्नखलुगर्भिणीपतिः ॥ ३५ ॥

यज्ञमें, विवाहमें, गोदानसंस्कारमें, मातापिताके मरणमें, कैदसे छूटनेमें ब्राह्मणकी तथा राजाकी आज्ञासे क्षौर अनुक्त दिनमेंभी करलेना और गर्भिणी स्त्रीके पतिने प्रेतके साथ न जाना, तीर्थयात्रा समुद्रस्नान और क्षौर न करना ॥ ३५ ॥

(भु० प्र०)

नृपाणां हितं क्षौरभे श्मश्रुकर्म दिने पञ्चमेपञ्चमेस्योदये वा ॥ षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकःपञ्चपित्र्योऽब्दतोऽध्ययर्माक्षौरकृन्मृत्युमेति ॥३६॥

श्मश्रुकर्म-शृंगारार्थ क्षौर राजाओंनें क्षौरोक्त नक्षत्रमें अथवा पांचवें पांचवें दिनमें नित्य करना वा क्षौर नक्षत्रके उदयमें जैसै मेष लग्नमें १३ । २० अंश पर्यंत अश्विनी उदय २६ । ४० पर्यन्त भरणीका ३० पर्यंत कृत्तिकाका उदय होता है, जो कार्य क्षौरादि अश्विनीमें उक्त है वे मेषलग्नके १३ । २० अंशभीतर करलेना. ऐसेही सभी नक्षत्र जानना और छः आवृत्ति कृत्तिकामें ३ अनुराधामें ८ रोहिणीमें ५ मघामें ४ उत्तराफाल्गुनीमें मतांतरसे ४ आवृत्ति. सभी उत्तराओंमें जो एकही वर्षमें क्षौर करे तो मृत्यु पावे ॥ ३६ ॥

(पञ्चचामर) गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दकेतिथौशिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिकेरवावुदक् ॥ लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ ३७ ॥

बालकके पांचवें वर्षमें गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मीका पूजन करके ११ । १२ । १० । २ । ६ । ५ । ३ तिथियोंमें, सूर्यके उत्तरायणमें, लघु नक्षत्र श्रवण स्वाती रेवती पुनर्वसु आर्द्रा चित्रा अनूराधा नक्षत्रोंमें चंद्र बुध गुरु शुक्रवारमें चर १ । ४ । ७ । १० रहित शुभलग्नमें अक्षरारंभ करना ॥ ३७ ॥

(पञ्चचाचर) मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेश्विमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वयेर्कजीववित्सितेऽह्निषट्शरत्रिके ॥ शिवार्कदिग्द्विकेतिथौध्रुवांत्यमित्रभेपरैः शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ ३८ ॥

मृगाशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु,हस्त, चित्रा,स्वाती,श्रवण,धनिष्ठा,शततारा,अश्विनी, मूल, तीन पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्र रवि गुरु बुध शुक्रवार एवं ६ । ५ । ३ ।

११ । १२ । १० । २ तिथियोंमें तथा शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ में हो ऐसे मुहूर्त्तमें विद्या पढनेका आरम्भ करना, कोई ध्रुव, रेवती, अनूराधामेंभी कहते हैं । तथा अनध्यायभी विद्यारंभमें न लेने ॥ ३८ ॥

(शार्दू०) विप्राणांव्रतबन्धनंनिगदितंगर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथपञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठेतथैकादशे ॥
वैश्यानां पुनरष्टमेप्यथ पुनः स्याद्द्वादशेवत्सरे
कालेथंद्विगुणेगतेनिगदितेगौणंतदाहुर्बुधाः ॥ ३९ ॥

व्रतबन्धके लिये मुख्य काल नित्य एवं (काम्य) ब्रह्मवर्चसादि दो प्रकार हैं, गर्भसे अथवा जन्मसे सौरवर्ष प्रमाणसे ब्राह्मणका ८ वर्षमें, क्षत्रियका ११ में, वैश्यका १२ में, मुख्यकाल नित्य संज्ञक है, तथा ब्राह्मणके ५ वर्षमें, क्षत्रियका ६ में, वैश्यका८में काम्य संज्ञक मुख्यकालहै, तथा गर्भ वा जन्मसे नित्य संज्ञक मुख्य काल द्विगुण पर्यंत गौण काल होता है, जैसे-ब्राह्मणके १६ क्षत्रियके २२ वैश्यके २४ वर्षपर्यन्त गौणकाल है इनसे ऊपर अतिकाल है ॥ ३९ ॥

(वसं०) क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रेर्केविद्गुरुसिते-
न्दुदिनेव्रतं सत् ॥ द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमितेतिथौ
हिकृष्णादिमत्रिलवकेपिनचापराह्णे ॥ ४० ॥

क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु, आश्लेषा, मूल, तीन पूर्वा, आर्द्रा नक्षत्रोंमें तथा सूर्य बुध गुरु शुक्र चन्द्रवारोंमें २ । ३ । ५ । ११ । १२ । १० तिथियोंमें तथा कृष्णपक्षके पूर्व त्रिभागमें व्रतबंध शुभ होता है, परंतु अपराह्णमें नहीं. महीनोंमें उत्तरायणके छः महीने उक्त हैं इसमेंभी चैत्रका तो बडाही माहात्म्य है ॥ ४० ॥

(प्रमाणिका) कवीज्यचन्द्रलग्नपारिपौमृतौव्रतेधमाः ॥
व्ययेब्जभार्गवौतथातनौमृतौसुतेखलाः ॥ ४१ ॥

व्रतबंधकी लग्नशुद्धि शुक्र, बृहस्पति, चंद्रमा और लग्नेश छठे आठवें स्थानोंमें अधम होते हैं, चंद्रमा शुक्र बारहवें स्थानमें ऐसेही फल देते हैं तथा लग्न पंचम अष्टम भावमें पापग्रहभी अधम हैं ॥ ४१ ॥

(अनु०) व्रतबन्धेष्टषड्रिःफवर्जिताःशोभनाःशुभाः ॥
त्रिषडायेखलाःकर्कगोस्थःपूर्णोविधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

व्रतबंधमें शुभग्रह ८ । ६ । १२ स्थानोंमें अशुभ, अन्योंमें शुभ तथा ३ । ६ ११ स्थानोंमें पापग्रह शुभ और वृष कर्क २ । ४ राशियोंका चंद्रमा यदि पूर्ण हो तो लग्नमें शुभ होता है ॥ ४२ ॥

(शा०) विप्राधीशौभार्गवेज्यौकुजार्कौराजन्यानामोषधीशोविशांच ॥
शूद्राणांज्ञश्चांत्यजानांशनिःस्याच्छाखेशाःस्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ४३

ब्राह्मणोंके स्वामी शुक्र बृहस्पति, क्षत्रियोंके मंगल सूर्य, वैश्योंका चंद्रमा, शूद्रोंका बुध, चांडालोंका शनि स्वामी है. तथा ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदका शुक्र, सामवेदका मंगल, अथर्वणके बुध शाखेश हैं ॥ ४३ ॥

(वसं०) शाखेशवारतनुवीर्यमतीवशस्तंशाखेशसूर्यशशि-
जीवबलेव्रतंसत् ॥ जीवेभृगौरिपुगृहेविजितेचनीचे
स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ॥ ४४ ॥

व्रतबंधमें शाखेश, वेदेशका वार तथा लग्न और (गोचरोक्त) बलभी अति-उत्तम होता है. तथा शाखेश सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पतिका बल व्रतबंधमें मुख्य है. इनके शुभ होनेमें शुभ अशुभमें अशुभ होता है; यदि बृहस्पति शुक्र शत्रुराशि नीचराशिमें हों तथा (विजित) ग्रहयुद्धमें पराजित हों तो व्रतबंधवाला वेद, शास्त्र और नित्य नैमित्तिक श्रौतस्मार्त कर्मोंसे रहित होवे. उपलक्षणसे इनके नीचांशकादिकोंकाभी यही फल है ॥ ४४ ॥

(अनु०) जन्मर्क्षमासलग्नादौव्रतेविद्याधिकोव्रती ॥
आद्यगर्भेपिविप्राणांक्षत्रादीनामनादिमे ॥ ४५ ॥

व्रतबंधमें जन्मनक्षत्र जन्ममास जन्मलग्नादिकोंका दोष ब्राह्मणके आद्य-गर्भ तथा द्वितीयादि गर्भको और क्षत्रिय वैश्यके द्वितीयादि गर्भको नहीं है, केवल क्षत्रियादिकोंके आद्यगर्भ मात्रको दोष है, द्वितीयादिकोंको किसीको भी दोष नहीं ॥ ४५ ॥

(अनु०) बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ॥
श्रेष्ठोगुरुःखषट्त्र्याद्येपूजयान्यत्रनिन्दितः ॥ ४६ ॥

बालकके व्रतबंधमें, कन्याके विवाहमें, जन्मराशिसे ५ । ९ । ११ । २ । ७ स्थानमें गोचरसे बृहस्पति श्रेष्ठ होता है, १० । ६ । ३ । १ में (पूजा) शांति करके लेना. अन्य ४ । ८ । १२ में निंदित है ॥ ४६ ॥

(अनु०) स्वोच्चेस्वभेस्वमैत्रेवास्वांशेवर्गोत्तमेगुरुः ॥
रिःफाष्टतुर्यगोपीष्टोनीचारिस्थःशुभोप्यसत् ॥ ४७ ॥

बृहस्पति अपने उच्च ४ स्वभवन ९ । १२ स्वमैत्र १ । ८ स्वांश ९ । १२ के और वर्गोत्तमांशमें अथवा उक्त उच्चादि अंशकोंमें हो तो गोचरसे ४ । ८ । १२

मेंभी हो तौभी दोष नहीं और नीच १० और शत्रुराशि नवांशकोंमें गोचरका शुभभी अशुभ होता है ॥ ४७ ॥

(अनु०) कृष्णप्रदोषेऽनध्यायेशनौनिश्यपराह्णके ॥
प्राक्संध्यागर्जितेनेष्टोव्रतबन्धोगलग्रहे ॥ ४८ ॥

कृष्णपक्ष, (प्रथम त्रिभाग) प्रतिपदासे पंचमी पर्यंत छोडके व्रतबंधमें अयोग्य है, शुक्ल द्वितीयासे समस्त शुक्लपक्ष तथा कृष्णपंचमी पर्यंत उक्त है, और जिस दिन प्रदोष हो, अनध्याय शनिवार रात्रिमें (अपराह्ण) दिनके पिछले त्रिभागमें (प्राक्संध्या) पूर्वोक्त लक्षणसे पहिली संध्याके मेघ गर्जनमें तथा (गलग्रह) ४ । ७ । ८ । ९ । १३ । १४ । १५ । १ तिथियोंमें व्रतबंध न करना ॥ ४८ ॥

(अनु०) क्रूरोजडोभवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्वटुः ॥
यज्ञार्थभाक्तथामूर्खोरव्याद्यंशेतनौक्रमात् ॥ ४९ ॥

व्रतबंधके लग्नमें सूर्यका नवांश हो तो बटु क्रूरबुद्धि एवं चंद्रमाके मूर्ख, मंगलके पापी, बुधके चतुर, बृहस्पतिके (षट्कर्मा) यजन १ याजन २ दान ३ प्रतिग्रह ४ अध्ययन ५ अध्यापन ६ करनेवाला, शुक्रके यज्ञ करनेवाला, धनवान्, शनिके अंशमें मूर्ख होवे ॥ ४९ ॥

(त्रोटक) विद्यानिरतःशुभराशिलवेपापांशगतेहिदरिद्रतरः ॥
चन्द्रेस्वलवेबहुदुःखयुतःकर्णादितिभेधनवान्स्वलवे ॥ ५० ॥

व्रतबंधमें चंद्रमा शुभराशियोंके अंशकमें हो तो व्रतबंधवाला विद्यामें तत्पर रहे. पापग्रह राशियोंके अंशकमें हो तो अति दरिद्री होवे, यदि कर्कांशकमें हो तो बहुत दुःखोंसे युक्त होवे, परंतु श्रवण एवं पुनर्वसु नक्षत्रमें स्वांशका धनवान करता है ॥ ५० ॥

(अनु०) राजसेवीवैश्यवृत्तिःशस्त्रवृत्तिश्चपाठकः ॥
प्राज्ञोर्थवान्म्लेच्छसेवीकेन्द्रेसूर्यादिखेचरैः ॥ ५१ ॥

केंद्रमें सूर्य हो तो राजाकी सेवा करनेवाला, चंद्रमा हो तो (वैश्यवृत्ति) दुकानदार एवं मंगल० शस्त्रवृत्ति, बुध० पढ़ानेवाला, बृह० (प्राज्ञ) ज्ञानी, शुक्र० धनवान्, शनि० म्लेच्छोंकी सेवा करनेवाला होवे ॥ ५१ ॥

(अनु०) शुक्रेजीवेतथाचन्द्रेसूर्यभौमार्किसंयुते ॥
निर्गुणःक्रूरचेष्टःस्यान्निर्घृणः सद्युतेपटुः ॥ ५२ ॥

शुक्र अथवा बृहस्पति वा चंद्रमा सूर्ययुक्त हो तो व्रती (निर्गुण) गुणरहित होवे, मंगलयुक्त हो तो (क्रूरचेष्टा) हिंसक और शनियुत हो तो चतुर होवे ॥५२॥

(प्रमाणिका) विधौसितांशगेसितेत्रिकोणगेगुरौतनौ ॥
समस्तवेदविद्वतीयमांशगेतिनिर्घृणः ॥ ५३ ॥

यदि चंद्रमा शुक्रके २ । ७ अंशकमें त्रिकोण ९ । ५ भावमें हो तथा बृहस्पति लग्नमें हो तो व्रती समस्त वेदका जाननेवाला होवे, यदि लग्नके बृहस्पतिमें चंद्रमा शनिके अंशमें हो तो अतीव निर्लज्ज होवे ॥ ५३ ॥

(जवनचपला)शुचिशुक्रपौषतपसांदिगाश्विरुद्रार्कसंख्यासितातिथयः॥
भूतादित्रितयाष्टमिसंक्रमणंचव्रतेष्वनध्यायाः ॥ ५४ ॥

अनध्याय, नित्य नैमित्तिक दो प्रकारके हैं, आषाढ शुक्ल दशमी ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया पौषशुक्ल एकादशी मन्वादि माघशुक्ल द्वादशी इतने सोपपदा होनेसे अनध्याय हैं, तथा चतुर्दशी पूर्णमासी प्रतिपदा, कृष्णपक्षमें अमा अष्टमी एवं सूर्यका निरयन संक्रांति दिन और मन्वादि युगादि इतने व्रतबंधमें अनध्याय-त्वसे वर्जित हैं और अनध्याय पूर्व कहे जानने ॥ ५४ ॥

(अनु०) अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ॥
रात्र्यर्द्धसार्द्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ५५ ॥

द्वादशीके दिन अर्द्धरात्रिसे पूर्व त्रयोदशी, षष्ठीके दिन डेढ़ प्रहरसे पूर्व सप्तमी तथा तृतीयाके दिन एक प्रहरसे पूर्व चतुर्थी प्रवृत्त हो तो उस दिन प्रदोष जानना व्रतबंधमें नेष्ट है ॥ ५५ ॥

(आर्या) प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबन्धानन्तरंयदिचेत् ॥
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपिशान्तिपूर्वकंतत्स्यात् ॥ ५६ ॥

व्रतबंधके दिन बह्वृचाओंका ब्रह्मौदनसंस्कार होताहै. व्रतबंधसे ऊपर ब्रह्मौदनमें पूर्व यदि गर्जन भूकंप उल्का दिग्दाहादि उत्पात, अनध्याय हों तो शास्त्रोक्त शांति करनी, बह्वृचाओंसे अन्योंका उपनयनांग ब्राह्मणभोजन तथा वेदारंभांग ब्राह्मण-भोजनपर्यंत मानते हैं (शान्ति) स्वस्तिवाचन पायसहोम गायत्री तथा बृहस्पति-सूक्तजप, गोदान ब्राह्मणभोजन है ॥ ५६ ॥

(व० ति०) वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासुपौष्णकर-
मैत्रमृगादितीज्ये ॥ ध्रौवेषुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे-
मृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौसत् ॥ ५७ ॥

वेदक्रमसे व्रतबंध नक्षत्र मृगशिर आर्द्रा आश्लेषा हस्त चित्रा स्वाती मूल तीन पूर्वा ऋग्वेदियोंको; रेवती हस्त अनुराधा मृगशिर पुर्नवसु पुष्य रोहिणी तीन उत्तरा यजुर्वेदियोंको; अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीन उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण, सामवेदियोंको; मृगशिर, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, अंथर्वणवेदियोंको उपनयनमें विहित हैं ॥ ५७ ॥

वेदपरत्व नक्षत्रम् ।

ऋग्वेद.	यजुवद.	सामवेद.	अथर्ववेद.
मृ.	रे.	अश्वि.	मृ.
आ.	ह.	ध.	रे.
आश्ले.	अनू.	पुष्य	ह.
ह.	मृ.	ह.	अश्वि.
चि.	पु.	उ. ३	पुष्य
स्वा.	पु.	आ.	अनू.
मू.	उ. ३	श्र.	ध.
पू. ३	रो.	०	पुन.

(अनु०) नान्दीश्राद्धोत्तरंमातुःपुष्पे लग्नोन्तरेनहि ॥
शान्त्याचौलंव्रतंपाणिग्रहःकार्योन्यथानसत् ॥ ५८ ॥

नांदीश्राद्धसे ऊपर यदि कार्यवालेकी माता रजस्वला हो जाय तो चूडा, व्रतबन्ध, विवाह अन्य लग्नमें करना । यदि और लग्न न मिले तो शांति करके निश्चित लग्नमें करना; (शांति)सुवर्णप्रतिमामें लक्ष्मीका पूजन, श्रीसूक्तपाठ प्रत्यृचा पायसहोम और अभिषेक करना ॥ ५८ ॥

(अनु०) विचैत्रव्रतमासादौविभौमास्तेविभूमिजे ॥
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणांप्राग्विवाहतः ॥ ५९ ॥

क्षत्रियोंका व्रतबंधसे ऊपर विवाहके भीतर छूरिकाबंधन करते हैं, यह चैत्र छोडकर व्रतबंधोक्त मासादिमें होता है, परंतु इतना विशेष है कि, मंगल अस्त न हो तथा मंगलवार न हो, यह तलवार बांधनेका मुहूर्त्त है ॥ ५९ ॥

(अनु०) केशान्तंषोडशेवर्षेचौलोक्तदिवसेशुभम् ॥
व्रतोक्तदिवसादौहिसमावर्त्तनमिष्यते ॥ ६० ॥
इति दैवज्ञानन्तसुतरामविरचितेमुहूर्त्तचिन्तामणौसंस्कार-
प्रकरणं पञ्चमम् ॥ ५ ॥

ब्राह्मणका १६ क्षत्रिय वैश्यका २२ वर्षमें चूडाकर्मोक्त मुहूर्त्तमें केशांतकर्म करना, १३ वर्षमें महानाम्नी व्रत, १४ में महाव्रत, १५ उपनिषद्व्रत, १६ में केशांत तथा गोदान व्रतसंस्कार होते हैं, इन सभीमें चौलोक्त मुहूर्त्त है और वेद तथा विद्या पढके गोदानांत संस्कार करके व्रतबंधादि उक्त मुहूर्त्तमें समावर्त्तन संस्कार करना ॥ ६० ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिन्तामणिभाषायां संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

अथ विवाहप्रकरणम् ।

समावर्त्तनानन्तर स्वकुलोद्धारकपुत्रप्राप्त्यर्थ विवाह करना कहा है, यह ८ प्रकारका है, वरको आप बुलायके उसकी कुछ हानि न करके जो कन्या यथाशक्ति अलंकारयुक्त दीजाती है यह ब्राह्मविवाह है. इसका पुत्र पूर्वापर २१ पुरुषोंका उद्धार करता है (१), जो यज्ञ कराके दक्षिणामें दीजाती है यह दैव है, इसकी सन्तान पूर्वके १४ पश्चातके ६ पुरुषोंको पवित्र करती है (२), धर्म सहायार्थ जो वरके (याच्ञा करने) मांगनेसे दी जाती है वह प्राजापत्य है, इसका पुत्र पूर्वापर ६ । ६ पुरुषोंको पवित्र करता है (३), जो १ गौ १ वृषभ अथवा २ गौ यज्ञके लिये अथवा कन्याहीके लिये वरसे लेकर कन्या दीजाती है, परंतु (शुल्क) मूल्यबुद्धिसे न हो तो वह आर्ष संज्ञक है, यहभी दैवके तुल्य है (४), कन्याके पित्रादिकोंको धन देके अथवा कन्याको धनादिसे सन्तुष्ट करके जो विवाह है वह आसुर है (५), प्रथमही कन्या वरके प्रेमःआलिंगनादि हुयेमें उनके इच्छानुकूल विवाह होनेमें गांधर्व है (६), संग्राममें जीतके वा बलात्कारसे कन्या हरण करके राक्षस विवाह है (७), सोते अथवा निशा आदिसे बेहोशमें जो बलात्कारसे कन्याका धर्षण करता है यह अधम पैशाच विवाह है (८), इनमें प्राजापत्य, ब्राह्म, दैव, आर्ष विवाह उक्त समयपर शुभफल देते हैं. इनसे जो सन्तान हो वह दैव पैत्र्य कर्ममें पवित्र तथा धर्मात्मा ज्ञानी आस्तिक आदि गुणवान् होती है, आर्षविवाहभी विकल्पसे ऐसाही है, आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच कनिष्ठ हैं इनके सन्तान अधर्मी, पाखंडी, दूषक, नास्तिक आदि होते हैं (संग्राममें कन्याहरण) राक्षस तथा गांधर्वका अंग स्वयंवर, ये राजाओंके धर्म हैं अन्यके नहीं. द्रव्य देके जो विवाह (आसुर) होता है यह अतीव निंद्य है इसको

देवपितृकर्मोपयोगी धर्मपत्नी धर्मशास्त्र नहीं कहता दासीकी गणनामें है, इसके सन्तानभी शुद्ध नहीं होती इसके आदि ४ विवाहोंको कालनियमभी नहीं, जब चाहें तब विवाह करे "विवाहः सार्वकालिकः" यह गृह्यकारवचनभी गांधर्वादि विवाहोंके लिये है ॥

अथ विवाहप्रयोजनम् ।

(वसं०) भार्यात्रिवर्गकरणंशुभशीलयुक्ताशीलंशुभंभवति
लग्नवशेन तस्याः ॥ तस्माद्विवाहसमयः परिचि-
न्त्यते हि तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

(शुभशीलयुक्त) भर्त्रादिकोंको अनुकूल जो भार्या है वह धर्मार्थकाम त्रिवर्गके साधन योग्य स्थान है, उसका शील लग्नके आधीन है, वह लग्न विवाहसमयके आधीन है, स्त्रियोंका विवाह और पुरुषोंका उपनयन दूसरा जन्म है तस्मात् इन समयोंमें जैसा लग्न हो उसके सदृश संतान, स्वभाव और धर्म होते हैं. दैव, पैत्र्य, मनुष्य ३ ऋण गृहस्थीपर रहते हैं इनके उद्धार करनेवाली शुभसंतान होती है, यह संतान शुभलक्षण स्त्रीके आधीन है उसके शुभगुणवती होनेके हेतु विवाह-मुहूर्त कहते हैं ॥ १ ॥

(स्रग्धरा) आदौसंपूज्यरत्नादिभिरथगणकंवेदयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखेप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ॥
दृष्टोजीवेनसद्यः परिणयनकरोगोतुलाकर्कटाख्यं
वास्यात्प्रश्नस्यलग्नंशुभखचरयुतालोकितंतद्विदध्यात् ॥ २ ॥

यहां अथशब्द ग्रंथमध्य होनेसे मंगलार्थ है, प्रथम प्रश्न पूंछनेके लिये स्वस्थ चित्त ज्योतिषीको सुवर्ण वस्त्र फलादिकोंसे सुपूजित करके कन्याके विवाहके-लिये पूंछे. प्रश्नयोग कहते हैं कि, प्रश्नलग्नसे यदि १० । ११ । ३ । ७ । ५ स्थानमें चंद्रमा गुरुदृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होगा, तथा वृष, तुला, कर्क लग्न प्रश्नमें हो उसे शुभग्रह देखें वा शुभयुक्त हो तो विवाह शीघ्र होवे ॥ २ ॥

(द्रुतविलम्बितं)

विषमभांशगतौशशिभार्गवौतनुगृहंबलिनौयदिपश्यतः ॥
रचयतोवरलाभमिमौयदायुगलभांशगतौयुवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

प्रश्नमें चंद्रमा शुक्र यदि विषमराशि विषमनवांशकमें हो बलीहो तथा लग्नको देखे तो कन्याको वर मिले तथा वही चंद्रमा शुक्र युग्मराशि नवांशकमें हो तो वरको कन्या मिले, ये दोनहूं विवाहयोग एकही प्रयोजनीय हैं ॥ ३ ॥

(शालिनी) षष्ठाष्टस्थःप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्नेक्रूरःसप्तमेवाकुजःस्यात् ॥
मूर्त्ताविन्दुःसप्तमेतस्यभौमोरण्डासास्यादष्टसंवत्सरेण ॥ ४ ॥

यदि प्रश्नलग्नसे चंद्रमा छठा आठवां हो तो आठ वर्षमें विधवा होवे आपभी मरे १ तथा लग्नमें पापग्रह सप्तमसे मंगल हो तो वही फल. २ और लग्नमें चंद्रमा सप्तममें मंगल हो तोभी वही फल है. ३ ये वैधव्ययोग हैं ॥ ४ ॥

(दोधकं) प्रश्नतनोर्यदिपापनभोगःपञ्चमगोरिपुदृष्टशरीरः ॥
नीचगतश्चतदाखलुकन्यास्यात्कुलटात्वथवामृतवत्सा ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नमें पंचम पापग्रह शत्रुग्रहसे दृष्ट तथा नीचराशिगत हो तो (व्यभिचारिणी) वेश्या अथवा (मृतवत्सा) मरे पुत्रवाली होवे ॥ ५ ॥

(पुष्पिताग्रा)

यदिभवतिसितातिरिक्तपक्षेतनुगृहतःसमराशिगःशशांकः ॥
अशुभखचरवीक्षितोरिरन्ध्रेभवतिविवाहविनाशकारकोयम् ॥ ६ ॥

यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा प्रश्नलग्नसे २ । ४ आदि राशियोंका ६ । ८ भावमें पापदृष्ट हो तो (विवाहका विनाश) वह विवाह न होने पावे ॥ ६ ॥

(शार्दू०) जन्मोत्थंचविलोक्यबालविधवायोगंविधायव्रतं
सावित्र्याउतपैप्पलंहिसुतयादद्यादिमांवारहः ॥
सल्लग्नेच्युतमूर्तिपिप्पलघटैःकृत्वाविवाहंस्फुटं
दद्यात्तांचिरजीविनेत्रनभवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

यदि जन्मके बालवैधव्यकारक जातकोक्तादियोग कन्याके देखे जावें तो उसके पित्रादिकोंने (रहः) एकांतमें निश्चयतासे सावित्रीव्रत करना. तथा पिप्पलसंबंधी व्रत करना अथवा शुभलग्न विवाहोक्त, सद्गुणसौभाग्यकारकयोगोंमें विष्णुप्रतिमा अश्वत्थ और घटके साथ विवाहविधिसे विवाह करके यह कन्या चिरजीवी (जिस वरके दीर्घायु योग हों) को देना. इस उपाय करनेमें वैधव्यदोष नहीं होता और (पुनर्भू) दो वरोंके साथ विवाहका दोषभी नहीं होता ॥ ७ ॥

(स्त्रग्वि०) प्रश्नलग्नक्षणेयादृशापत्ययुक्स्वेच्छयाकामिनी
तत्रचेदाव्रजेत् ॥ कन्यकावासुतोवातदापण्डि
तैस्तादृशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

प्रश्नसमयमें ज्योतिषीके समीप जैसी स्त्री आवे वैसा उत्तर प्रश्नका कहना. जैसे कोई स्त्री पुत्र लेके आवे सो विवाहवाली कन्याके पुत्र होंगे, कन्या लेके

आवे तो कन्या होंगी, दोनहूं हों तो कन्या पुत्र सभी होंगे, उपलक्षणसे उस स्त्रीके जैसे लक्षण सुभगा दुर्भगा पुत्रवती वांझ आदि हों वैसेही कन्याके कहना ॥ ८ ॥

(स्रग्विणी) शंखभेरीविपञ्चीरवैर्मंगलंजायतेवैपरीत्यंतदालक्षयेत् ॥
वायसोवाखरःश्वासृगालोपिवाप्रश्नलग्नक्षणेरौतिनादंयदि ॥ ९ ॥

प्रश्नसमयमें शकुन शंख (भेरी) तुरी वीणा आदि शुभवाद्य सुननेमें, देखनेमें आवें तो मंगल होगा। ऐसेही हाथी घोडे छत्र आदि तथा जिन वस्तुओंके देखनेसे चित्त प्रसन्न हो ऐसे मंगलकारी होते हैं, (वायस) कौवा, गदहा, कुत्ता, स्यार यदि उस समय शब्द करें तो अमंगल जानना,उल्लू भैंसेभी ऐसेही हैं ॥९॥

(मत्त०)विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वाकरपीडोचितऋक्षैः ॥
वस्त्रालङ्कारादिसमेतैःफलपुष्पैःसंतोष्यादौस्यादनुकन्यावरणंसत् १०

कन्यावरणमुहूर्त्त-उत्तराषाढा, स्वाती, श्रवण, तीन पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिकामें तथा विवाहोक्त नक्षत्रादिकोंमें वस्त्र, भूषण आदि वस्तुसहित फलपुष्पोंसे विधिपूर्वक कन्यावरण (सगाई) करना ॥ १० ॥

(मत्त०)धरणिदेवोथवाकन्यकासोदरःशुभदिनेगीतवाद्यादिभिःसंयुतः।
वरवृतिंवस्त्रयज्ञोपवीतादिनाध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ ११ ॥

(ब्राह्मण) पुरोहितने अथवा कन्याके सहोदरभाईने शुभवारादि दिनमें तथा ध्रुवनक्षत्रोंसहित कृत्तिका, तीन पूर्वाओंमें गीत वाद्यादि मंगलपूर्वक वस्त्र, भूषण यज्ञोपवीतादिकोंसे वरका वरण (वाग्दान) करना ॥ ११ ॥

(व० मा०) गुरुशुद्धिवशेनकन्यकानांसमवर्षेषुषडब्दकोपरिष्टात् ॥
रविशुद्धिवशाच्छुभोवराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितोविवाहः ॥ १२ ॥

कन्याके गुरुशुद्धि (पूर्वोक्त) वरके सूर्यशुद्धि तथा दोनोंहीके चंद्रशुद्धिमें कन्याके अवस्था छःवर्ष ऊपर समवर्षमें, वरके विषम वर्षोंमें विवाह शुभ होता है. यहां आचार्यांतर मत है कि, जन्मसे विषमवर्षके तीन महीने ऊपर ९ महीने तथा समके तीन महीनेपर्यंत विवाह शुभ होता है ॥ १२ ॥

(द्रुतविल०)मिथुनकुम्भवृषालिमृगाजगेमिथुनगेपिरवौत्रिलवेशुचेः ॥
अलिमृगाजगतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ १३ ॥

मिथुन, कुंभ, वृष, वृश्चिक, मकर, मेष राशियोंके सूर्यमें विवाह शुभ होता है. इनमें आषाढके (त्रिलव) शुक्लप्रतिपदासे दशमीपर्यंत मात्र शुभ है. (हरिशयनी) एकादशीसे योग्य नहीं तथा वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिक, मकरके सूर्यमें पौष, मेषके सूर्यमें चैत्रभी विवाहमें लेते हैं ॥ १३ ॥

(रथोद्धता) आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौकरग्रहः ॥
नोचितोऽथविबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोःसुतप्रदः ॥ १४ ॥

जन्ममास (जन्मतिथिसे ३० दिन) जन्मनक्षत्र जन्मतिथिमें आद्यगर्भके पुत्र कन्याका विवाह उचित नहीं है. द्वितीयादि गर्भवालोंको पुत्र देनेवाले जन्ममासादि विवाहमें होते हैं ॥ १४ ॥

(शालिनी) ज्येष्ठद्वन्द्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रिज्येष्ठंचेन्नैवयुक्तंकदापि ॥
केचित्सूर्यंवह्निगंप्रोह्यमाहुर्नैवान्योन्यंज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः ॥१५॥

ज्येष्ठपुत्र ज्येष्ठमास अथवा ज्येष्ठकन्या ज्येष्ठमास यह ज्येष्ठद्वंद्व मध्यम होताहै. ज्येष्ठ पुत्र ज्येष्ठकन्या और ज्येष्ठमास विवाहमें यह त्रिज्येष्ठ कदापि योग्य नहीं है. कोई कृत्तिकाके सूर्यपर्यंत त्रिज्येष्ठ वा द्वंद्वका दोष नहीं है ऐसा कहते हैं. और आद्यगर्भके कन्या पुत्रका परस्पर विवाह नहीं होता ॥ १५ ॥

(हरिणी) सुतपरिणयात्षण्मासान्तः सुताकरपीडनं न च निजकुलेतद्वद्वामण्डनादपिमुण्डनम् ॥ नचसहजयोर्देयेभ्रात्रोः सहोदरकन्यके न च सहजसुतोद्वाहोब्दार्द्धेशुभे न पितृक्रिया ॥ १६ ॥

पुत्रके विवाहसे छः महीनेपर्यंत कन्याका विवाह न करना, तथा (मंडन) विवाहसे (मुंडन) चौल उपनयन और महानाम्न्यादि ४ व्रत छः महीनेपर्यंत न करने. यदि बीचमें संवत्सर बदल जावे. जैसे-फाल्गुनमें मंगल अथवा पुत्रोद्वाह हुआ तो वैशाखमें मुंडन अथवा कन्योद्वाह हो सकता है. यह नियम (निजकुल) तीन पुरुष सापिंयडपर्यंतकाहै, तथा मंगलसे ६ महीनेपर्यंत (पितृक्रिया) श्राद्धादि न करने, और सहोदर भाइयोंको सहोदरकन्या न देने. तथा सहोदरोंका विवाह भी ६ महीनेके भीतर एकसे दूसरा न करना, कन्याके विवाहसे ४ दिन पीछे पुत्रका विवाह हो सकता है. परंतु एकोदरप्रसूत कन्या, पुत्र वा पुत्र-पुत्र वा कन्या कन्याका छः महीने पर्यंत नहीं होता ॥ १६ ॥

(उप०) वध्वावरस्यापि कुलेत्रिपूरुषेनाशंव्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरम् ॥
मासोत्तरंतत्रविवाह इष्यते शान्त्याथवासूतकनिर्गमेपरैः ॥ १७ ॥

यदि विवाहमुहूर्त्त निश्चय (दिनपट्टा) हुएमें वर वा कन्याके (त्रिपुरुष) सापिंडच तीन पुस्तके भीतर कोई मरजावे तो एक महीने ऊपर शांति करके विवाह करना. कोई आचार्य कहते हैं कि, मृतकोत्तर शांति करके कर लेना, परंतु यह विषय तीन पुरुषवालोंका माता पिताका नहीं. जैसे-पिताका अशौच १ वर्ष, माताका

६ महीने, स्त्रीका ३ महीने, भ्रातृपुत्रादिकोंका १ महीना होताहै यही हेतु है. इसमें और विशेषता है कि, दुर्भिक्षमें, राज्यभ्रंशमें, पिताके प्राणसंकटमें तथा (प्रौढा) अतिकाली कन्याके विवाहमें किसी प्रकारका प्रतिकूल नहीं है ॥ १७ ॥

(उ० जा०) चूडाव्रतंचापिविवाहतोव्रताच्चूडाचनेष्टापुरुषत्रयान्तरे॥ वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमःषण्मासतो वाब्दविभेदतः शुभः ॥ १८ ॥

तीन पुरुषके भीतरवालोंके विवाहसे ऊपर छःमहीने पर्यंत वा संवत्सर बदलने पर्यंत चूडाकर्म, व्रतबंध तथा अपिशब्दसे महानाम्न्यादि ४ व्रतभी न करने, तथा वधूके प्रवेशसे उतनेही समयपर्यंत कन्याका (निर्गम) घरसे बाहर देना न करना. (त्रिपुरुषी) मूलपुरुषसे तीन पुस्तपर्यंत होती है, चौथे पुस्तको दोष नहीं ॥ १८ ॥

(व० ति०) श्वश्रूविनाशमहिजौसुतरांविधत्तःकन्यासुतौनिर्ऋतिजौश्वशुरंहतश्च ॥ ज्येष्ठाभजाततनयास्वधवाग्रजंचशक्राग्निजाभवतिदेवरनाशकर्त्री ॥ १९ ॥

आश्लेषाके उत्पन्न कन्या पुत्र साक्षात् सासको नाश करते हैं, नतु सौतिया सासको. तथा मूलके जन्मवाले श्वशुरका नाश करते हैं; तथा ज्येष्ठामें जन्मवाली कन्या अपने पतिके सहोदर जेठ भाई (ज्येष्ठ) को, ऐसेही विशाखाके जन्मवाली देवर भर्त्ताके सहोदर छोटे भाईका नाश करतीहै, ग्रंथांतरवाक्य ऐसे भी हैं कि, ज्येष्ठावाला पुरुष कन्याके ज्येष्ठ भाईको और विशाखावाला छोटेभाई (शाले) को नाश करता है ॥ पत्न्यग्रजामग्रजं वा हन्ति ज्येष्ठर्क्षजःपुमान् । तथा भार्या स्वसारं वा शालकं वा द्विदैवजः" ॥ इति । यहां ज्येष्ठ कनिष्ठ भाइयोंके स्थानमें बहिनभी कहीहैं. उक्तसे प्रथम वा पीछेके गर्भवाला कन्या वा पुत्र जो हो, यह भावार्थ है ॥ १९ ॥

(अनु०) द्वीशाद्यपादत्रयजाकन्यादेवरसौख्यदा ॥
मूलान्त्यपादसार्पाद्यपादजौतौतयोःशुभौ ॥ २० ॥

पूर्वोक्त दोषोंमें विशेष विचार है कि, विशाखाके प्रथम तीन चरणवाली कन्या देवरको दोष नहीं करती, प्रत्युत सुख देनेवाली होती है. केवल चतुर्थचरण निषिद्ध है. ऐसेही मूलका चतुर्थचरण श्वशुरको, आश्लेषा प्रथम चरण सासको, वर तथा कन्याका शुभ होता है ॥ २० ॥

(अनु०) वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकम् ॥
गणमैत्रंभकूटंचनाडीचैतेगुणाधिकाः ॥ २१ ॥

विवाहका मेलक विचार कहते हैं कि, वर्णमैत्री हो तो (१) गुण वश्यमें (२) तारामें (३) योनिमें (४) ग्रहमैत्रीमें (५) गणमैत्रीमें (६) भकूटमैत्रीमें (७) नाडीमेंगुण (८) इन सबका योग (३६) गुण होतेहैं. अधिकमें मेलक शुभ, हीनमें क्रमशः अशुभ होता है. इन प्रत्येकका विचार आगे कहते हैं ॥ २१ ॥

(प्रमाणिका) द्विजाझषालिकर्कटास्ततोनृपाविशोङ्घ्रिजाः ॥
वरस्य वर्णतोधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥ २२ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्कट ब्राह्मण तथा १ । ५ । ९ क्षत्रिय,, २ । ६ । १० वैश्य, ३ । ७ । ११ शूद्रवर्ण हैं. वरसे हीनवर्ण कन्या शुभ, कन्याके वर्णसे हीनवर्ण वर अच्छा नहीं होता. दोनोंहूंका एक वर्ण अतिउत्तम होता है, वर्णाधिक वर होने में (१) गुण मिलता है, कन्या अधिकमें नहीं ॥ २२ ॥

(इं० व०) हित्वामृगेन्द्रंनरराशिवश्याःसर्वेतथैषांजलजाश्चभक्ष्याः ॥
सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिंज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥ २३ ॥

वश्यकूट-मनुष्यराशि ३ । ६ । ७ योंके वशवर्ती सिंह विना सभी राशि हैं. जलचर राशिभी मनुष्योंका भक्ष्य होनेसे उनके वश्यही हैं तथा सिंहके वश वृश्चिक छोडके सभी राशि हैं. अन्य परस्पर वश्यावश्य मानुष व्यवहारसे जानना, यहांभी वरके राशिके वश्य कन्याकी राशि होनेमें (२) गुण मिलते हैं, विपरीतमें नहीं ॥ २३ ॥

(अनु०) कन्यर्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ।
गणयेन्नवभिःशेषेत्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र वरनक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रपर्यंत गिनके जितने हों ९ से शेष करके तारा जाननी. ३ । ५ । ७ । शेष रहें तो अशुभ, अन्य शुभ होते हैं, शुभसे (३) गुण मिलते हैं ॥ २४ ॥

(शा० वि०) अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः सिंहोवस्वजपाद्भयोःसमुदितो यामान्त्ययोःकुञ्जरः ॥ मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥ २५ ॥ ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्गउदितोमूलार्द्रयोः श्वातथामार्जारोदितिसार्पयोरथमघायोन्योस्तथै-

वोन्दुरुः ॥ व्याघ्रोद्वीशभचित्रयोरपिचगौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोर्योनिः पादगयोःपरस्परमहावैरंभयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

योनिकूट—अश्विनी शतताराकी अश्वयोनि । स्वाती, हस्त, महिष । धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, सिंह । भरणी, रेवती, हाथी । पुष्य, कृत्तिका, मेष (मेंढा) । श्रवण पूर्वाषाढा, वानर । उत्तराषाढा, अभिजित, नेवला । रोहिणी, मृगशिर, सर्प । ज्येष्ठा, अनुराधा, हरिण । मूल, आर्द्रा, कुत्ता । पुनर्वसु, आश्लेषा, बिल्ली । मघा, पूर्वाफा० चूहा । विशाखा, चित्रा, व्याघ्र । उत्तरा फा०, उत्तरा भा० गौयोनि है । एक योनिके वर कन्या उत्तम मित्र समयोनियोंके सामान्य और परस्पर योनिवैरमें अशुभ होता है. इनका वैर गौव्याघ्रका । गज सिंह । घोडा भैंसा । कुत्ता मृग । नेवला सर्प । वानर मेंढा । बिल्ली चूहा । इत्यादि लोकव्यवहारमें जानना. योनिमैत्री होनेमें (४) गुण मिलते हैं ॥ २५ ॥ २६ ॥

(शा० वि०) मित्राणिद्युमणेःकुजेज्यशशिनःशुक्रार्कजौवैरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचास्यद्विषत् ॥ शेषाश्चास्य-समाः कुजस्यसुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशभृत्सूनोःसिताहस्करौ ॥ २७ ॥ मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाःसमागीष्पतेर्मित्राण्यर्ककुजेन्दवोबुधसितौ शत्रू समःसूर्यजः ॥ मित्रेसौम्यशनीकवेः शशिरवीशत्रू कुजेज्यौ समौ मित्रे शुक्रबुधौ शनेःशशिरविक्ष्माजा द्विषोन्यः समः ॥ २८ ॥

ग्रहकूट—सूर्यके मं० बृ० चं० मित्र, शु० श० शत्रु, बु० सम है । चंद्रमाके बु० सू० मित्र, अन्य सम, शत्रु कोई नहीं । मंगलके चं० गु० सू० मित्र, बुध शत्रु, शु० श० सम । बुधके शु० सू० मित्र, चं० शत्रु, बृ० श० मं० सम । बृहस्पतिके सू० मं० चं० मित्र, बु० शु० शत्रु, श० सम । शुक्रके बु० श० मित्र, चं० सू० शत्रु, बृ० मं० सम। शनिके शु० बु० मित्र, चं० सू० मं० शत्रु, बु० समहै । वरकन्याके राशीश मित्र तथा एकाधिपत्य हों तो ५ गुण, एवं सममित्रमें ४ सम सममें ३ मित्र शत्रुमें २ सम शत्रुमें १ शत्रु शत्रुमें (०) मिलता है. शत्रु शत्रुका मेल कहीं नहीं होता, मृत्युषदकाष्टक होता है ॥ २७ ॥ २८ ॥

मित्रामित्रसमचक्रम् ।

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र.	चं.मं.गु.	र.बु.	गु.चं.र.	र.शु.	र.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
सम.	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.	मं.गु.	गु.
शत्रु.	शु.श.	०	बु.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.

(वसं०) रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणा-
नलतक्षराधाः ॥ पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रा-
दितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २९ ॥

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा राक्षसगण । तीन पूर्वा, तीन उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, मनुष्यगण । और अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिर, श्रवण, रेवती, स्वाती, अश्विनी पुष्य, हस्त देवगण है ॥ २९ ॥

(मालि०) निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्यादमरमनुजयोः
सामध्यमा संप्रदिष्टा ॥ असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्र-
दिष्टो दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥ ३० ॥

वरकन्याका एकही गण हो तो अत्यन्त प्रीति होती है, देवमनुष्यकी मध्यम प्रीति, राक्षस मनुष्यकी मृत्यु, देवराक्षसका कलह होता है । मनुष्य राक्षसमें विशेष यह है कि, वर राक्षस कन्या मनुष्यगण हो तो वैर होता है, यदि वर मनुष्य कन्या राक्षसगण हो तो वरको मृत्यु, यह बहुत प्रमाणोंसे पुष्ट है. इस कूटमें गुणसाम्यमें ६ गुण देव मनुष्यमें ५ देव राक्षस एवं मनुष्यराक्षसमें गुण (०) हैं; कन्या राक्षसी वर देवमें २ कन्या देव वर मनुष्यमें ४ गुण हैं ॥ ३० ॥

(अ०) विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं न सत् ॥
समात्षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरीतं तदष्टमम् ॥
मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ॥
द्विद्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

विषमराशिसे छठी राशि तथा समसे आठवीं वही होती है, यह शत्रुषट्काष्टक है. इनके स्वामी शत्रु होते हैं, तथा समराशिसे छठी, विषमसे आठवीं मित्रषट्काष्टक है. इनके स्वामी मित्र होते हैं, यह शुभ होता है. इससे विपरीत अशुभ है, शत्रुषट्काष्टक मृत्यु करता है, यदि वरकन्याकी ५। ९ एकसे दूसरी पंच नवम राशि हो तो पुत्रहानि, एवं दूसरी बारहवीं हों तो दरिद्रता होती है, अन्यस्थानोंमें शुभ होते हैं ॥ ३१ ॥

(शार्दू०) प्रोक्तेदुष्टभकूटकेपरिणयस्त्वेकाधिपत्येशुभो-
थोराशीश्वरसौहृदेपि गदितोनाडचर्क्षशुद्धिर्यदि ॥
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखितेनाडचर्क्षशुद्धौतथा
ताराशुद्धिवशेनराशिवशताभावेनिरुक्तोबुधैः ॥ ३२ ॥

उक्त प्रकारसे दुष्टभकूट हुएमेंभी परिहार है कि, वरकन्याकी राशियोंका स्वामी एकही हो. जैसे १। ८ का (मंगल) २। ७ का (शुक्र) तो विवाह शुभ होता है, तथा राशीशोंकी मैत्रीमेंभी शुभ है, यदि नाडीशुद्धि नक्षत्रशुद्धि हो, यदि उक्तराशीश अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तथा बलवान्भी हों और नाडीशुद्धि हो तथा ताराशुद्धि हो; एवं राशिवश्यताभी योग्यही हो तो ग्रहोंके शत्रुभावका दोष नहीं होता. यहां (ग्रहमैत्री) मित्रषट्काष्टक (१) एकाधिपत्य (२) सबलांशेशमैत्री (३) राशिवश्यता (४) ताराशुद्धि (५) प्रकार षट्काष्टकोंके परिहार हैं. इनमेंसे एकके होनेमें भी षट्काष्टकदोष नहीं होता, परन्तु नाडी सभीमें होना चाहिये ॥ ३२ ॥

(शालि०) मैत्र्यांराशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापिस्याद्ग-
णानांनदोषः ॥ खेटारित्वंनाशयेत्सद्भकूटंखेट-
प्रीतिश्चापिदुष्टंभकूटम् ॥ ३३ ॥

गणकूट भकूट ग्रहकूटोंका परिहार कन्या वरके राशीश तथा अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तो दुष्टगण (राक्षस मनुष्यादि) का दोष नहीं होता, तथा (शुभ राशिकूट) तीसरा ग्यारहवां आदि हो तो ग्रहोंके शत्रुताका दोष नहीं होता, एवं राशीशोंकी प्रीति षट्काष्टकादि दोषोंको नाश करती है ॥ ३३ ॥

(स्रग्ध०) ज्येष्ठारौद्रार्य्यमांभः पतिभयुगयुगंदास्रभंचैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभंयोनिबुध्न्येचमध्या ॥

वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथोपौष्णभंचापरास्या-
द्दम्पत्योरेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः ३४॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, शततारा इनसे दो दो नक्षत्रोंकी आद्यनाडी । पुष्य, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदाकी मध्यनाडी । स्वाती, कृत्तिका, आश्लेषा, उत्तराषाढा इनमेंसे दो दो नक्षत्रोंकी अंत्यनाडी होतीहै. वरकन्याके नक्षत्र एकनाडीमें हों तो अशुभ फल होताहै, मध्यनाडीमें हो तो दोनोंहीकी निश्चय करके मृत्यु होती है. मध्य-नाडी छोडके पार्श्वनाडियोंका दोष गोदावरीके दक्षिण अथवा क्षत्रिय आदिकोंको नहीं. किसीका मत है कि, आद्य नाडी वरको, अंत्य कन्याको, मध्य दोनोंहीको दोष करती है, इनमें अंत्यनाडीको अन्य परिहारांतर होनेमें लेतेभी हैं "चतुस्त्रि-द्व्यङ्घ्रिभोत्थायाः कन्यायाः क्रमशोऽश्विभात ॥ वह्निभादिन्दुभान्नाडी त्रिचतुः-पञ्चपर्वसु ॥ १ ॥" ग्रन्थांतरोंसे त्रिचतुःपंचनाडी कहते हैं—कन्याका नक्षत्र चार चरण एकही राशिका हो तो पूर्वोक्त त्रिनाडी, एवं तीन चरण एकराशिका हो तो चतुर्नाडी, द्विचरणमें पंचनाडी विचारना. त्रिनाडी अश्विनीसे, चतुर्नाडी कृत्तिकासे, पंचनाडी मृगशिरसे गिनते हैं, परंतु चतुर्नाडी अहल्या देशमें, पंचनाडी पंजाबमें, त्रिनाडी सर्वत्र वर्जित है. कोई नाडीमें नक्षत्रके प्रथम, चतुर्थ और तीसरे दूसरे चरणमें विशेष दोष कहतेहैं; नाडीविचार वरकन्या, स्वामि-सेवक, नये मित्र, देश तथा नवीन देश, ग्राम, नगर, घरमें है.—जहां नक्षत्रनाडी दुष्ट, चरणनाडी न हो तहां दोष अल्प है. पूर्वोक्तादि परिहार इनमें नाडीकी शांतिभी है कि, मृत्युंजयादि जप सुवर्णनाडीदान तथा वर्णादि कूटमें गौ अन्न, वस्त्र सुवर्ण देना ॥ ३४ ॥

कन्यापक्षे.	वर्णगुण.			
ब्राह्म.	१	०	०	०
क्षत्रि.	१	१	०	०
वैश्य.	१	१	१	०
शूद्र.	१	१	१	१
वर्ण.	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
	वरपक्षे.			

वश्यगुण.

चतुष्प.	२	॥	१	०	२
मनु.	॥	२	०	०	०
जलचर.	१	०	२	२	२
वनचर.	०	०	२	२	०
कीट.	१	०	१	०	२

ताराचक्रम्.

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिगुणाः।

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा	मीं.	मू.	गौ	भैं	व्या	ह.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	२	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	३	२	४	०	२	२	२	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो	१	२	३	२	३	२	२	४	५	०	३	२	२	१
भैंस	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	३	२	२
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	१	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	३	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	०	०	३	२	१	२	२	४

गणगुणाः।

		वर		
		दे.	म.	रा.
वधू	दे.	६	४	०
	म.	४	६	०
	रा.	०	०	६

ग्रहमैत्रीगुणाः ।

		वर.						
		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
कन्या.	र.	५	५	५	३	५	०	०
	चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
	मं	५	४	५	॥	५	३	॥
	बु.	३	१	॥	५	॥	५	४
	गु.	५	४	५	॥	५	॥	३
	शु.	५	॥	३	५	॥	५	५
	श	०	॥	॥	४	३	५	५

नाडीचक्रम्.

		वर.		
		आ.	म.	अं.
कन्या.	आ.	०	८	८
	म.	८	०	८
	अं.	८	८	०

भकूटगुणाः.

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
मेष.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष.	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क.	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	७	०
सिंह.	०	७	०	५	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या.	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला.	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धनु.	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर.	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ.	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

(आर्या) अकचटतपयशवर्गाःखगेशमार्जारसिंहशुनाम् ॥
सर्पाखुमृगावीनांनिजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ ३८ ॥

अवर्ग गरुड । कवर्ग मार्जार । चवर्ग सिंह । टवर्ग कुत्ता । तवर्ग सर्प । पवर्ग चूहा । यवर्ग मृग । शवर्ग (अवि) बकरा ये ८ वर्गोंके स्वामी हैं. अपनेसे

पांचवां शत्रु होता है. जैसे-गरुड़का सर्प, मार्जारका चूहा इत्यादि. स्त्रीपुरुषके नक्षत्र भक्ष्यभक्षक हों तो शुभ नहीं होता; कोई नामाद्यक्षरसेभी वरकन्या, स्वामी सेवक आदि सभीको विचारते हैं ॥ ३५ ॥

(शालि०) राश्यैक्येचेद्भिन्नमृक्षंद्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्येराशियुग्मंतथैव ॥
नाडीदोषोनोगणानांचदोषोनक्षत्रैक्येपादभेदेशुभंस्यात् ॥ ३६ ॥

यदि वरकन्यादिकोंका एक राशि और दो नक्षत्र हों वा एक नक्षत्र हो, परंतु राशि दो हों और नक्षत्र तो एक हो परतु चरण भिन्न हों, एकही चरण न हो तो नाडीदोष, गणदोष उपलक्षणसे तारादिदोषभी नहीं होते. व्यवहार, राजसेवा, संग्राम, ग्राम, मित्रतामें नामराशिसे फल हैं ॥ ३६ ॥

(मं०भा०) कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाःकविभौमजी-
वशनिसौरयोगुरुः ॥ इहराशिपाः क्रियमृगास्यतौलिके-
न्दुभतो नवांशविधिरुच्यतेबुधैः ॥ ३७ ॥

राशिस्वामी-मेष वृश्चिकका मंगल, तुला वृषका शुक्र, एवं ३ । ६ का बुध, ४ का चन्द्रमा, ५ का सूर्य, ९ । १२ का बृहस्पति, १० । ११ का शनि राशीश हैं । नवांश कहते हैं कि एक राशिके ३० अंश होते हैं; इनके ९ भाग ३ अंश २० कलाका एक, ६ । ४० पर्यंत दो, एवं १० । ० । १३ । २० । १६ । ४० । २० । ० ॥ २३ । २० । २६ । ४० । ३० । ० ॥ इनकी गिनती १ । ५ । ९ को, मेषसे २ । ६ । १० को, मकरसे ३ । ७ । ११ को, तुलासे ४ । ८ । १२ को, कर्कसे अर्थात् चरादि गणना है, जैसे-मेषके ३ । २० तो मेषका ६ । ४० पर्यंत वृषका नवांश इत्यादि, वृषमें ३ । २० लौं मकरका ६ । ४० में कुम्भका इत्यादि सभीके जानने ॥ ३७ ॥

(शशिवदना) समगृहमध्ये शशिरविहोरा ॥
विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ॥ ३८ ॥

होरा-समराशि १५ अंशलौं चन्द्रमाकी उपरांत ३० लौं, सूर्यकी विषम राशिमें १५ लौं सूर्यकी उपरांत चन्द्रमाकी होरा होती है ॥ ३८ ॥

(वसं०) शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्यबाणशैलाष्टपञ्चविशि-
खाःसमराशिमध्ये ॥ त्रिंशांशकोविषमभेविपरीतमस्मा-
द्द्रेष्काणकाः प्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥ ३९ ॥

त्रिंशांशक–समराशिमें ५ अंशपर्यंत शुक्रका तब ७ बुधका तब ८ बृहस्पतिका ५ शनिका ५ मंगलका और विषम राशिमें विपरीत ५ अंश मंगलका ५ शनि ८ बृहस्पति ७ बुध ५ शुक्रका त्रिंशांश होता है । द्रेष्काण–दश अंशपर्यंत जो राशि है उसके स्वामीके ११ से २० पर्यन्त उस राशिसे पंचम राशिके स्वामीका २१ से ३० पर्यन्त उस राशिसे नवम राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है ॥ ३९ ॥

(वसं०) स्याद्द्वादशांश इहराशितएवगेहंहोराथदृक्कनवमांशकसूर्य्यभागाः ॥ त्रिंशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः सौम्यैः शुभं भवति वाशुभमेव पापैः ॥ ४० ॥

द्वादशांश–एकराशिके ३० अंशोंके १२ भाग अढाई २ । ३० अंशका होता है. अपनी राशिसे गिना जाता है. जैसे–मेषके २ । ३० अंशमें मेषका द्वादशांश, ५ । ० पर्यन्त वृषका. ७ । ३० पर्यन्त मिथुनका इत्यादि सभीका जानना. होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश राशि ये षड्वर्ग हैं. शुभग्रहोंके षड्वर्ग सभी कार्यमें शुभ, पापका अशुभ होता है ॥ ४० ॥

(शार्दू०) ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनीपित्र्यादौघटिकाद्वयंनिगदितंतद्भस्यगण्डान्तकम् ॥ कर्काल्यण्डजभांततोऽर्धघटिकासिंहाश्वमेषादिगापूर्णान्तेघटिकात्मकंत्वशुभदंनन्दातिथेश्चादिमम् ॥ ४१ ॥

तिथ्यादि पंचांग तथा वर्षर्तु मासपक्षदिनादि सभी संधि होती है, इनमें विशेषतः तिथिनक्षत्रलग्नकी संधियोंकी गंडांत संज्ञा है; वह ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषाके अंत्यके २घटी अश्विनी, मघा, मूलके आदिकी २ घटी समस्त ४ । ४ घटियोंका नक्षत्रगंडांत होता है. तथा कर्क, वृश्चिक, मीनके अंतिम आधी घटी, मेष, सिंह, धनके आदिकी आधी घटी समस्त घटी लग्नगंडांत होता है, एवं १ पूर्णा ५।१०। १५ तिथियोंके अंतके १ घटी, नंदा ११ । ६ । १ के आदिके १ घटी समस्त दो घटी तिथिगंडांत होता है; गंडांतके उत्पन्न कन्या पुत्र दोषद होते हैं. इसका विस्तार नक्षत्रप्रकरणमें कह आये. शुभकार्योंमें गंडांत वर्जित है, परंतु तिथिगंडांत लग्नगंडांत ग्रंथांतरोंमें सामान्यदोष कहा है कि, चंद्रमाके बली होनेमें तिथिगंडांत, बृहस्पतिके बली होनेमें लग्नगंडांतका दोष नहीं, ऐसेही मासांतके ३ दिन वर्षांतके १५ दिन संधि गंडांतसंज्ञक है, योग करण संधि १ । १ घटी होती है ऐसेही दिन रात्रि अर्द्धरात्रि मध्याह्नादिभी हैं ॥ ४१ ॥

(अ०) लग्नात्पापावृज्वनृजूव्ययार्थस्थौ यदा तदा ॥
कर्त्तरीनाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ ४२ ॥

लग्नसे पापग्रह दूसरा वक्री तथा बारहवां मार्गी हो तो इसका नाम कर्त्तरी, विवाहादिकोंमें मृत्यु किंवा दरिद्रता किंवा शोक देती है, ऐसेही सप्तमभावमें कर्त्तरी अशुभ कहते हैं, तथा चंद्रमापरभी उक्तफलकारक है, जातकोंमें सभी भावोंमें अपने २ उक्त वस्तुको अनिष्ट फल है ॥ ४२ ॥

(अ०) चंद्रेसूर्यादिसंयुक्तेदारिद्र्यंमरणंशुभम् ॥
सौख्यंसापत्न्यवैराग्येपापद्वययुतेमृतिः ॥ ४३ ॥

चन्द्रमा सूर्यके साथ हो तो दरिद्रता, एवं मंगलके साथ मृत्यु, बुधके साथ शुभ, बृहस्पतिके साथ सौख्य, शुक्रके (सापत्न्य) सौकण, शनिके (वैराग्य) फकीरी, राहु केतुभी ऐसेही जानना- यदि चंद्रमा दो पापग्रहोंसे युक्त हो तो मृत्यु होवे, परंतु मित्र स्वक्षेत्र उच्चवर्गोत्तमादिगत चंद्रमा पापयुक्त दोष नहीं करता यह ग्रंथांतरमत है ॥ ४३ ॥

(अ०) जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टःकरग्रहः ॥
एकाधिपत्येराशीशे मैत्रे वा नैवदोषकृत् ॥ ४४ ॥

जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न विवाहादि शुभकार्यमें शुभ नहीं होता परन्तु एकाधिपत्य जैसे १ । ८ हो तथा राशीश मैत्री (जैसे ५ । १२) हो तो, लग्नाष्टक राश्यष्टकका दोष नहीं होता ॥ ४४ ॥

(उप०) मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोष्टमंलग्नंयदानाष्टमगेहदोषकृत ॥
अन्योन्यमित्रत्ववशेनसावधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥४५॥

यदि । १२ । २ । ४ । ८ । १० । ६ ये राशि यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम हों तो उक्त अष्टकदोष नहीं है. क्योंकि इनके स्वामी परस्पर मित्र हैं इससे इन राशियोंके अष्टम होनेमें वधू-पुत्र, आयु और घरके सुखयुक्त होती है. मतांतर है कि, जो अष्टम राशीश केन्द्रमें किंवा स्वोच्चादिमें हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं ॥ ४५ ॥

(कुसुमविचित्रा)

मृतिभवनांशोयदिचविलग्नेतदधिपतिर्वानशुभकरः स्यात् ॥
व्ययभवनंवाभवातितदंशस्तदधिपतिर्वाकलहकरःस्यात् ॥ ४६ ॥

उक्त अष्टमराशिका नवांश अथवा अष्टमेश लग्नमें हो तो शुभ नहीं. यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे व्ययराशिसे व्ययराशि वा उसका अंश अथवा तदीश लग्नमें हो तो कलहकारक होता है, कोई धनहानि कहते हैं ॥ ४६ ॥

(वंशस्थ) खरामतोंत्यादितिवह्निपित्र्यभेखवेदतःकेरदतश्वसार्पभे ॥
खबाणतोश्विधृतितोर्यमाम्बुपे कृतेर्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४७ ॥
मनोर्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे कुपक्षतः शैवकरोष्टतोजभे ॥
युगाश्वितोबुध्न्यभतोययाम्यभेखचन्द्रतोमित्रभवासवश्रुतौ ॥ ४८ ॥
मूलेङ्कबाणाद्विषनाडिकाःकृतावर्ज्याःशुभेथोविषनाडिकाध्रुवाः ॥
निघ्नाभभोगेनखतर्कभाजिताःस्पष्टाभवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ४९ ॥

विषघटी-रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघाके ३० घटीसे ऊपर ४ घटी एवं रो० २० से आश्लेषा ३२ से अश्विनी ५० से भरणी शततारा १८ से पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढा, पुष्यके २० से विशाखा स्वाती मृगशिर ज्येष्ठा १४ से आर्द्रा हस्तके २१ से पूर्वाभाद्रपदा १६ से उत्तरा भाद्रपदा, पूर्वाषाढा, भरणी २४ से अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण १० से मूलके ५६ से । ये विषनाडी सर्वत्र शुभकृत्यमें तथा जन्ममेंभी (वर्ज्य) अशुभफलकारक हैं. यह घटिका षष्टिप्रमाण भुक्तसे जाननी. जैसे ६० घटीके नक्षत्रमें उक्त घटीसे विषघटी होती है तो अमुक सर्वभोग होनेमें कितनी घटीसे होंगी उक्त ध्रुवक ६० से गुणाकर सर्वभोगसे भाग लिया स्पष्ट विषघटीका आरम्भ मिलता है. ग्रन्थांतरोंमें परिहार है कि, चन्द्रमा लग्न विना केन्द्रत्रिकोणमें बली हो अथवा लग्नेश शुभयुक्त केंद्रमें हो तो विषघटी का दोष नहीं होता ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

नक्षत्रविषघटी.

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

वारविषघटी.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	८	१२	१०	७	५	२५

तिथिविषघटी.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	ति.
१५	५	८	७	७	११	४	८	७	१०	३	१३	१४	७	८	घ.

(मालिनी) गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वेभिजिदथ
चविधातापीन्द्रइन्द्रानलौच॥ निर्ऋतिरुदकनाथोप्यर्यमा
थोभगःस्युःक्रमश इह मुहूर्त्तावासरे बाणचन्द्राः ॥ ५० ॥

एक दिनके १५ मुहूर्तोंके स्वामी–महादेव १ सर्प २ मित्र ३ पितर ४ वसु ५ जल ६ विश्वेदेव ७ अभिजित् ८ ब्रह्मा ९ इन्द्र १० इंद्राग्नी ११ राक्षस १२ वरुण १३ अर्यमा १४ भग १५ मुहूर्त्त २ घटीका होता है ॥ ५० ॥

(अनु०) शिवोजपादादष्टौस्युर्भेशाअदितिजीवकौ ॥
विष्णवर्कत्वाष्ट्रमरुतोमुहूर्त्तानिशि कीर्तिताः ॥ ५१ ॥

रात्रिमुहूर्त्त–शिव १ अजचरण २ अहिर्बुध्न्य ३ पूषा ४ अश्वि ५ यम ६ अग्नि ७ ब्रह्मा ८ चंद्रमा ९ अदिति १० बृहस्पति ११ विष्णु १२ सूर्य १३ त्वाष्ट्र १४ वायु १५ ये रात्रिमें मुहूर्त्ताधीश हैं, इनका प्रयोजन यह है कि, जो कार्य जिस नक्षत्रमें कहा है वह उसके स्वामी मुहूर्त्तमें कर लेना. "धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेस्य" यह ग्रंथकारनेभी प्रकट कहा है ॥ ५१ ॥

(भुजंगप्र०) रवावर्यमाब्रह्मरक्षश्चसोमेकुजेवह्निपित्र्येबुधेचाभि-
जित्स्यात् ॥ गुरौ तोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये शनावीशसार्पौ
मुहूर्त्ता निषिद्धाः ॥ ५२ ॥

रविवारको अर्यमा, चंद्रवारमें ब्रह्मा राक्षस, मंगलको अग्नि पितर, बुधको अभिजित्, बृहस्पतिको जल राक्षस, शुक्रको ब्राह्म, पितर, शनिको शिव, सर्प मुहूर्त्त निषिद्ध होते हैं ॥ ५२ ॥

(प्रहर्षिणी) निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्र्यपित्र्यब्राह्मांत्योत्तरपव-
नैः शुभो विवाहः ॥ रिक्तामारहिततिथौ शुभेह्निवैश्वप्रांत्या-
ङ्घ्रिः श्रुतितिथिभागतोभिजित्स्यात् ॥ ५३ ॥

विवाहमुहूर्त्त वेधरहित–मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीन उत्तरा, स्वाती नक्षत्र तथा शुभग्रहोंके वारमें विवाह शुभ होता है, रिक्ता ४ । ९ १४ अमा ३० तिथि न लेनी, तथा विवाहसे ४ दिनके भीतर

श्राद्धदिन वा अमा हो तो वह दिन न करना, यहभी प्रमाण है, उत्तराषाढाका चतुर्थचरण एवं श्रवणके आदि ४ घटी अभिजित् नक्षत्र होता है ॥ ५३ ॥

(शार्दू०) वेधोन्योन्यमसौविरञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-
र्विश्वेन्द्वोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः ॥
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिभादित्योस्तथोफान्त्ययोः
खेटेतत्रगतेतुरीयचरणाद्योर्वातृतीयद्वयोः ॥ ५४ ॥

पंचशलाकावेध–रोहिणी अभिजित्का । एवं भरणी अनुराधा । उत्तराषाढा मृगशिर । श्रवण मघा । हस्त उत्तराभाद्रपदा । स्वाती शतभिषा । मूल पुनर्वसु । उत्तराफाल्गुनी रेवतीका परस्पर वेध ग्रहोंका होता है । शेष नक्षत्रोंका वेध अगले श्लोकोक्त सप्तशलाकावाला जानना. चरणवेध–प्रथम पादका चतुर्थपर द्वितीयका तृतीयपर तृतीयका द्वितीयपर चतुर्थका प्रथमपर होता है ॥५४॥

(शार्दू०) शाक्रेज्येशतभानिलेजलशिवेपौष्णार्यमर्क्षेवसु-
द्वीशेवैश्वसुधांशुभेहयभगेसार्पानुराधे मिथः ॥
हस्तोपान्तिमभेविधातृविधिभेमूलादितित्वाष्ट्रभे
जाङ्ग्रीयाम्यमघेकृशानुहरिभेविद्धेकुभृद्रेखिके ॥ ५५ ॥

सप्तशलाकावेधचक्रम्.

कृ रो मृ आ पु पु आ

भ								म
अ								पू
रे								उ
उ								ह
पू								चि
श								स्वा
ध								वि

श्र अभि उ पू मू ज्ये अ

पंचशलाका.

सप्तशलाका–ज्ये०पुष्य । श०कृ० । पूर्वाषा०आर्द्रा । रेवती उत्तराफा० । धनिष्ठा विशाखा । उत्तराषाढा मृगशिर । अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी । आश्लेषा अनुराधा ।

हस्त उत्तराभाद्रपदा। रोहिणी अभिजित्। मूल पुनर्वसु। चित्रा पूर्वाभाद्रपदा। भरणी मघा। कृत्तिका श्रवणका परस्पर सप्तशलाका वेध ग्रहोंका होता है. वेधका फल यह है कि "यस्याः शशी सप्तशलाकभिन्नःपापैरपापैरथवा विवाहे। विवाहवस्त्रेण च सा वृताङ्गी श्मशानभूमिं रुदती प्रयाति ॥ १ ॥" जिस स्त्रीके विवाहमें चंद्रमा पापग्रहोंके सप्तशलाकासे विद्ध हो तो वह विवाहके वस्त्रोंको लेकर रोती हुई श्मशानभूमिमें जावे अर्थात् शीघ्रही विधवा होकर सकाम न होवे ॥ ५५ ॥

(अनु०) ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ॥
मुक्त्वाचंद्रेणमुक्तानिशुभार्हाणिप्रचक्षते ॥ ५६ ॥

जो नक्षत्र पापविद्ध होकर छूटें तद्वत् क्रूरगंतव्य हों क्रूराक्रांत हों तो जब वह दोष उनका छूट जाय तबभी चंद्रमाके भुक्त कियेमें वह नक्षत्र (शुद्ध) शुभकार्ययोग्य होते हैं. ग्रंथांतरोंमें द्विराशिभोग नक्षत्रके लिये है कि, जिस राशिके भागमें पापग्रह हो वही भाग वर्जित है, दूसरा भाग शुभकार्यमें ग्राह्य है ॥ ५६ ॥

(उ० जा०) ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठेभंसप्तगोजातिशरैर्मितं हि ॥
संलत्तयन्तेर्कशनीज्यभौमाःसूर्याष्टतर्काग्निमितंपुरस्तात् ॥ ५७ ॥

लत्ता–बुध अपने अधिष्ठित नक्षत्रसे पीछे सातवें नक्षत्रपर लत्तादोष करता है, तथा राहु स्वपृष्ठ नववेंपर पूर्णचंद्रमा, बाईसवें नक्षत्रपर यह कृष्णपक्षके ६।७।८ के बीच होता है, तथा शुक्र स्वपृष्ठपंचमनक्षत्रपर लत्तादोष करता है तथा सूर्य अपने आक्रांतनक्षत्रसे आगे १२ वें शनि ८ वें बृहस्पति छठे भौम तीसरेपर उक्त दोष करता है. वक्रीग्रहकी लत्ताभी उक्त क्रमसे विपरीत जाननी ॥ ५७ ॥

(पथ्या आर्या) हर्षणवैधृतिसाध्यव्यातिपातकगण्डशूलयोगानाम् ॥
अन्तेयन्नक्षत्रंपातेननिपातितंतत्स्यात् ॥ ५८ ॥

पात–हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यातिपात, गंड, शूल योगोंका जिस नक्षत्रमें (अंत) समाप्ति हो उसपर पातदोष होता है, शुभकार्यमें वर्ज्य है, इसीका नाम चंडीशचंडायुधभी है ॥ ५८ ॥

(शालिनी) पश्चास्याजौगोमृगौतौलिकुम्भौकन्यामीनौकर्क्यलीचापयुग्मे ॥ तत्रान्योन्यंचन्द्रभान्वोर्निरुक्तंक्रान्तेःसाम्यंनो शुभंमंगलेतत् ॥ ५९ ॥

क्रांतिसाम्य-मेष सिंह । वृष मकर । तुला कुम्भ । कन्या मीन । कर्क वृश्चिक । धन मिथुन राशियोंमें सूर्य चंद्रमा परस्पर एक रेखामें हों तो क्रांतिसाम्यदोष होता है, शुभकृत्यमें वर्जित है इसे महापातभी कहते हैं ॥ ५९ ॥

क्रांति	३	१	२	साम्य
११				७
१२				६
८				४
	९	५	१०	

(इं० व०) व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वशूलान्त्यवज्रेपरिघातिगण्डे ॥
योगेविरुद्धेत्वभिजित्समेतोदोषःशशीचेद्विषमर्क्षगोर्कात् ॥६०

एकार्गल-व्याघात, गंड, व्यतिपात आदि विरुद्धयोग तथा शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड योग जिस दिन हों उस दिनका नक्षत्र सूर्यके नक्षत्रसे विषम हो तो एकार्गलदोष होता है. सूर्य नक्षत्रसे चंद्रर्क्ष सम होनेमें उक्त योगोंके हुयेमेंभी नहीं होता इसीको खार्जूरभी कहते हैं ॥ ६० ॥

(उ० व०) शराष्टदिक्छक्रनगातिधृत्यास्तिथिधृतिश्चप्रकृतेश्चपञ्च ॥ उपग्रहाःसूर्यभतोऽब्जतारा शुभानदेशेकुरुबाह्लिकानाम् ॥ ६१ ॥

उपग्रह-सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाका नक्षत्र ५ । ८ । १० । १४।७।१९।१५।१८।२१।२२।२३।२४।२५ वा हो तो उपग्रह दोष है, बाह्लीक तथा कुरुदेशमें दोष करता है. कोई यहांभी परिहार कहते हैं कि, नक्षत्रके जिस चरणपर सूर्य है. उक्तसंख्याके चंद्रर्क्षके उस चरणपर दोष होताहै अन्यपर नहीं, ये परिहार उपरोक्त (खार्जूर) एकार्गलके भी हैं ॥ ६१ ॥

खार्जूरएकार्गलचक्रम्

	१	
२७		२
२६		३
२५		४
२४		५
२३		६
२२		७
२१		८
२०		९
१९		१०
१८		११
१७		१२
१६		१३
१५		१४
	०	

(अनु०) पातोपग्रहलत्तासुनेष्टोङ्घ्रिःखेटपत्समः ॥
वारस्त्रिघ्नोष्टभिस्तष्टः सैकःस्यादर्द्धयामकः ॥ ६२ ॥

(पात) चंडीश चंडायुध, उपग्रह लत्तामेंभी चरणवेधदूषित हैं; जैसे पात एवं उपग्रह जिस चरणपर हो उतनवां चरण दूषितनक्षत्रका वर्ज्य है तथा जिस ग्रहकी लत्ता है वह जिस चरणपर अपने स्थितनक्षत्रके हैं उतने संख्याक दिन नक्षत्रके चरणपर दोष होता है औरपर नहीं. अर्द्ध याम है कि, वर्त्तमान

वार ३ से गुणाकर ८ से (तष्ट) शेष किया जो शेष रहे उसमें (१) जोडके अर्द्धयाम दोष होता है, दिनमें यह शुभकार्यमें वर्ज्य है रात्रिको नहीं ॥ ६२ ॥

(अनु०) शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्याश्विनः कुलिका रवेः ॥
रात्रौनिरेकास्तिथ्यंशाः शनौचान्त्योपिनिंदिताः ॥ ६३ ॥

कुलिक-दिनमें रविवारको १४ वां मुहूर्त्त चंद्रको १२ मंगलको १० बुधको ८ बृहस्पति ६ शुक्र ४ शनिको २ मुहूर्त्त कुलिक होता है, तथा रात्रिमें उक्तोंमें १ घटायके जैसे सू० १३ चं० ११ मं० ९ बु० ७ बृ० ५ शु० ३ श० १ वें मुहूर्त्त कुलिक होते हैं, ये मुहूर्त्त विवाहमें वैधव्यकारक होनेसे अतिनिन्दित हैं इसी हेतु यहां दुबारे कहे हैं. प्रथम शुभाशुभप्रकरणमेंभी कह आये थे वहां साधारण दोषगणना है अन्यकार्योंमें फल इनका दोषद नहीं ॥ ६३ ॥

मुहूर्त.

दिवा	आ	अ.	अ.	म.	ध.	पू.षा.	उ. फा.	श्र.	रो.	ज्ये	वि.	मू.	श.	उ. फा.	पू. फा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
रात्रि	आ	पू. फा.	उ फा.	रे.	अभि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	पु.	पु.	श्र.	ह.	चि.	स्वा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

वादुर्मुहूर्त.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उ. फा.	मू.	म.	अभि.	मू.	रो.	अ.
०	रो.	कृ.	०	मृ.	म.	आ.

(इं० व०) चापान्त्यगे गोघटगेपतङ्गेकर्काजगेस्त्रीमिथुनेस्थिते च ॥
सिंहालिगेनक्रधटेसमाः स्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः ॥ ६४ ॥

दग्धातिथि-धनमीनके सूर्यमें द्वितीया २ । ११ केमें ४ कर्क मेषमें ६ मिथुनकन्यामें ८ सिंह वृश्चिकमें १० मकर तुलाकेमें १२ दग्ध होती हैं, ये मासदग्ध तिथि मध्यदेशहीमें वर्जित हैं ॥ ६४ ॥

(भ्रमरविल०) लग्नाच्चंद्रान्मदनभवनगेखेटेनस्यादिहपरिणयनम् ॥
किंवाबाणाशुगमितलवगेयामित्रंस्यादशुभकरमिदम् ॥ ६५ ॥

लग्न तथा चंद्रमासे सप्तम ग्रह होनेमें यामित्र दोष होता है. विवाहादिकोंमें अशुभ फल करता है, किंवा ५५ अंशपर लग्न वा चंद्रमा स्थित नवांशपर हो

तो विशेष दोष है. जैसे-तुलाको ५ अंशपर लग्न वा चंद्रमाहै तो मेषके ५ अंश ५५ हुये इसमें जो ग्रह हो उसकी यामित्री हुई, यह सूक्ष्मयामित्री है इसमें शुभग्रहोंकी यामित्रीका फल ग्रंथांतरोंमें शुभभी है ॥ ६५ ॥

(इं० व०) उपग्रहर्क्षंकुरुबाह्लिकेषुकलिंगवङ्गेषुचपातितंभम् ॥
सौराष्ट्रशाल्वेषुचलत्तितंभंत्यजेत्तुविद्धंकिलसर्वदेशे॥ ६६ ॥

कुरुदेश, बाह्लीकदेश (पश्चिममें है) में उपग्रहनक्षत्र त्याज्य है अन्यदेशोंमें नहीं. कलिंग, वंग (पूर्वमें है), मागधादियोंमें पातदोष (चंडीश चंडायुध) त्याज्य है. सौराष्ट्र, शाल्व (पश्चिममें) लत्ता त्याज्य है और वेध सर्वत्र त्याज्य है कहीं युतिदोष गौडमें यामित्रीयामुन प्रदेशमें कहा है ॥ ६६ ॥

(इ० व) एकार्गलोपग्रहपातलत्तायामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः ॥
नश्यन्तिचन्द्रार्कबलोपपन्नेलग्नेयथार्काभ्युदयेतुदोषाः ॥ ६७॥

एकार्गल (खार्जूर) तथा उपग्रह, लत्ता, पात, यामित्री, कर्तरी, उदयास्त (वक्ष्यमाण) इतने दोष विवाहलग्नमें सूर्य चंद्रमाके बलवान् होनेमें नाश हो जाते हैं. जैसे-सूर्यके उदय होनेमें रात्रिका अंधकार नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

(उ० जा०) शशाङ्कसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषेखंभूयुगांगानिदशेशतिथ्यः॥
नागेन्दवोंकेन्दुमितानखाश्चेद्भवन्तिचैतेदशयोगसंज्ञाः ॥६८॥

सूर्य चंद्रमाके नक्षत्रसंख्या जोडके २७ से भाग लेना शेष० । १ ।४। ६। १० । ११ । १५ । १८ । १९ । २० मेंसे कोई रहे तो दशयोगसंज्ञा होतीहै ॥ ६८ ॥

(शार्दू०) वाताभ्राग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षति-
र्योगाङ्केदलितेसमेमनुयुतेथौजे तु सैकेर्धिते ॥
भंदास्रादथसंमितास्तुमनुभी रेखाःक्रमात्संलिखे-
द्वेधोस्मिन्ग्रहचन्द्रयोर्नशुभदः स्यादेकरेखास्थयोः ॥६९॥

दशयोगका फल है कि० शेषमें वायुदोष १ में मेघभय ४ थेमें अग्निभय एवं ६ राजभी० १० में चौरभय ११ मृत्यु १५ रोग १८ वज्रभी० १९ कलह२० धननाश उक्त अंकोंमेंसे समको आधा करके १४ जोडना जितने हों अश्विन्यादि उतनवां नक्षत्र होता है. जैसे-समांक १० आधा ५ जुडे १४ तो १९ वां मूल हुआ, यदि विषम अंक हो तो १ जोडके आधा करना जैसे विषमांक १५ एक जोडके १६ आधा ८ तिष्यनक्षत्र हुआ चौदह आडी रेखाका एक

चक्र करना उक्त क्रमसे जो नक्षत्र आया उसे आदि चक्ररेखाओंके दोनहूं ओर अभिजित् सहित सर्व नक्षत्र लिखने. जिन जिन नक्षत्रोंमें जो ग्रहहैं उन्हींमें लिखने चंद्रमाके साथ एकरेखामें कोई ग्रह हो तो दृष्टिरूप वेध है अशुभ होताहै। बृहस्पति, लग्नेश, शुक्र बलवान् एवं केंद्रगत होनेमें दशदोषका दोष नहीं होता यह ग्रंथांतरमत है ॥ ६९ ॥

(शालि०)लग्नेनाढ्यायाततिथ्योङ्कतष्टाःशेषेनागद्व्यब्धितर्केंदुसंख्ये॥
रोगोवह्नीराजचौरौचमृत्युर्बाणश्चायंदाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥ ७० ॥

लग्नमें शुक्लपक्षप्रतिपदातिथि ८ जोडके ९ से तष्ट करके शेष ८ रहे तो रोगबाण २ शेषमें अग्नि ४ में राजा ६ में चोर १ में मृत्युबाण होताहै. यह दाक्षिणात्य, महाराष्ट्रदेशोंमें प्रसिद्ध है अन्यत्र नहीं ॥ ७० ॥

(मालिनी)रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिरथत-
ष्टांकैर्यदापंचशेषाः ॥ रुगनलनृपचौरामृत्युसंज्ञश्चबाणोन-
वहृतशरशेषेशेषकैक्येसशल्यः ॥ ७१ ॥

निरयनांश सूर्यसंक्रांतिसे गत अंशोंमें पृथक् पृथक् ६। ३। १। ८। ४ जोडने ९ से तष्ट करके जिस अंकमें ५ शेष रहे वह बाण इस प्रकार जानना कि ६ में ५ शेष रहे तो रोगबाण एवं ३ में अग्नि १ राज ८ में चोर ४ में मृत्युबाण होताहै. यह काष्ठशल्यबाण है, पूर्वोक्त प्रकारसे ६ आदि अंकोंमें सूर्यगतांश जोडके ९ से शेष करके जो जो अंक शेष हैं उन सबको जोडके ९ से गुणाकर ५ से शेष करना यदि ५ शेष रहे तो (सशल्य) लोह शल्यसहित जानना. अन्यांक शेषमें शल्यरहित होताहै सशल्य अतिनिंद्य है ॥ ७१ ॥

(शार्दू०) रात्रौचोररुजौदिवानरपतिर्वह्निःसदासंध्ययोर्मृत्युश्चाथ
शनौनृपोविदिमृतिर्भौमेग्निचौरौरवौ ॥ रोगोथव्रतगेहगोपनृपसेवा-
यानपाणिग्रहेवर्ज्याश्चक्रमतोबुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः॥७२॥

चोर रोगबाण रात्रिमें. नृपबाण दिनमें. वह्निबाण सदा अर्थात दिनरात्रिदोनोंमें मृत्युबाण संध्यासमयमें वर्ज्य है. तथा शनिवारमें राज, बुधमें मृत्यु, मंगलमें अग्नि; चौर. सूर्यमें रोगबाण वर्जित है और व्रतबंधमें रोगबाण, गृहगोपनादि घरके कृत्यमें अग्निबाण, राजसेवामें नृपबाण, यात्रामें चौर, विवाहमें मृत्युबाण त्याज्य हैं ॥ ७२ ॥

बाणचक्रम्.

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
रो. बा.	७ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२ १	३ १२ २१ ३०	३ ११ २० २९	९ १८ २७	८ १७ २६	६ १५ २४	७ १६ २५	६ १५ २४	रोगबाणमें ये तिथि निषिद्ध.
अ. बा.	२ २० २९	११ १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१	२ ११ २९	१० १६ २८	९ १८ २७	अ. बा. में. निषिद्ध ति.
रा. बा.	४ २२ १	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ ३०	२ १० २९	रा. बा. निषिद्ध. ति.
चौ. बा.	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २३	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	चौ. बा. में. निषिद्ध. ति.
मृ. बा.	१ १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१ ३०	२ ११ २० २९	१० २९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	मृ. बा. में. निषिद्ध. ति.

(उप०) त्र्याशंत्रिकोणंचतुरस्रमस्तंपश्यन्तिखेटाश्चरणाभिवृद्ध्या ॥
मन्दोगुरुर्भूमिसुतःपरेचक्रमेणसंपूर्णदृशोभवन्ति ॥ ७३ ॥

ग्रह अपने स्थित राशिसे ३ । १० भावमें १ चरण दृष्टि ९ । ५ में २ चरण ४ । ८ में ३ चरण ७ में पूरे ४ चरण दृष्टिसे देखते हैं, तथा शनि ३ । १० बृहस्पति ९ । ५ मङ्गल ४ । ८ अन्यग्रह ७ सप्तमस्थानमें पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं ॥७३॥

(शिखरिणी) यदालग्नांशेशोलवमथतनुंपश्यतियुतोभवेद्वायं वोढुः
शुभफलमनल्पंरचयति ॥ लवद्यूनस्वामीलवमदनभंलग्नम-
दनं प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम् ॥ ७४ ॥

(भु०प्र०) लवेशोलवंलग्नपोलग्नगेहंप्रपश्येन्मिथोवाशुभंस्याद्वरस्य ॥
लवद्यूनपोंशंद्युनंलग्नपोस्तंमिथोवीक्षतेस्याच्छुभंकन्यकायाः॥ ७५ ॥

(मालिनी) लवपतिशुभमित्रंवीक्ष्यतेंशंतनुंवापरिणयनकरस्य
स्याच्छुभंशास्त्रदृष्टम् ॥ मदनलवपमित्रंसौम्यमंशंद्युनं
वातनुमदनगृहंचेद्वीक्षतेशर्म वध्वाः ॥ ७६ ॥

उदयास्तशुद्धि-यदि लग्नेश, अंशेश, लग्न तथा लग्नांशको देखे यद्वा उनमें युक्त हो तो वरको बहुतही शुभफल होते हैं. जैसे-मेषलग्नमें मिथुनांशेश बुध तुलाका मिथुनको देखता है इत्यादि लग्नशुद्धिका विचार है, बलवान् नवांशसे सप्तम नवांशका स्वामी अंशसे सप्तमभावको किंवा सप्तम भाव नवांशको देखे वा युक्त हो तथा सप्तमेश समप्तभावांशेश सप्तमभाव तथा तन्नवांशको देखे वा युक्त हो तो कन्याको अतिशुभफल देते हैं. यदि लग्नेश लग्नांशेश लग्न तथा अंशको न देखें तो वरको अशुभ (मृत्यु) यदि सप्तम भावेश सप्तम भाव नवांशेश सप्तम भाव वा तन्नवांशको न देखे वा युक्त न हो तो कन्याको अनिष्ट होवे ॥ ७४ ॥ लग्नेश लग्नको अंशेश अंशको देखें अथवा परस्पर लग्नेश अंशेश लग्नको देखे तो वरको शुभ होवे, तथा सप्तमेश सप्तमभावको सप्तमभावांशेश अंशको अथवा अंशेश भावको भावेश अंशको देखें तो कन्याको शुभ होवे अथवा सप्तमेश लग्नसप्तमभावको तथा सप्तमेशांशेश लग्न सप्तमको देखें तोभी कन्याको शुभ होवे. एवं लग्नेश वा लग्ननवांशेश सप्तम तथा लग्नको देखें तो दोनोंहीको शुभ होवे ॥ ७५॥ लग्न नवांशेशको कोई शुभ ग्रह मित्र होकर अपने अंश वा लग्नको देखे तो विवाहमें पुत्रपौत्रादि शुभफल करे, सप्तम भावांशेशकाभी मित्र शुभग्रह सप्तम भावको तथा लग्न नवांशको देखे अथवा लग्नसे सप्तमभावको देखे तो वधूको शास्त्रोक्त शुभ (पुत्रपौत्रादि) होवे, पापग्रहोंके उक्त प्रकार योग तथा दृष्टिसे सर्वत्र अशुभ जानना ॥ ७६ ॥

(मंजुभाषिणी) विषुवायनेषुपरपूर्वमध्यमान्दिवसांस्त्यजेदि-
तरसंक्रमेषु च ॥ घटिकास्तु षोडशशुभक्रिया-
विधौ परतोपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः ॥ ७७ ॥

विषुवति १ । ७ संक्रांति अयन ४ । १० संक्रांतिके पूर्वदिन तथा दूसरा दिन और संक्रांतिदिन तीनहूं दिन विवाहव्रतबन्धादि शुभकार्यमें वर्जित करने, अन्य ८ संक्रान्तियोंके संक्रान्तिकालसे १६ घटी पूर्व १६ घटी पश्चातकी समस्त ३२ घटी वर्जित हैं ॥ ७७ ॥

(अनु०) देवब्ध्यङ्कर्तवोष्टाष्टौ नाड्योङ्काःखनृपाःक्रमात् ॥
वर्ज्याःसंक्रमणेर्कादेः प्रायोर्कस्यातिनिन्दिताः ॥ ७८ ॥

सूर्यके संक्रमसे पूर्वापरकी ३३ घटी एवं चन्द्रमाकी २ मंगलकी ९ बुधकी ६ बृहस्पतिकी ८८ शुक्रकी ९ शनिकी १६० घटी संक्रमणकी शुभकार्यमें वर्जित हैं, विशेषविचार संक्रान्तिप्रकरणमें कह आये ॥ ७८ ॥

(उ० जा०)घस्रेतुलालीबधिरौमृगाश्वौ रात्रौचसिंहाजवृषादिवान्धाः॥
कन्यानृयुक्कर्कटकानिशान्धादिने घटोन्त्यो निशिपंगुसंज्ञः ॥ ७९ ॥

दिनमें ७ । ८ लग्न बधिर हैं १० । ९ रात्रिमें बधिर हैं ५ । १ । २ दिनमें, ६ । ३ । ४ रात्रिमें अन्धे ह ११ । दिनमें १२ रात्रिमें पंगु (खोडे) हैं ॥ ७९ ॥

(वसंतमालिका)

बधिराधन्वितुलालयोपराह्णेमिथुनंकर्कटकोङ्गनानिशान्धाः ॥
दिवसांधाहरिगोक्रियास्तुकुब्जामृगकुंभान्तिमभानिसंध्ययोर्हि ॥८०॥

९ । ७ । ८ लग्न (अपराह्ण) दिनके पिछले त्रिभागमें बधिर हैं ३ । ४ । ६ रात्रिमें अंधे हैं ५ । १ । १ दिनमें अंधे हैं १० । ११ । १२ संध्यामें कुब्ज हैं ॥ ८० ॥

(प्रहर्षिणी) दारिद्र्यंबधिरतनौदिवान्धलग्नेवैधव्यंशिशुमर-
णंनिशान्धलग्ने ॥ पंग्वंगेनिखिलधनानिनाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्नदोषः ॥ ८१ ॥

बधिरलग्नोंमें विवाहादि करनेमें दरिद्रता, दिवांधलग्नमें वैधव्य, रात्र्यंधमें संततिमरण, पंगुलग्नमें समस्तधननाश होवे. यदि इनपर लग्नेश तथा बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो इनका उक्तदोष नहींहै. औरभी परिहार है कि "पंग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ॥ गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥" अर्थात उक्तदोष तथा मासशून्यराशि गौडदेश मालवादेशमें त्याज्यहैं अन्यत्र नहीं ॥ ८१ ॥

(चित्रपदा) कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवेझषगेवा ॥
यर्हिभवेदुपयामस्तर्हिसतीखलुकन्या ॥ ८२ ॥

विवाहलग्नमें यदि ९ । ७ । ८ । ६ । ३ । १२ राशियोंके नवांश हों तो विवाहिता कन्या निश्चयसे पतिव्रता रहे ॥ ८२ ॥

(श्रीछन्द) अन्त्यनवांशेनचपरिणेयाकाचनवर्गोत्तममिहहित्वा॥
नोचरलग्नेचरलवयोगंतौलिमृगस्थेशशभृतिकुर्यात् ॥ ८३ ॥

लग्नमें (अंत्य) पिछला नवांशक जैसे मेषलग्नमें धननवांश वृषमें मकर १० न लेना परंतु वर्गोत्तम हो तो लेना. जो लग्न वही नवांशकभी हो उसे वर्गोत्तम कहते हैं. जैसे-३ । ९ । १२ । १० में वर्गोत्तम अंत्यनवांशकही होताहै और तुलामकरका चंद्रमा हो तो चरलग्नमें चर अंशक न लेना, चंद्रमा अन्यराशिमें हो तो चरमें चरांशभी लेना ॥ ८३ ॥

(उप०)व्ययेशनिःखेऽवनिजस्तृतीयेभृगुस्तनौचंद्रखलानशस्ताः॥
लग्नेट्कविग्लौश्चारिपौमृतौग्लौर्लग्नेट्शुभाराश्चमदेचसर्वे॥८४॥

विवाहलग्नसे बारहवां शनि, दशम मंगल, तीसरा शुक्र, लग्नमें चंद्रमा पापग्रह और लग्नेश शुक्र चंद्रमा ६ । ८ स्थानमें तथा लग्नेश शुक्र, बुध, बृहस्पति, चंद्रमा, मंगल, अष्टमस्थानमें शुभ नहीं होते. इनमें १२ शनिका फल कन्या मद्यपा, दशम मंगलका (शाकिनी) मांस खानेवाली, तीसरे शुक्रका देवररता फलहै, औरको वैधव्य तथा मरणरूप फलहै, सप्तम शुभग्रहोंके फल यामित्रीप्रसंगमें कह आये हैं ॥ ८४ ॥

(व० ति०) त्र्यायाष्टषट्सुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारिगः
क्षितिसुतोद्विगुणायगोब्जः ॥ सप्तव्ययाष्टरहितौज्ञ-
गुरूसितोष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान्परिहृत्यशस्तः ॥ ८५ ॥

सूर्य, केतु, राहु, शनि विवाहलग्नसे ३ । ८ । ६ भावोंमें शुभ होते हैं. इनहींमें विंशोपका बल पाते हैं, तथा मंगल ३ । ११ । ६ में, चंद्रमा २ । ३ ११ में, बुध बृहस्पति ७ । १२ । ८ स्थानरहित सभीमें, शुक्र ८ । ३ । ७ । ६ । १२ स्थानोंको छोड़के अन्योंमें पाता है ॥ ८५ ॥

(शार्दू०) पापौकर्त्तरिकारकौरिपुगृहेनीचास्तगौकर्त्तरी-
दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोपि न ॥
भौमेस्तेरिपुनीचगेनहिभवेद्भौमोष्टमोदोषकृन्नीचे
नीचनवांशकेशशिनिरिःफाष्टारिदोषोपि न ॥ ८६ ॥

कर्तरीकारक पापग्रह यदि नीच तथा अस्तंगत हों तथा उनके बीच कोई शुभग्रह हो तो लग्न वा सप्तममें कर्तरीका दोष नहीं. तथा शुक्र छठा नीच वा शत्रुराशिका हो तो छठे शुक्रका दोष नहीं. मंगल अष्टम यदि नीचराशि वा अस्तंगत हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं और चंद्रमा नीचराशि वा नीचनवांशकमें ६ । ८ । १२ स्थानोंमें हो तो इसका भी दोष नहीं ॥ ८६ ॥

(व० ति०) अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्धकाणब-
धिरङ्गमुखाश्च दोषाः ॥ नश्यंति विद्गुरुसितेष्विह
केन्द्रकोणे तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषाः ॥ ८७ ॥

अब्ददोष १ अयनदोष २ ऋतुदोष ३ तिथिदोष ४ मासदोष ५ नक्षत्रदोष ६ पक्षदोष ७ दग्धतिथि अंध काण बधिर पंगुआदि लग्नदोष अकालवृष्ट्यादि ८ इतने दोष लग्नसे केंद्र १ । ४ । ७ । १० कोण ९ । ५ में बुध बृहस्पति शुक्रके बलवान् होकर स्थित होनेमें अनिष्ट फल नहीं करते, तैसाही पापयुत चंद्रमा वा पापयुत नवांशदोषभी नष्ट होजाताहै ॥ ८७ ॥

(शालिनी) केन्द्रेकोणेजीवआयेरवौवालग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमेवा ॥
सर्वेदोषानाशमायान्तिचन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥ ८८ ॥

केंद्र १ । ४ । ७ । १० कोण ५ । ९ में बृहस्पति उपलक्षणसे बुध शुक्रभी तथा ११ में रवि, लग्नसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ में अथवा वर्गोत्तमनवांशमें हो तो उक्त समस्तदोष नष्ट होते हैं ऐसेही चंद्रमा ११ वें भावमें हो तो "रवावर्य-मेत्यादि" दुर्मुहूर्त और पापग्रह नवांश दोषभी नाश होते हैं ॥ ८८ ॥

(शिखरिणी) त्रिकोणेकेन्द्रेवामदनरहितेदोषशतकं हरेत्सौम्यः
शुक्रोद्विगुणमपिलक्षंसुरगुरुः ॥भवेदायेकेन्द्रेङ्गपउतलवेशो
यदि तदा समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति ॥८९ ॥

बुध विवाहलग्नसे सप्तमरहित केंद्र १ । ४ । १० कोण ९ । ५ में हो तो एकसौ दोषोंको हरता है. तथा शुक्र हो तो दोसौ और बृहस्पति एकलक्ष दोष दूर करता है तथा लग्नेश अथवा लग्न नवांशेश आय ११ केंद्र १ । ४।७।१० में हो तो दोषोंके समूह (पुंज) को फूंकते हैं. जैसे—अग्नि रुईके ढेरको क्षणमात्रमें फूंकतीहै ॥ ८९ ॥

(अनु०) द्वौ द्वौ ज्ञभृग्वोः पञ्चेंदौ रवौ सार्द्धत्रयोगुरौ ॥
रामामन्दागुकेत्वारेसार्द्धैकैकंविशोपकाः ॥ ९० ॥

पहिले जो "त्र्यायाष्टषट्सु" इत्यादि श्लोकमें ग्रहोंके शुभस्थान कहे हैं उन स्थानोंमें बुध २ शुक्र २ चंद्रमा ५ सूर्य ३ । ३० साढेतीन बृहस्पति ३ शनि १ । ३० राहु १ । ३० केतु विंशोपका बल पाते हैं. यह बल जिसका जो स्थान शुभ कहा है वह उसीमें पाता है अन्यमें नहीं. सभी ग्रह (बलवान्) अपने उक्त स्थानोंमें हों तो विंशोपका बल २० पाते हैं उक्त अंकोंका जोड २१ । ३० होता है इसमें रा० के० मेंसे एकका १ । ३० घटता है, यतः एक शुभस्थानमें होगा दूसरा अशुभमें रहेगा ॥ ९० ॥

(उप०) श्वश्रूः सितोर्कः श्वशुरस्तनुस्तनुर्यामित्रपः स्याद्दयि-
तोमनः शशी ॥ एतद्बलं संप्रतिभाव्य तांत्रिकस्तेषां
सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ॥ ९१ ॥

विवाहवाली कन्याकी सास शुक्र । श्वशुर सूर्य । लग्न शरीर । सप्तमेश भर्ता । मन चंद्रमा होता है (तांत्रिक) ज्योतिषीने इनका बल देखके उनका शुभाशुभ विचारके विवाहलग्न निश्चय करना. जैसे-उक्तग्रह नीच, शत्रु, अस्त, त्रिक आदिमें हों तो उनको अशुभ उच्चस्वगृहादि (शुभस्थानों) भावोंमें हों तो उनको शुभ जानना ॥ ९१ ॥

(मत्तमयूर) कृष्णेपक्षेसौरिकुजार्केपिचवारेवर्ज्येनक्षत्रे यदि वा
स्यात्करपीडा ॥ संकीर्णानांतर्हिसुतायुर्धनलाभप्री-
तिप्राप्त्यै सा भवतीह स्थितिरेषा ॥ ९२ ॥

कृष्णपक्षमें शनि मंगल रविवारमें तथा अनुक्त नक्षत्रोंमें यदि विवाह हो तो वही संकीर्णोंको धन, पुत्र, आयु, लाभ देनेवाला होता है, इनको उक्त शुभमुहूर्तादि विपरीत होते हैं (संकीर्ण) वर्णसंकर तथा चांडालोंको कहते हैं ॥ ९२ ॥

(अनु०) गान्धर्वादिविवाहेर्काद्वेदनेत्रगुणेन्दवः ॥
कुयुगाङ्गाग्निभूरामास्त्रिपद्यापशुभाशुभाः ॥ ९३ ॥

गांधर्वादि विवाहमें सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रर्क्षपर्यंत ४ अशुभ २ शुभ ३ अ० १ शु० १ अ० ४ शु० ६ अ० ३ शु० १ अ० ३ शुभ यही चक्रमात्र देखते हैं पाठांतर (त्रिपद्यां) ऐसाभी है अर्थात् त्रिघटी चक्र (पट्टा) साया लिखनेकोभी देखते हैं ॥ ९३ ॥

(पृथ्वी) विधोर्बलमवेक्ष्यवादलनकण्डनंवारकंगृहाङ्गणविभूष-
णान्यथचवेदिकामण्डपान् ॥ विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्तथो-
द्वाहतोनपूर्वमिदमाचरेत्रिनवषण्मिते वासरे ॥ ९४ ॥

विवाहांगी कृत्य-गेहूं, उरद आदिका दलन, चांवल छाटना मंगलकलश स्थापन, घरांगण सम्भारना, भूषण शृंगारादिवस्तु वेदी मंडप रचना, तोरण बंदनवार आदि सकलारंभ चंद्रमाका बल देखके विवाहोक्त नक्षत्रोंमें करना, परंतु कार्यदिनके पूर्व ३ । ९ । ६ दिनमें न करना, जवांकुरार्पण तैललापन (वान) मंगलगणेशार्चनमेंभी यही विचार है ॥ ९४ ॥

(शालि०)हस्तोच्छ्रायावेदहस्तैःसमन्तात्तुल्यावेदीसद्मनोवामभागे ॥
युग्मेघस्रेषष्ठहीनेचपञ्चसप्ताहेस्यान्मण्डपोद्वासनं सत् ॥ ९५ ॥

घरके अग्र बांये ओर आंगनमें कन्याके हाथसे एक हाथ ऊंची तथा चारों ओरसे ४ । ४ हाथ चतुरस्रवेदी स्तंभसोपानादियुत करनी. मंडप उत्तम १६ हाथका होता है. स्थानादि संकटमें १२ । १० । ८ भी मध्यम पक्षमें उक्त है,विवाहोत्तरमंडपका उद्वासन छठे छोडकर समदिन तथा ५।७ वें दिनमें करना ॥९५॥

(इं० व०) सूर्यैंगनासिंहघटेषुशैवेस्तम्भोलिकोदण्डमृगेषुवायौ ॥
मीनाजकुम्भेनिर्ऋतौविवाहेस्थाप्योग्निकोणेवृषयुग्मकर्के ॥ ९६ ॥

मंडपमें प्रथम स्तंभनिवेशन ६ । ५ । ७ के सूर्यमें ईशान कोणमें ८ । ९ । १० केमें वायव्य १२ । १ । ११ केमें नैर्ऋत्य २ । ३ । ४ केमें आग्नेयसे करना, यही नियम गृहारंभमेंभी है ॥ ९६ ॥

(मं० क्रां०) नास्यामृक्षंनतिथिकरणंनैवलग्नस्यचिन्तानोवावारोनचलवविधिर्नोमुहूर्त्तस्यचर्चा ॥नोवा योगोनमृतिभवनंनैव यामित्रदोषोगोधूलिःसामुनिभिरुदितासर्वकार्येषुशस्ता॥९७॥

गोधूलीमें नक्षत्र तिथि करणकी कुछ अपेक्षा नहीं. लग्नका विचारभी नहीं तथा वार अंशक मूहूर्त्तकीभी चर्चा नहीं दुष्टयोग, अष्टमशुद्धि यामित्रदोष कुछ नहीं होते यह मुनियोंने सर्व कार्योंमें शुभ कही है ॥ ९७ ॥

(जल०मा०) पिण्डीभूतेदिनकृतिहेमन्ततौस्यादर्द्धास्तेतपसमये गोधूलिः ॥ संपूर्णास्तेजलधरमालाकालेत्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥ ९८ ॥

उक्त गोधूलीका समय कहते हैं कि (हेमन्त) शीतकाल मार्गशीर्षसे ४ महीने सूर्य जब सायंकालमें नीहारादि रहित किरणशून्य पिण्डाकार हो तथा (तप) उष्णकाल चैत्रसे ४ महीने (अर्द्धास्त) सूर्यबिम्ब आधा अस्त होनेमें (जलधरमाला) वर्षाकाल श्रावणसे ४ महीने सूर्यके संपूर्ण अस्त हुएमें गोधूली होती है, समस्त शुभकृत्यादिमें गुणदाता है ॥ ९८ ॥

(वैश्वदेवी) अस्तंयातेगुरुदिवसेसौरेसार्केलग्नान्मृत्यौ रिपुभवनेलग्नेवेन्दौ ॥ कन्यानाशस्तदनुममृत्युस्थेभौमे वोढुर्लाभे धनसहजे चंद्रे सौख्यम् ॥ ९९ ॥

गोधूलीका और प्रकार है कि, गुरुवारके दिन सूर्यास्त हुयेमें गोधूली होती है, सूर्यास्तके पूर्व आधी घटी अर्द्धयाम होनेसे छोड दिया. शनिवारमें सूर्य्य देखेही रहेमें है क्योंकि सूर्यास्तमें कुलिक हो जायगा तथा सायंकालीन लग्नसे ८ । ६ । १ वा लग्नमें चन्द्रमा हो तो कन्याका नाश होवे. लग्न सप्तम अष्टममें मंगल हो तो वरका नाश होवे ऐसे मुख्य दोष गोधूलीमेंभी वर्जित हैं. पंचांगशुद्धिभी मुख्य विचार्य है और ११ । २ । ३ भावमें चन्द्रमा हो तो सुख देता है. गोधूलीमें हो तो औरभी विशेषता है ॥ ९९ ॥

(इं० व०) मेषादिगेर्कैष्टशरानगाक्षासत्तेषवःसत्तशरागजाक्षाः ॥
गोक्षाःखतर्काःकुरसाःकुतर्काःक्ंगानिषष्टिर्नवपञ्चभुक्तिः ॥ १०० ॥

मेषादिराशियोंमें सूर्यकी गति स्थूलकालीन है कि, मेषके ५८ वृष० ५७ मि० ५७ क० ५७ सिं० ५८ कन्यामें ५९ तु० ६० वृ० ६१ ध० ६१ म० ६१ कुं० ६० मी० ५९ है ॥ १०० ॥

(अनु०) संक्रान्तियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नीखषड्हृता ॥
लब्धेनांशादिनायोज्यंयातर्क्षेस्पष्टभास्करः ॥ १०१ ॥

सूर्यसंक्रांतिके घटीपलाओंसे इष्टदिनादि जितने हों उनसे उक्त स्थूल गति गुनाके ६० से भाग लेना २ अंशादि क्रमसे लेकर सूर्यकी भुक्तराशि राशिके स्थानमें रखना सूर्यका स्पष्ट होता है ॥ १०१ ॥

(अनु०) तनोरिष्टांशकात्पूर्वं नवांशा दशसंगुणाः ॥
रामाप्तालब्धमंशाद्यंतनोर्वर्गादिसाधने ॥ १०२ ॥

अभीष्टलग्नमें जो नवांश निश्चय किया उसके पूर्व जितने नवांश हों उन्हें १० से गुनाकर ३ से भाग लेना लब्धि यथाक्रम ३ अंक लेके जो हो वह लग्न स्पष्ट भुक्त उस समयका होता है इसीसे षड्वर्ग साधन करना ॥ १०२ ॥

(शालि०) अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यभुक्तैर्भागैर्निघ्नात्स्वो-
दयात्खाग्निभक्तात् ॥ भोग्यं भुक्तं चान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्याभक्तंस्वेष्टनाड्योभवेयुः ॥ १०३ ॥

सूर्यसायनस्पष्टके राशिभोग्यांशोंसे स्वदेशीय लग्न खंड पलात्मक गुनना ३० से भाग लेना, लब्धि भोग्य पला होती है। एवं भुक्तांशोंसे गुनाकर भुक्तपला मिलती है इन भुक्तभोग्यपलाओंका योग करना, इसमें सायन लग्न तथा सूर्यके

अंतराल लमोंके पला जोडने ६० से भाग लेकर सूर्योदयमारभ्य इष्टघटी होती है ॥ १०३ ॥

(शालि०) चेल्लग्नार्कौसायनावेकराशौतद्विश्लेषघ्नोदयः
खाग्निभक्तः ॥ स्वेष्टःकालोलग्नमूनंयदार्का-
द्रात्रेःशेषोऽर्कात्सषड्भान्निशायाम् ॥ १०४ ॥

यदि सायन लग्न तथा सूर्य एकही राशिमें हों तो उनके अंतर्गत अंशोंसे स्वदेशीय लग्नखंड गुनना ३० से भाग लेकर उदयात् इष्टकाल होता है. रात्रिके लिये राशिमें ६ जोड़के उक्त प्रकारसे करना ॥ १०४ ॥

(शार्दू०) उत्पातान्सहपातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्चयोगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनंतिथ्याःक्षयर्द्धीतथा ॥
गण्डान्तं च सविष्टिसंक्रमदिनं तन्वंशपास्तं तथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान्पापस्यवर्गांस्तथा ॥ १०५ ॥

उत्पात-सेंदुक्रूर० क्रूराक्रांत० इत्यादि, महापात, दग्धतिथि, दुष्टयोग, चंद्रमा, गुरु, शुक्रका अस्त, तिथिकी क्षयवृद्धि, गंडांत ३ प्रकारका, भद्रा संक्रांतिदिन, लग्नेश अंशेशका अस्त, लग्नेश अंशेष चंद्रमाकी ६। ८ स्थानमें स्थिति और पापग्रहोंके षड्वर्ग इत्यादि पूर्वोक्तदोष विवाहमें वर्ज्य हैं ॥ १०५ ॥

(शार्दू०) सेन्दुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान्
खार्जूरंदशयोगयोगसहितंयामित्रलत्ताव्यधम् ॥
बाणोपग्रहपापकर्तरितथा तिथ्यृक्षयोगोत्थितं
दुष्टंयोगमथार्द्धयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ॥ १०६ ॥
क्रूराक्रांतविमुक्तभंग्रहणभंयत्क्रूरगन्तव्यभं
त्रेधोत्पातहतंचकेतुहतभंसंध्योदितंभंतथा ॥
तद्वच्चग्रहभिन्नयुद्धगतभंसर्वानिमान्संत्यजे-
दुद्वाहेशुभकर्मसु ग्रहकृतान्लग्नस्यदोषानपि ॥ १०७ ॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामवि० मुहूर्तचिंतामणौ विवाहप्रकरणम् ॥६॥

तथा पापयुक्त चंद्रमा पापयुक्त लग्न लग्ननवांश, अस्तोदयशुद्धि, चंडांश, चंडायुध, खार्जूर, दशयोग, जामित्री, लत्तावेध, बाण, उपग्रह पाप कर्तरि तिथि वारी-

द्भव (सूर्येशेत्यादि) नक्षत्रवारोत्थ (मृत्यु) आदि तिथिनक्षत्र वारोत्थ (हस्तार्कपंचमी०) आदि दुष्टयोग अर्द्धयाम कुलिकादि अन्यादिदोष पापाक्रांतनक्षत्र पापमुक्त तथा पापगंतव्यनक्षत्र ग्रहण नक्षत्र तीन प्रकारके उत्पातका नक्षत्र केतूदयनक्षत्र (संध्योदित०) सूर्यसे १४ वां नक्षत्र ग्रहभिन्ननक्षत्र युद्धनक्षत्र इतने समस्तदोष तथा ग्रहकृतलग्नके दोषभी विवाहमें तथा शुभकर्म सभीमें वर्जित हैं ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ महीधरकृतायां भाषायां विवाहप्रकरणम् ॥ ६ ॥

अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ।

(उ० व०) समाद्रिपञ्चांकदिनेविवाहाद्वधूप्रवेशोष्टिदिनान्तराले॥
शुभःपरस्ताद्विषमाब्दमासदिनेक्षवर्षात्परतोयथेष्टम् ॥ १ ॥

विवाह करके विवाहिता कन्याका वरके घरमें प्रवेश करनेको वधूप्रवेश कहते हैं, वह विवाहसे १६ दिनके भीतर सम २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ दिनमें तथा ५ । ९ । ७ दिनोंमें यदि १६ दिनके भीतर न हो तो विषममास विषमवर्षोंमें उक्त दिनमें करना; यदि ५ वर्षभी व्यतीत हो जांय तो समविषम नियम नहीं जब इच्छा हो शुभपंचांगमें करे ॥ १ ॥

(अनु०) ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ॥
वधप्रवेशःसन्नेष्टोरिक्तारार्केबुधेपरैः ॥ २ ॥

ध्रुव, क्षिप्र, मृदु, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती नक्षत्र तथा रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि, मंगल सूर्य बुधवार रहित दिनमें वधूप्रवेश शुभ होता है ॥ २ ॥

(इं० व०) ज्येष्ठेपतिज्येष्ठमथाधिकेपतिंहन्त्यादिमेभर्तृगृहेवधूःशुचौ॥
श्वश्रूंसहस्येश्वशुरंक्षयेतनुंतातंमधौतातगृहे विवाहतः ॥३ ॥

इति मुहूर्त्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ ७ ॥

विवाहसे ऊपर प्रथम ज्येष्ठके महीने भर्ताके घर रहे तो पतिके ज्येष्ठ भाईको मृत्युदोष होवे, अधिमासमें पतिको, आषाढमें सासको पौषमें श्वशुरको क्षयमासमें अपने शरीरको हरती है तथा विवाहसे प्रथम चैत्रमें पिताके घरमें रहे तो पिता मरे ॥ ३ ॥

इति मुहूर्त्तचिंतामणौ महीधरकृतायां भाषायां सप्तमं
वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ ७ ॥

अथ द्विरागमनप्रकरणम् ।

(पञ्चचामर) चरेदथौजहायने घटालिमेषगेरवौरवीज्यशुद्धि-
योगतःशुभग्रहस्य वासरे ॥ नृयुग्ममीनकन्यकातुला-
वृषेविलग्नकेद्विरागमं लघुध्रुवे चरेस्रपेमृदूडुनि ॥ १ ॥

वधूप्रवेश करके यदि वधू पिताके घरमें जाकर पुनः पतिके घरमें आवे उसे द्विरागमनं कहते हैं. वह विषम १ । ३ । ५ वर्षमें ११ । १ । ८ के सूर्यमें विवाहोक्त सूर्यशुद्धि गुरुशुद्धि हुएमें शुभग्रहोंके वारमें ३ । १२ । ६ । ७ । २ लग्नोंमें लघु ध्रुव चर मूल मृदु नक्षत्रोंमें करना ॥ १ ॥

(प्रहर्षिणी) दैत्येज्योह्यभिमुखदक्षिणेयदिस्याद्गच्छेयुर्नहिशिशु-
गर्भिणीनवोढाः ॥ बालश्चेद्व्रजतिविपद्यतेनवोढाचेद्व-
न्ध्याभवतिचगर्भिणीत्वगर्भा ॥ २ ॥

विवाहमें भर्ताके घर जानेमें यात्रोक्त शुक्रसंमुखादि शुद्धि नहीं देखते इस लिये द्विरागमनमें देखना आवश्यक होनेसे शुक्रशुद्धि कहते हैं कि, शुक्र संमुख तथा दक्षिण हो तो बालक, गर्भवती, नवविवाहिता गमन न करे, इस प्रतिशुक्रमें बालक गमन करे तो विपत्ति (मृत्यु) पावे गर्भिणी गर्भरहित होवे, नवोढा वांझ होवे । "अस्तं गते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ ॥ दीपोत्सवदिने चैव कन्या भर्तृगृहं विशेत ॥ १ ॥" किसीका मत है कि गुरु अस्त हो वा शुक्र अस्त हो वा संमुख दक्षिण हो वा सिंहस्थगुरु हो इन दोषोंमेंभी आवश्यकता होनेमें (कन्या) नववधू (दीपोत्सव) दीपमालिकासे २ दिन प्रथम २ पीछेके दिनमें भर्ताके घर जावे दोष नहीं ॥ २ ॥

(प्रहर्षि०) नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवेकरपीडनेविबुधतीर्थयात्रयोः॥
नृपपीडनेनववधूप्रवेशनेप्रतिभार्गवोभवतिदोषकृन्नहि ॥ ३ ॥

परचक्रागम राजविद्रोह वा नृपपीडनादि उपद्रवसे स्वनगरप्रवेशमें किंवा दुर्भिक्षादि दुःखसे अन्यत्र गमनमें तथा विवाहमें एवं नगरकोटयात्रा देवयात्रा तीर्थयात्रामें राजाके निकालनेमें और नवविवाहिता कन्याके भर्ताके घर प्रवेश करनेमें संमुख दक्षिणशुक्रका दोष नहीं होता ॥ ३ ॥

(इं०व०) पित्र्येगृहेचेत्कुचपुष्पसंभवस्तथानदोषःप्रतिशुक्रसंभवः ॥
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणांभरद्वाजमुनेःकुलेतथा॥४॥
इति मुहूर्तचिंतामणौद्विरागमनप्रकरणम् ॥ ८ ॥

यदि कन्याके पिताहीके घरमें (कुच) स्तन उग आवें तथा रजोदर्शन होजावे तो प्रतिशुक्रका दोष नहीं. उपलक्षणसे सूर्य गुरुशुद्धिभी नहीं और भृगु अंगिरा वत्स वसिष्ठ कश्यप अत्रि भरद्वाज ऋषियोंके वंशमें अर्थात उक्त गोत्र-वालोंकोभी प्रतिशुक्रका दोष कभी नहीं है ॥ ४ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां अष्टमप्रकरणम् ॥ ८ ॥

अथाग्न्याधानप्रकरणम् ।

श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान अग्निधारणको अग्न्याधान कहते हैं, यह कोई तो विवाहमें कोई पिता वा भाईसे पृथक् रहनेसे करते हैं ॥

(वसं०) स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगेदिनेशेमिश्रध्रुवान्त्यश-
शिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ॥ रिक्तासुनोशशिकुजेज्यभृ-
गौननीचेनास्तंगतेनविजितेनचशत्रुगेहे ॥ १ ॥

अग्न्याधान मुहूर्त-सूर्यके उत्तरायणमें तथा मिश्र, ध्रुव, रेवती, मृगशिर, ज्येष्ठा, पुष्यनक्षत्रोंमें अग्निहोत्र करना, परंतु रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि न लेनी और चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुक्र नीचराशिमें, अस्तंगत तथा ग्रहयुद्धमें पराजित न हों शत्रुराशियोंमेंभी न हों तो अग्न्याधान शुभ होता है ॥ १ ॥

(वसं०) नोकर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्नेनोऽब्जेतनौरविश-
शीज्यकुजेत्रिकोणे ॥ केन्द्रर्क्षषट्त्रिभवगेषुपरैस्त्रि-
लाभषट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

कर्क मकर मीन कुम्भलग्न वा नवांशक तथा लग्नका चंद्रमा न लेने और सूर्य चंद्र गुरु मंगल त्रिकोण ५ । ९ में तथा १ । ४ । ७ । १० । ६ । ३ । ११ स्थानोंमें अन्य बु० शु० श० रा० के० ३ । ११ । ६ । १० स्थानमें हों तथा लग्नसे अष्टमभाव ग्रहरहित हो जन्मलग्न जन्मराशि अष्टमलग्न न हो तो उक्त कृत्य शुभ होता है २ ॥

(अनु०) चापेजीवेतनुस्थे वा मेषेभौमेम्बरेद्युने ॥
षट्त्र्यायेब्जेरवौवास्याज्जाताग्निर्जयतिध्रुवम् ॥ ३ ॥
इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणावग्न्याधानप्रकरणम् ॥ ९ ॥

उक्त आधानलग्न बृहस्पतिसहित धन हो (१) अथवा मंगल मेषका दशम यद्वा सप्तम हो (२) वा चंद्रमा ३ । ६ । ११ से औरमें हो (३) सूर्य ३ । ६ । ११ में हो (४) इन योगोंमें कोईभी हो तो अग्निहोत्रकर्त्ता निश्चयसे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ करनेवाला होगा ॥ ३ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायामग्न्याधान-प्रकरणं नवमम् ॥ ९ ॥

अथ राजाभिषेकप्रकरणम् ।

(इं० व०) राजाभिषेकः शुभउत्तरायणेगुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः ॥
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥ १ ॥

राजाभिषेकमुहूर्त—उत्तरायणमें बृहस्पति चंद्रमा शुक्रके उदय तथा बलवान् हुयेमें मंगल सूर्य लग्नेश दशमेशके बलवान् हुयेमें तथा जन्मलग्नेशकेभी तत्काल बलवान् हुयेमें राजाभिषेक शुभ होता है. चैत्रका महीना रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि मंगलवार और मलिनमास वर्जित करना रात्रिमेंभी राजाभिषेक न करना ॥ १ ॥

(इं० व०)शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदयेवोपचयेशुभेतनौ ॥
पापैस्त्रिषष्ठायगतैःशुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थैः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा श्रवण क्षिप्र मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें शीर्षोदय ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११ लग्नोंमें अथवा जन्मलग्नसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ लग्नोमें शुभग्रहयुक्तदृष्टोंमें अथवा जन्मराशिसे उपचय लग्नोंमें शुभग्रह, केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिको० ९ । ५ तथा ११ । २ । ३ स्थानोंमें हों, पापग्रह ३ । ६ । ११ में हों ऐसे मुहूर्त्तमें राजाभिषेक शुभ होता है ॥ २ ॥

(इं० व०) पापैस्तनौरुङ्निधनेमृतिः सुतेपुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥
स्यात्खेलसोभ्रष्टपदोद्युनाम्बुगैःसर्वंशुभंकेंद्रगतैःशुभग्रहैः ॥ ३ ॥
लग्नमें पापग्रह हो तो रोग होवे अष्टम हो तो मृत्यु पंचम हो तो पुत्रक्लेश२ । १२ में हो तो धननाश (दारिद्य) दशममें हो तो (अलस) निरुद्यमता ४ । ७ । में हो तो ऐश्वर्यसे भ्रष्ट हो जावे ६ । ८ । १२ में चंद्रमाभी मृत्यु देता है॥३॥

(भुजं०) गुरुर्लग्नकोणे कुजारौ सितः खे सराजा सदामोदते राजलक्ष्म्या ॥ तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबन्ध्वोर्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ राजाभिषेकप्रकरणम् ॥ १० ॥

बृहस्पति लग्नमें वा त्रिकोणमें हो मंगल छठा शुक्र दशम हो तो राजा सर्वदा राज्यलक्ष्मीके भोगसहित प्रसन्न रहे । सूर्य ११ शनि ३ में बृहस्पति १० वा ४ में हों तो राजाकी पृथ्वी (राज्य) स्थिर (सर्वदा हस्तगत रहे ॥ ४ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां राजाभिषेक-प्रकरणम् ॥ १० ॥

अथ यात्राप्रकरणम् ।

यात्रा देशांतरगमनको कहते हैं. यहभी २ प्रकारकी है कि, एक युद्धविजयार्थ दूसरे अन्यकार्यवशात् युद्धमें योग लग्नादिविशेष, अन्यमें पंचांगशुद्धि विशेष लिखते हैं ।

(प्रहर्षि०) यात्रायां प्रविदितजन्मनां नृपाणां दातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनां च ॥ प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतैर्विज्ञाते ह्यशुभशुभे बुधः प्रदद्यात् ॥ १ ॥

इस प्रकरणमें राजाकाही उपलक्षण है. यह राजा सकललोकहितकारी होनेसे तथा सर्व जनश्रेष्ठ होनेसे है, मुहूर्तादि तो राजा आदि सभीको हैं. जिन राजाओंका छाया घटिकादियोंसे जन्मसमय तत्काल लग्नकुंडलिस्थ शुभाशुभग्रहफलज्ञान है उनको यात्रामुहूर्त देना जैसे शुभफल दशा अंतरोंमें यात्रा करनी अरिष्टमारकादि समयमें न करनी इत्यादिजातकोंमें लिखा है. जिनका जन्मसमय ज्ञात नहीं है उनको प्रश्न, उपश्रुति, शकुन आदि लक्षणोंसे शुभाशुभ समय जानकर शुभसमयमें यात्राका दिन देना. (अशुभ) अरिष्टादिमें न देना ॥ १ ॥

(द्रुतविलं०) जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा ॥ त्रिरिपुखायगृहं यदि वोदयो विजय एव भवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

प्रथम प्रश्न है कि यदि यात्राप्रश्नमें जन्मराशि जन्मलग्न प्रश्नमें हो तो राजाकी विजय होगी अथवा उनके स्वामी लग्नमें हों तौभी विजय अथवा जन्मराशि लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ वां प्रश्नलग्न हो तोभी विजयही होगी ॥ २ ॥

(मं० भा०) रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौतयोस्ततएववोपचयसद्मचेद्भवेत् ।
हिबुकेद्युनेथशुभवर्गकस्तनौयदिमस्तकोदयगृहंतदाजयः ॥ ३ ॥

यदि शत्रुके जन्मराशि जन्मलग्न प्रश्नलग्नसे ४ । ७ भावोंमें हों तो राजाकी जय होवे उनके स्वामीभी ऐसेही जानने, तथा शत्रुके जन्मराशि लग्नसे उपचय ३ । ६ । ११ । १० राशिप्रश्नलग्नसे ४ । ७ में हों तौभी विजय होवे, प्रश्नलग्नमें शुभग्रहोंका नवांशादि षड्वर्ग हो वा शीर्षोदय राशि प्रश्नलग्नमें हों तौभी विजय होवे ॥ ३ ॥

(त्रोटक) यदिपृच्छितनौवसुधारुचिराशुभवस्तुयदिश्रुतिदर्शनगम् ॥
यदिपृच्छतिचादरतश्चशुभग्रहदृष्टयुतंचरलग्नमपि ॥ ४ ॥

यदि प्रश्नसमयमें भूमि रमणीय होवे तथा (शुभवस्तु) मांगल्यवस्त्राभरणादि सुनने देखनेमें आवें अथ च पूछनेवाला आदरपूर्वक नम्रतासे पूछे तो राजा (यात्रावाले) का विजय होवे और प्रश्नादि लग्न चर १ । ४ । ७ । १० शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हों तौभी वही फल है ॥ ४ ॥

(मालि०) विधुकुजयुतलग्नेसौरिदृष्टेथचन्द्रेमृतिभमदनसंस्थेलग्नगेभास्करेपि ॥ हिबुकनिधनहोराद्यूनगे वापि पापे सपदि भवति भङ्गः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नमें यदि चंद्रमा मंगल हो शनिकी दृष्टि लग्नपर हो तो प्रश्नकर्त्ताका (भंग) पराजय होता है तथा चंद्रमा ७ । ८ भावमें सूर्य लग्नमें हो तौभी वही फल है अथवा लग्नमें चंद्रमा ७ । ८ में सूर्य हो तौभी भंगही है तथा पापग्रह ४ । ८ । १ । ७ में हों तौभी वही फल होगा ॥ ५ ॥

(भुजं०) त्रिकोणेकुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवायदैकोपिवानोगमोर्काच्छशी वा ॥ बलीयांस्तु मध्येतयोर्योग्रहःस्यात्स्वकीयांदिशंप्रत्युतासौनयेच्च ॥ ६ ॥

जानेवाला कौन दिशा जायगा मंगलसे त्रिकोण ९ । ५ में शनि शुक्र बुध बृहस्पति होवें अथवा इनमेंसे एकभी हो तो जिस दिशा जाना चाहता है वहां न जायगा अथवा सूर्यसे चंद्रमा ५ । ९ में हो तौभी अभीष्ट दिशा न जायगा उक्तप्रतिबंधकर्त्ता ग्रहोंमेंसे जो बलवान् हो वह अपनी दिशाको ले जायगा ॥ ६ ॥

(मदलेखा) प्रश्नेगम्यादिगीशात्खेटःपञ्चमगोयः ॥
बोभूयाद्वलयुक्तःस्वामाशां नयतेसौ ॥ ७ ॥

दूसरा योग प्रश्नमें (गम्य) गमन निश्चित दिशाके स्वामीसे पंचम जो ग्रह है वह बलवान् हो तो गम्यदिशा छुटाकर अपनी दिशाको अवश्य लेजाता है. दिगीश पूर्वादिक्रमसे र० शु० मं० रा० श० चं० बु० बृ० हैं औरभी योग हैं कि शनि मङ्गल परस्पर सम सप्तम हों अथवा शनिराशिका मङ्गल मङ्गलकी राशिका शनि हो अथवा शुक्र मङ्गल त्रिकोणमें हों तो इनमेंसे जो बली हो वह गम्यदिशाको छुटाकर अपनी दिशामें लेजाता है ॥ ७ ॥

(भुजं०) धनुर्मेषसिंहेषुयात्राप्रशस्ताशनिज्ञोशनोराशिगेचैवमध्या ॥
रवौकर्कमीनालिसंस्थेतिदीर्घा जनुःसप्तपञ्चत्रितारश्चनेष्टाः ॥ ८ ॥

सूर्यके ९ । १ । ५ राशियोंमें होनेमें यात्रा शुभ होती है तथा १० । ११ । ३ । ६ । २ । ७ राशियोंकेमें मध्यम ४ । १२ । ८ के सूर्यमें दीर्घयात्रा अशुभ लघुयात्रा मध्यम होती है. सूर्य ८ प्रहरोंमें ८ ही दिशाओंमें रहता है. यात्रासमयमें सूर्य पीठके ओर होना उत्तम होता है, यह प्राच्य संमत है और यात्रामें जन्म पंचम तृतीय सप्तम ताराभी अशुभ होती है ॥ ८ ॥

(भुजं०) नषष्ठीनचद्वादशीनाष्टमीनोसिताद्यातिथिः पूर्णिमामानरिक्ता॥हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेवयात्रा प्रशस्ता॥९॥

शुक्लपक्षप्रतिपदा अमावास्या षष्ठी द्वादशी अष्टमी रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि यात्रामें वर्जित हैं. अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिर, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रोंमें यात्रा शुभ होती है तथा शुभवार शुभ हैं ॥ ९ ॥

(पृथ्वी) न पूर्वदिशि शाक्रभे नविधुसौरिवारे तथा नचाजपदभे गुरौयमदिशीनदैत्येज्ययोः ॥ नपाशिदिशिधातृभेकुजबुधेर्यमर्क्षे तथा न सौम्यककुभिव्रजेत्स्वजयजीवितार्थी बुधः ॥ १० ॥

दिशाशूल-पूर्वदिशा ज्येष्ठा नक्षत्र शनि, सोमवारमें, एवं दक्षिण पूर्वाभाद्रपदा बृहस्पति, पश्चिमदिशा शुक्र, रविवार रोहिणीनक्षत्र, उत्तरदिशा मङ्गल, बुधवार भरणी नक्षत्रमें जानेवाला यदि धन एवं शत्रुसे जय और जीवित (आयु) चाहे तो न जावे इन वार नक्षत्रोंमें इन दिशाको दिशाशूल (बारिक) होता है ॥१०॥

(शा० वि०) पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्नंनृपतेर्यात्रा नमध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णके नलघुभैर्नो पूर्वरात्रेतथा ॥
मित्राख्यैर्नचमध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथानोचरै
रात्र्यन्तेहरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकाले शुभा॥११॥

ध्रुव, मिश्रनक्षत्रोंमें दिनके पूर्वाह्णमें यात्रा न करना एवं तीक्ष्ण नक्षत्रोंमें मध्याह्नमें लघुमें अपराह्णमें मित्रनक्षत्रोंमें पूर्वरात्रिमें उग्र नक्षत्रोंमें मध्यरात्रिमें चरनक्षत्रोंमें पिछली रात्रिमें यात्रा न करना और श्रवण, हस्त, पुष्य, मृगशिर नक्षत्रोंमें सभी काल आठही प्रहरोंमें यात्रा शुभ होती है ॥ ११ ॥

(इं० व०) पूर्वाग्निपित्र्यान्तकतारकाणांभूपप्रकृत्युग्रतुरंगमाःस्युः ॥
स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानांनाड्योनिषिद्धामनुसंमिताश्च ॥ १२ ॥

तीनहुं पूर्वाओंके पूर्वकी १६ घटी एवं कृत्तिकाकी २१ मघाकी ११ भरणीकी ७ स्वाती विशाखा ज्येष्ठा आश्लेषा चारोंकी १४ घटी आदिकी यात्रामें निषिद्ध हैं और घटी शुभ होती हैं ॥ १२ ॥

(इं० व०) पूर्वार्द्धमाग्नेयमघानिलानांत्यजेद्द्विचित्राहियमोत्तरार्द्धम्॥
नृपःसमस्तांगमनेजयार्थीस्वातीमघांचोशनसोमतेन ॥ १३ ॥

एवं कृत्तिका मघा स्वातीका पूर्वार्द्ध चित्रा आश्लेषा भरणीका उत्तरार्द्ध और उशनाका मत है कि,जय चाहनेवालेने स्वाती तथा मघा समस्त त्याग करनी॥१३॥

(भु० प्र०) तमोभुक्ततारा: स्मृताविश्वसंख्याःशुभोजीवपक्षो-
मृतश्चापिभोग्याः ॥ तदाक्रांतभंकर्त्तरीसंज्ञमुक्तं ततो
क्षेन्दुसंख्यंभवेद्ग्रस्तनाम ॥ १४ ॥

राहु वक्रगति है इसके भुक्त १३ नक्षत्र जीवपक्षसंज्ञक शुभकार्यकारक हैं भोग्य १३ नक्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं जिसम राहु बैठा है वह कर्त्तरीसंज्ञक है उस नक्षत्रसे १५ वां नक्षत्र ग्रस्तसंज्ञक पुच्छ है ॥ १४ ॥

(शा० वि०) मार्तंडेमृतपक्षगेहिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रास्याद्विपरीतगेक्षयकरीद्वौजीवपक्षेशुभा ॥

ग्रस्तर्क्षे मृतपक्षतःशुभकरं ग्रस्तात्तथाकर्तरी
यायीन्दुःस्थितिमान्नरविर्जयकरौतौद्वौतयोर्जीवगौ ॥ १५ ॥

सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यात्रा शुभ होती है, (विपरीत) सूर्य जीवपक्ष चंद्रमा मृतपक्षमें हो तो हानिकारक होतीहै, यदि सूर्य चंद्रमा दोनोंही जीवपक्षमें हों तो शुभ, मृत्युपक्षमें हों तो अशुभ जाननी. मृतपक्ष नक्षत्रोंकी अपेक्षा ग्रस्तनक्षत्र तथा ग्रस्तनक्षत्रकी अपेक्षा कर्त्तरीनक्षत्र कुछ शुभ हैं. (जैसे मरे हुये मनुष्यसे मरनेको तैयार हो रहा मनुष्य कुछ अच्छाही है) यहां यही उदाहरण योग्य है, जो राजा अपने किलेमें बैठाहै वह स्थायी जो शत्रुकी ओर जाताहै वह यायी संज्ञकहै, सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीका जय, चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यायीका जय. यदि सूर्य चंद्र दोनोंही जीवपक्षमें हों तो दोनोंहीका जय अर्थात् मिलाप होगा. सूर्य चंद्र मृतपक्षमें हों तो दोनोंहीका पराजय अर्थात् हानि दोनोंही पक्षकी हानि, लाभ किसीका नहीं; तथा सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीव पक्षमें हो तो यायीका जय, चंद्रमा मृतपक्षमें सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीका जय, सूर्य राहुके नक्षत्रमें चंद्रमा उससे १५ वेंमें हो तो यायीका थोडा जय, यदि चंद्रमा राहुनक्षत्रमें सूर्य उससे १५ वेंमें हो तो स्थायिका स्वल्पजय. दोनोंही राहुके नक्षत्रमें हों तो दोनोंहीका पराजय (हानि), यदि १५ वेंमें हो तो दोनों-हीका जय (संधि) होवे, यह विचार सभी यात्राओंमें है ॥ १५ ॥

(वसं०) स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणि-
विषमास्तिथयोऽकुलाःस्युः ॥ सूर्य्येन्दुमन्दगुरवश्च
कुलाकुलज्ञो मूलाम्बुपेशविधिभंदशषट्द्वितिथ्यः ॥ १६ ॥

(शार्दू०) पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनाद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौकुलसंज्ञकाश्चतिथयोर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः ॥
यायीस्यादकुलेजयीचसमरेस्थायीचतद्वत्कुले
संधिःस्यादुभयोःकुलाकुलगणेभूमीशयोर्युध्यतोः ॥ १७ ॥

स्वाती भरणी आश्लेषा धनिष्ठा रेवती हस्त अनुराधा पुनर्वसु तीन उत्तरा रोहिणीनक्षत्र विषमतिथि १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ । १३ । १५ सूर्य चंद्रमा, शनि बृहस्पतिवार अकुलसंज्ञक हैं, तथा मूल शततारा आर्द्रा अभिजित् नक्षत्र १० । ६ । २ तिथि कुलाकुलसंज्ञक हैं तथा तीन पूर्वा अश्विनी पुष्य मघा मृगशिर श्रवण कृत्तिका विशाखा ज्येष्ठा चित्रानक्षत्र शुक्र मंगलवार १२ । १४ । ४ तिथि कुलसंज्ञक हैं अकुलसंज्ञकोंमें युद्धयात्रा हो तो यायीका जय कुलसंज्ञकोंमें स्थायीका जय कुलाकुलसंज्ञकोंमें दोनोंहीका जय (संधि) होवे ॥ १६ ॥ १७ ॥

(स्रग्धरा) स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजाङ्घ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥
वह्न्याद्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षेथरोहि-
ण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणिपथ्यादिराहौ ॥ १८ ॥

अश्विनी पुष्य आश्लेषा धनिष्ठा शततारा विशाखा अनुराधा धर्मस्थानमें लिखने तथा भरणी पूर्वाभाद्रपदा ज्येष्ठा श्रवण पुनर्वसु मघा स्वाती अर्थस्थानमें कृत्तिका आर्द्रा उत्तराभाद्रपदा चित्रा मूल अभिजित पूर्वाफाल्गुनी कामस्थानमें रोहिणी उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढा मृगशिर उत्तराषाढा रेवती हस्त मोक्षमार्गमें लिखने यह पथि राहुचक्र है ॥ १८ ॥

पथिराहुचक्रम्.

ध.	अ.	पु.	आ.	वि.	अनु.	ध.	श.
अ.	भ.	पु.	म.	स्वा.	ज्ये.	श्र.	पू.
का.	कृ.	आ.	पू. फा.	चि.	मू.	अ.	उ. भा.
मो.	रो.	मृ.	उ. फा.	ह.	पू. षा.	उ. षा.	रे.

(स्रग्वि०)धर्मगेभास्करेवित्तमोक्षेशशीवित्तगेधर्ममोक्षस्थितःशस्यते ॥
कामगेधर्ममोक्षार्थगःशोभनोमोक्षगेकेवलं धर्मगःप्रोच्यते ॥ १९ ॥

धर्ममार्गमें सूर्य अथवा मोक्षमार्गमें चंद्रमा हो तो शुभ, यदि सूर्य धनमार्गमें, चंद्रमा धर्म वा मोक्षमार्गमें हो तौभी शुभ. अथवा काममार्गमें सूर्य धर्ममार्गमें चंद्रमा हो तौभी शुभ. अथवा मोक्षमार्गमें सूर्य धर्ममार्गमें चंद्रमा हो तौभी शुभ होता है. (विपरीत) जिस मार्गमें सूर्य कहा उसमें चंद्रमा जिसमें चंद्रमा कहा उसमें सूर्य हो तो अशुभ जानना, धर्ममार्गमें सूर्यचंद्रमाभी हों तो समयुद्ध होवे परंतु थोडा यायी जीते धर्ममें चंद्रमा हो तो यायीकी जय धर्ममें सूर्य काममें चंद्रमा हो तो बांधवोंके साथ विरोध धर्ममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त भूमिलाभ करता है, कर्ममें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी काममें सूर्य धनमें चंद्रमा शुभयुक्त धनलाभ. सूर्यचंद्रमा काममें शत्रुयुक्त दुःख देते हैं. काममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी. मोक्षमें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त महालाभ. मोक्षमें सूर्य धनमें चंद्रमा यात्रा सफल. मोक्षमें सूर्य काममें चंद्रमा यात्रामें दुःख. सूर्य चंद्र मोक्षमार्गमें घोर विघ्नकारक. यह पथिराहुचक्र यात्रादि समस्तकार्योंमें विचारना ॥ १९ ॥

(शा०) पौषेपक्षत्यादिकाद्वादशैवंतिथ्योमाघादौद्वितीयादिकास्ताः ॥
कामात्तिस्रःस्युस्तृतीयादिवच्चयानेप्राच्यादौफलंतत्रवक्ष्ये ॥ २० ॥
सौख्यंक्लेशोभीतिरर्थागमश्चशून्यंनैःस्व्यं निःस्वता मिश्रता च ॥
द्रव्यक्लेशोदुःखमिष्टाप्तिरर्थोलाभःसौख्यंमंगलंवित्तलाभः ॥ २१ ॥
लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्यमुक्तं भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च ॥
लाभः कष्टंद्रव्यलाभः सुखंचकष्टंसौख्यंक्लेशलाभः सुखंच ॥ २२ ॥
सौख्यंलाभःकार्यसिद्धिश्च कष्टं क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनं च ॥
मृत्युर्लाभोद्रव्यलाभश्चशून्यंशून्यंसौख्यंमृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥ २३ ॥

इन चार श्लोकोंका अर्थ चक्रसे प्रगट होता है. पौषमहीनेके प्रतिपदादि १२

तिथिचक्रं यात्रायान् ।

पौ.	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्र	भा.	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व्य	निःस्व.	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	इ.प्रा.	अर्थ.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२.	३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्र.प्र.	धनप्रा.	सौख्य.
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीति	लाभ	मृत्यु.	अर्थलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	ष्टक	द्र.ला.	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश.	लाभ
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का.सि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टा०	अर्थसि	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्र.ला.	शून्य.
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य.	मृत्यु.	कष्ट

तिथि क्रमसे लिखने, माघके द्वितीयादि एवं फाल्गुन ३ चैत्र ४ वैशाख ५ ज्येष्ठ ६ आषाढ ७ श्रावण ८ भाद्रपद ९ आश्विन १० कार्तिक ११ मार्गशीर्षके १२ से लिखना. त्रयोदशी तृतीयाके तुल्य चतुर्दशी चतुर्थीके, पंचदशी पंचमीके तुल्य जानना. फल इनके पूर्वादिक्रममें चक्रसे लिखे हैं वही जानने॥२०॥२१॥२२॥२३॥

(व०ति०) तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टास्थानत्रयेत्रवियति प्रथमेतिदुःखी ॥ मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्स्थानत्रयेङ्कयुजिसौख्यजयौनिरुक्तौ ॥ २४ ॥

तिथि यहां शुक्लपक्षादि लीजातीहै तिथि नक्षत्र वार जोडके ३ जगे रखना एक जगे ७ से दूसरे ८ से तीसरे ३ से भाग लेना प्रथममें ० हो तो यात्री दुःखी होवे, दूसरेमें० हो तो धनहानि, तीसरेमें० शून्य हो तो मृत्यु होवे तीनही स्थानोंमें शून्य न हो तो सौख्य तथा जय होवे ॥ २४ ॥

(प्रमाणि०) रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिताद्वयगा ॥
महाडलोनशस्यतेत्रिषण्मिताभ्रमोभवेत् ॥ २५ ॥

सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत गिनना जितना हो ७ से तष्ट करके २ । ७ शेष रहें तो महाडलनामा दोष होता है यह अच्छा नहीं है, यदि ३ । ६ शेष रहें तो भ्रमणनामा दोष अशुभ होता है इसमें यात्रा न करनी और आडल दोषमें समस्त शुभकृत्य वर्जित हैं ॥ २५ ॥

(उ० जा०) शशांकभंसूर्यभतोत्रगण्यंपक्षादितिथ्यादिनवासरेण ॥
युतंनवाप्तंनगशेषकंचेत्स्याद्धिवरंतद्गमनेतिशस्तम् ॥ २६ ॥

सूर्यसे चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत जितने हों उनमें प्रतिपदादि वर्तमानतिथिसंख्या जोडनी वारभी जोडना ९ से भाग लेकर ७ शेष रहे तो हिवराख्य योग होता है यह अतिअशुभ है ये गुणदोष दाक्षिणात्यमें प्रसिद्ध हैं ॥ २६ ॥

(शालिनी) भूपञ्चांकद्वयंगदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काश्चघाताख्यचन्द्रः ॥
मेषादीनांराजसेवाविवादेयात्रायुद्धाद्येचनान्यत्रवर्ज्यः ॥२७॥

घातचंद्रमा-मेषको मेषका वृषको कन्याका, मिथुनको ११ का कर्कको ५ का सिंहको १० का कन्याको ३ का तुलाको ९ का वृश्चिकको २ का धनको १२ का मकरको ५ का कुंभको ९ का मीनको ११ का चन्द्रमा घात होता है यह घातसंज्ञक यात्रा एवं युद्धमें वर्ज्य है ॥ २७ ॥

(उ० जा०) गोस्त्रीझषेघाततिथिस्तुपूर्णाभद्रानृयुक्कर्कटकेथनन्दा ॥
कौर्प्यांजयोर्नक्रघटेचरिक्ताजयाधनुःकुम्भहरौनशस्ताः॥२८॥

घाततिथि-वृष कन्या मीन राशियोंको पूर्णा ५ । १० । १५ तिथि मिथुन कर्कको भद्रा २ । ७ । १२ तिथि वृश्चिक मेषको नंदा १ । ६ । ११ तिथि मकर तुलाको रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि धनकुंभसिंहको जया ३ । ८ । १३ घात तिथि होती हैं यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ २८ ॥

(शालि०) नक्रेभौमोगोहरिस्त्रीषुमन्दश्चन्द्रोद्वन्द्वेऽर्कोजभेज्ञश्चकर्के ॥
शुक्रःकोदण्डालिमीनेषुकुम्भजूकेजीवोघातवारानशस्ताः ॥ २९ ॥

मकरको मंगल वृषभको सिंह कन्याको शनि मिथुनको चंद्र मेषको रवि कर्कको बुध धनवृश्चिकमीनको शुक्र तुला कुंभको बृहस्पति घातवार हैं यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ २९ ॥

(अनु०) मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपांत्यभम् ॥
याम्यब्राह्मेशसार्पंचमेषादेर्घातभंनसत् ॥ ३० ॥

घात नक्षत्र–मेषादि राशियोंके क्रमसे १ को मघा २ हस्त ३ स्वाती ४ अनुराधा ५ मूल ६ श्रवण ७ शततारा ८ रेवती ९ भरणी १० रोहिणी ११ आर्द्रा १२ को आश्लेषा घातनक्षत्र हैं. यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ ३० ॥

घातचक्रम्.

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
चन्द्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा	अ.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ	आ
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

नवभूम्यःशिववह्नयोक्षविश्वेर्ककृताःशक्ररसास्तुरंगतिथ्यः ॥
द्विदिशोमावसवश्चपूर्वतश्चतिथयःसंमुखवामगानशस्ताः ॥ ३१ ॥

पूर्वमें ९ । १ अग्नियमें ११ । ३ दक्षिणमें ५ । १३ नैर्ऋत्यमें १२ । ४ पाश्चिममें १४ । ६ वायव्यमें ७ । १५ उत्तरमें २ । १० ईशानमें ३० । ८ तिथि रहती इन्हींको योगिनीभी कहते हैं. मनुष्योंको संमुख वाम अशुभ दक्षिण पृष्ठमें शुभ पशुओंको वामपृष्ठ शुभ संमुख दक्षिण अशुभ यात्रामें होती हैं ॥ ३१ ॥

(शालि०) कौबेरीतोवैपरीत्येनकालोवारेर्काद्येसंमुखेतस्यपाशः ॥
रात्रावेतौवैपरीत्येनगण्यौयात्रायुद्धेसंमुखेवर्जनीयौ ॥३२॥

रविवारको उत्तरदिशा काल चं० वायव्य मं० पश्चिम बु०नैर्ऋत्यमें बृ० दक्षिण शु० आग्नेय श० पूर्वमें काल होता है, जिस दिशामें काल है उसके संमुख पांचवीं दिशामें पाश होता है. जैसे-शनिको पूर्वमें काल है तो पश्चिममें पाश होगा. रात्रिमें (विपरीत) जिस दिशा काल उसमें पाश पाशवालीमें काल जानना. संमुखकाल तथा पाश, यात्रामें अशुभ होता है; दक्षिण शुभ होते हैं, कहाभी है कि "दक्षिणस्थः शुभः कालः पाशो वामदिशि स्थितः। शुभेत्यादि" और योगिनी राहुसहित दक्षिण तथा पृष्ठगत हो तो लक्ष शत्रुको मारता है. यह स्वरोदयमें लिखा है कि " दक्षे पृष्ठे योगिनी राहुयुक्ता गच्छेद्युद्धे शत्रुलक्षं निहन्ति" खडराहु मासराहु वारराहु यामार्द्धराहु ग्रन्थान्तरोंमें सविस्तर कहे हैं ॥ ३२ ॥

कालपाशः ।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	काल
द	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	पाश

(अनु०) भानिस्थाप्यान्यब्धिदिक्षुसप्तसप्तानलर्क्षतः ॥
वायव्याग्नेयदिक्संस्थंपारिघंनविलङ्घयेत् ॥ ३३ ॥

चतुष्कोण चक्रमें कृत्तिकादि ७ नक्षत्र पूर्वमें मघादि ७ दक्षिणमें अनुराधादि ७ पश्चिममें धनिष्ठादि ७ उत्तरमें आग्नेय वायव्यकोणगत एक रेखा देनी, यह परिघदंड है इसे उल्लंघन न करना. जो नक्षत्र जिस दिशामें है उनमें उस दिशाकी यात्रा शुभ होती है. पूर्वउत्तरगत नक्षत्रोंमें दक्षिण पश्चिमयात्रा तथा दक्षिणपश्चिमस्थ नक्षत्रोंमें पूर्वोत्तरयात्रा न करना इसमें परिघदंड उल्लंघन होता है॥ ३३॥

परिघदंड.

ई. पू. आ.

कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. आ.

उ. ध. श. पू. उ. रे. अ. भ.

म. पू. उ. ह. चि. स्वा. वि. द.

अ. ज्ये. मू. पू. उ. अ. श.

वा. प. नै.

(वसं०) अग्नेर्दिशंनृपइयात्पुरुहूतदिग्भैरेवंप्रदक्षिणग
ताविदिशोथकृत्ये ॥ आवश्यकेपिपरिघंप्रविलंघ्य
गच्छेच्छूलंविहाययदिदिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३४ ॥

विदिशाओंके लिये कहते हैं कि, पूर्वदिशागमनोक्त नक्षत्रोंमें आग्नेय, दक्षिणोक्तोंमें नैर्ऋत्य, पश्चिमोक्तोंमें वायव्य; उत्तरोक्तोंमें ईशान यात्रा राजाने करनी. आवश्यक कृत्यमें परिघदंड उल्लंघन करके यात्रा करनी, परन्तु वारशूल नक्षत्र शूल न हों और दिग्लग्न शुद्धि हो १।५।९ पूर्व २।६।१० दक्षिण ३।७।११। पश्चिम ४।८।१२ उत्तर गतराशि हैं, इनकी "शुद्धि" संमुख दक्षिणादि तथा इनके अंशादिकोंकीभी होनी चाहिये ॥ ३४ ॥

(इं० व०) मैत्रार्कपुष्याश्विनभैर्निरुक्तायात्राशुभासर्वदिशासुतज्ज्ञैः॥
वक्रीग्रहःकेन्द्रगतोस्यवर्गोलग्नेदिनंचास्यगमेनिषिद्धम् ॥ ३५ ॥

अनुराधा हस्त पुष्य अश्विनी नक्षत्र दिग्द्वारिकसंज्ञक हैं, ज्योतिष जाननेवाले आचार्योंने इनमें सभी दिशाओंकी यात्रा शुभ कही है. यात्रा लग्नसे वक्रीग्रह केंद्रमें हो तो न लेना तथा वक्रीग्रहका लग्न, नवांशक और वारभी न लेना यात्राभंग करता है ॥ ३५ ॥

(इं० व०) सौम्यायनेसूर्यविधूतदोत्तरांप्राचींव्रजेत्तौयदिदक्षिणायने॥
प्रत्यग्यमाशांचतयोर्दिवानिशंभिन्नायनत्वेंथवधोन्यथाभवेत् ॥ ३६ ॥

जब सूर्य चंद्रमा उत्तरायणमें हों तो उत्तरपूर्वदिग्यात्रा शुभ और दक्षिणायनमें हो तो दक्षिणपश्चिमयात्रा शुभ होती है, यदि सूर्यचन्द्रमा भिन्न अयनोंमें हों तो जिस अयनमें सूर्य है उसके उक्त दिनमें जिस अयनमें चन्द्रमा है उसके उक्त दिशा रात्रिमें जाना इससे अन्यथा यात्रा करे तो मरण होवे ॥ ३६ ॥

(उप०) उदेतियस्यांदिशियत्रयातिगोलभ्रमाद्वाथककुब्भसंघे ॥
त्रिधोच्यतेसंमुखएवशुक्रोयत्रोदितस्तांतुदिशंनयायात् ॥ ३७ ॥

मुनियोंने शुक्र संमुख तीन प्रकारसे कहा है, जिस दिशामें पूर्व वा पश्चिम उदय हो रहा है उस दिशा जानेमें (१) अथवा गोलभ्रमणसे दक्षिणगोल वा उत्तर गोल जहां हो उस दिशा संमुख होता है (२) अथवा (ककुब्भचक्र) पूर्वादि कृत्तिकादि पूर्वोक्तदिङ्नक्षत्रोंमें जिसमें शुक्र है वह नक्षत्र जहां है उधर संमुख होता है, (३) इन३ प्रकारोंमें उदयवाला प्रकार मुख्य है जिस दिशामें उदय हो उस दिशा न जाना, आवश्यकमें संमुखशुक्रकी शांति सविस्तर वसिष्ठसंहितामें है उसकेभी असमर्थोंको दीपिकामें दान लिखा है कि "सितं वस्त्रं सितं छत्रं हेममौक्तिकसंयुतम् । ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥ १ ॥" अर्थात् श्वेतवस्त्र श्वेतछत्र सुवर्ण मोती विधिपूर्वक ब्राह्मणको प्रतिशुक्रके दोषशांतिके लिये देना है ॥ ३७ ॥

(उप०)वक्रास्तनीचोपगतेभृगोःसुतेराजाव्रजन्यातिवशंहिविद्विषाम् ॥
बुधोनुकूलोयदितत्रसंचरन् रिपूञ्जयेन्नैवजयःप्रतीन्दुजे ॥ ३८ ॥

शुक्रके वक्र, अस्त नीचत्वगत हुयेमें तथा युद्धके पराजित हुयेमें राजा जावे तो अवश्य शत्रुके वश (बंधन) में हो जावे, परंतु यदि शुक्रके वक्रादिमें बुध अनुकूल (पृष्ठ) हो तो शत्रुको जीत लावे एवं भौम बुध शत्रुको (प्रति) संमुख तुल्यफली हैं ॥ ३८ ॥

(शालिनी) यावच्चन्द्रःपूषभात्कृत्तिकाद्येपादेशुक्रोन्धोनदुष्टोग्रदक्षे ॥
मध्येमार्गेभार्गवास्तेपिराजातावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेपितस्य॥३९॥

जब चन्द्रमा रेवतीसे कृत्तिकाके प्रथमचरणपर्यंत रहता है उन दिनों शुक्र अंधा कहाता है देखा जाता है तथापि (दृश्यफल) संमुख दक्षिण होनेका दुष्ट फल नहीं करता और दीर्घयात्रामें यात्रा करके यदि मार्गमें शुक्र अस्त हो जावे तो उसके उदयपर्यंत उसी यात्रामें राजा रहे. जब उदय हो तब उसे पृष्ठदिशा करके यात्रा पूर्ण करै ऐसे दक्षिण संमुखमेंभी है कि यदि मुहूर्तमें प्रस्थान करके अनंतर सफर पूर्ण न हुयेमें संमुख दक्षिणशुक्र हो जावे तबलौं उसी सफरमें रहे जबलौं वामपृष्ठ होता है. यदि ऐसेही मार्गमें बुधास्त हों तो दोष नहीं परंतु बुधउदय होके संमुख हो जावे तो दोष है पुनः अस्तपर्यंत मार्गमें रहे ॥ ३९ ॥

(अनु०) कुम्भकुम्भांशकौत्याज्यौसर्वदागमनेबुधैः ॥
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदेपदे ॥ ४० ॥

यात्रामें कुम्भलग्न कुंभांशक जाननेवालोंने सर्वदा त्याग करने यदि इनमें राजा यात्रा करे तो पदपद चलनेमें धन वा प्रयोजन नाश होवे ॥ ४० ॥

(मंजु०) अथ मीनलग्नउतवातदंशकेचलितस्यवक्रमिहवर्त्मजायते॥
जनिलग्नजन्मभपतीशुभग्रहो भवतस्तदा तदुदयेशुभोगमः ॥ ४१ ॥

तथा मीनलग्न मीनांशकमें राजा गमन करे तो मार्गसे लौट आना होवे, जन्म लग्नेश जन्मराशीश शुभग्रह लग्नमें हों तो उस लग्नमें गमन शुभ होता है, जो वे पापग्रहभी हों तथापि गमन लग्नमें शुभ होने हैं और जन्मनक्षत्र जन्मराशिभी यात्रालग्नमें शुभ कही हैं ॥ ४१ ॥

(रथोद्धता) जन्मराशितनुतोष्टमेथवास्वारिभाच्चरिपुभेतनुस्थिते ॥
लग्नगास्तदधिपायदाथवास्युर्गतंहिनृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ ४२ ॥

जन्मराशि जन्मलग्नसे अष्टमराशिलग्नमें तथा शत्रुकी जन्मराशि जन्मलग्नसे

छठी राशि यात्रालग्नमें अथवा अपने जन्मराशिलग्नसे अष्टममें शत्रुकी जन्मराशि लग्नोंसे छठे उनके स्वामी यात्रालग्नमें हों तो यात्री राजाकी मृत्यु होवे ग्रंथांतरोंमें जन्मराशि लग्नसे व्ययराशिभी अशुभ कही है ॥ ४२ ॥

(शालि०) लग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमस्थेयात्राप्रोक्तावाञ्छितार्थैकदात्री॥
अम्भोराशौवातदंशेप्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥ ४३ ॥

मीन कुम्भको छोडकर लग्नवर्गोत्तम हो अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तममें हो तो यात्रा मनोवांछित देनेवाली होती है और जलचरराशि लग्नमें हो अथवा जलचरराशिका अंश लग्नमें हो तो (नौकायात्रा) तरीका सफर सिद्धि देनेवाली होती है॥४३॥

(इं० व०) दिग्द्वारभेलग्नगतेप्रशस्तायात्रार्थदात्रीजयकारिणीच ॥
हानिंविनाशांरिपुतोभयंचकुर्यात्तथादिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ ४४ ॥

दिग्द्वारलग्नोंमें यात्रा शुभ धन एवं जय करती है दिग्द्वार १ । ५ । ९ पूर्व २ । ६ । १० दक्षिण ३ । ७ । ११ पश्चिम ४ । ८ । १२ उत्तरके हैं. जो प्रतिलोमलग्न जैसे १ । ५ । ९ । पश्चिम ४ । ८ । १२ दक्षिण आदि हों तो हानि धननाश वा शत्रुसे भय होवे ॥ ४४ ॥

(वसं०) राशिःस्वजन्मसमयेशुभसंयुतोयोयःस्वारिभान्निधनगोपिचवेशिसंज्ञः ॥ लग्नोपगः सगमने जयदोथ
भूपयोगैर्गमो विजयदो मुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४५ ॥

यात्रीके जन्मसमयमें जो राशि शुभग्रहोंसे युक्त हो वह यात्रालग्नमें जय देती है अथवा शत्रुके राशिलग्नसे अष्टमराशि तथा जो राशि (वेशि) सूर्य राशिसे दूसरी हो तो वहभी यात्रालग्नमें विजय देती है अथवा जातकोक्त राजयोग यात्रामें हो तो वह यात्रा जय देनेवाली मुनियोंने कही है ॥ ४५ ॥

(उ० जा०)सूर्यःसितोभूमिसुतोथराहुः शनिःशशीज्ञश्चबृहस्पतिश्च॥
प्राच्यादितोदिक्षुविदिक्षुचापिदिशामधीशाःक्रमतःप्रदिष्टाः॥४६ ॥

क्रमसे दिशा विदिशाओंके स्वामी कहते हैं कि, पूर्वका सूर्य आग्नेयका शुक्र दक्षिणका मंगल नैर्ऋत्यका राहु पश्चिमका शनि वायव्यका चंद्रमा उत्तरका बुध ईशानका बृहस्पति दिगीश हैं ॥ ४६ ॥

(तनुमध्या) केन्द्रेदिगधीशेगच्छेदवनीशः ॥
लालाटिनितस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥ ४७ ॥

दिगीश यात्रालग्नसे केंद्रमें हो तो राजा यात्रा करे परंतु उस दिगधीशपर लालाटि (वक्ष्यमाण) हो तो शत्रुसेनामें न जावे ॥ ४७ ॥

(शार्दू०) प्राच्यादौतरणिस्तनौभृगुसुतोलाभव्ययेभूसुतः
कर्मस्थोथतमोनवाष्टमगृहेसौरिस्तथासप्तमे ॥
चन्द्रःशत्रुगृहात्मजेपिचबुधःपातालगोगीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहेविलग्नसदनाल्लालाटिकाःकीर्तिताः ॥ ४८ ॥

लग्नके सूर्यमें पूर्वको लालाटि तथा आग्नेयको शुक्रके ११ । १२ भावमें होनेसे और दशम मंगल दक्षिणको ८ । ९ भावमें राहु नैर्ऋत्यको शनि सप्तम, पश्चिमको चंद्रमा ६ । ५ में, वायव्यको बुध चतुर्थ, उत्तरको बृहस्पति २ । ३ में ईशानको लालाटिक होता है लालाटि दिक्स्वामीको छोडके यात्रा करनी ॥ ४८ ॥



(अनु०) मृगेगत्वाशिवेस्थित्वादितौगच्छञ्जयेद्रिपून् ॥
मैत्रेप्रस्थायशाक्रेहिस्थित्वामूलेव्रजंस्तथा ॥ ४९ ॥
(इं०व०) प्रस्थायहस्तेनिलतक्षधिष्ण्येस्थित्वाजयार्थीप्रवसेद्विदैवे ॥
वस्वन्त्यपुष्येनिजसीम्निचैकरात्रोषितःक्ष्मांलभतेवनीशः ॥५०॥

मृगशिरमें अपने घरसे दूसरे घरमें जाकर आर्द्रामें वहीं रहै तब पुनर्वसुमें ग्रामसे बाहर गमन करे तो शत्रुको जीतता है (१) तथा अनुराधामें प्रस्थान ज्येष्ठामें स्थिति मूलमें गमन (२) हस्तमें प्रस्थान चित्रा स्वातीमें स्थित रहकर विशाखामें गमन (३) ये तीन योग जय देनेवाले हैं तथा धनिष्ठा रेवती पुष्यमें चलकर अपने नगरके अंत्यमें एक रात्रि रहकर आगे जावे तो राजा शत्रुसे भूमि जीते ॥ ४९ ॥ ५० ॥

(अनु०) उषःकालोविनापूर्वांगोधूलिःपश्चिमांविना ॥
विनोत्तरांनिशीथःसन्यानेयाम्यांविनाभिजित् ॥ ५१ ॥

उषःकालमें पूर्व गोधूलीमें पश्चिम अर्द्धरात्रिमें उत्तर मध्याह्नमें दक्षिण यात्रा न करना. प्रयोजन यह है कि सूर्य ८ दिशाओंमें आठों प्रहरोंमें रहता है वह सन्मुख न होना चाहिये ॥ ५१ ॥

(अनु०) लग्नाद्भावाःक्रमाद्देहकोशधानुष्कवाहनम् ॥
मन्त्रोरिर्मार्गआयुश्चहृद्व्यापारागमव्ययाः ॥ ५२ ॥

क्रमसे १२ भावोंके नाम-देह १ कोश (धन) २ धानुष्क ३ वाहन ४ मंत्र ५ अरि ६ मार्ग ७ आयु ८ हृदय ९ व्यापार १० आगम ११ व्यय १२ भावोंके संज्ञा ये हैं इनमें शुभयोग दृष्टिसे शुभफल यथासंज्ञकोंको होता है ॥ ५२ ॥

(शा०) केंद्रेकोणेसौम्यखेटाःशुभाःस्युर्यानेपापास्त्र्यायषट्खेषुचन्द्रः ॥
नेष्टोलग्नान्त्यारिरन्ध्रेशनिःखेऽस्तेशुक्रोलग्नेइनगान्त्यारिरन्ध्रे ॥५३॥

शुभग्रह केंद्र १।४)७।१० कोणों ५।९ में पापग्रह ३।११।६ में चन्द्रमा १।१२।६।८ रहित स्थानमें शनि १० रहितभावोंमें शुक्र ७ रहित भावोंमें शुभफल देते हैं अन्योंमें अशुभफल यात्रामें देते हैं तथा लग्नेश ७।१२ ६।८ भावोंमें मृत्युफल देताहै, प्रत्येक ग्रहोंके फल भावचक्रमें हैं ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकं) योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपिभूदेवानाम् ॥
चौराणामपिशुभशकुनैरुक्ताभवतिमुहूर्तैरपिमनुजानाम् ॥५४॥

राजाओंको यात्रालग्नसे वक्ष्यमाण सहित योगोंसे तिथ्यादि अयोग्य हुयेमेंभी सिद्धि होती है, ब्राह्मणोंको (नक्षत्रगुण) चन्द्रताराबलादिसे, चौरोंको केवल शुभाशुभ शकुनहीसे तथा शिवालिखितसेभी, अन्यजनोंको (मुहूर्त) शिवालि-खित तथा उद्वेगादि वेलाओंमें सिद्धि होती है, यहां ब्राह्मण द्विजातिके अर्थमें है यह पद ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनहूंका बोधक है तथा जिनको जो सिद्धिद (जैसे राजाओंको योग) कहे हैं इनमेंभी दिक्शूलादि मुख्य दोष भद्रा रिक्ता-आदि पंचांगदोषविचार सर्वथा मुख्यही है ॥ ५४ ॥

यात्रालग्नवशाद्ग्रहभावफलचक्रम्.								
भा.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	अनेककष्ट	अनेककष्ट	अनेककष्ट	सुख	सुख	सुख	अने. कष्ट	क्षुधादिरोग
२	धनहानि	प्रियसंग	मृत्यु	धर्मादिलाभ	पुत्रलाभ	धर्मादिलाभ	बंधन	उत्पात
३	धन	आयु	जय	लाभ	कीर्ति	सौख्य	लाभ	लाभ
४	दुःख	वृद्धि	दुःख	लाभ	शत्रुनाश	भोग	हानि	क्षय
५	भय	शुभ	भय	सिद्धि	अर्थसिद्धि	शत्रुनाश	सिद्धि	भय
६	लाभ	हानि	लाभ	शत्रुहानि	सिद्धि	धनहानि	शत्रुहानि	जय
७	नाश	सुख	नाश	मित्रागम	स्त्रीलाभ	नाश	नाश	नाश
८	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भय	नैरुज्य	रक्षा	अर्थसिद्धि	भय	शत्रुवृद्धि
९	अशुभ	शुभ	अशुभ	धनश्री	श्री (धनम्)	अतिसौख्य	उपद्रव	उपद्रव
१०	जय	पुष्टि	राज्य	कामद	शुभ	राज्यलक्ष्मी	दीर्घरोग	वैरापनोद
११	जय	जय	जय	लाभ	कीर्ति	शत्रुक्षय	विजय	सौख्य
१२	कष्ट	शत्रुवृद्धि	मृत्यु	धनहानि	धनहानि	धनहानि	मृत्यु	कष्ट

(मञ्जु०) सहजेरविर्दशमगश्चन्द्रमाशनिमङ्गलौरिपुगृहेसितःसुते ॥
हिबुकेबुधोगुरुरपीहलग्नगःसजयत्यरीन्प्रचलितोचिरान्नृपः ॥५५॥

यात्रायोग—तीसरा सूर्य दशम चन्द्रमा छठे शनि मंगल पंचम शुक्र चतुर्थ बुध लग्नमें बृहस्पति हो ऐसे लग्नमें राजा यात्रा करे तो थोडेही समयमें शत्रुको जीतता है ॥ ५५ ॥

(गाथा) भ्रातरिशौरिर्भूमिसुतोवैरिणिलग्नेदेवगुरुः ॥
आयगतेर्केशत्रुजयश्चेदनुकूलोदैत्यगुरुः ॥ ५६ ॥

तीसरा शनि छठा मंगल लग्नमें बृहस्पति ग्यारहवां सूर्य हो ऐसे योगमें यदि शुक्र अनुकूल (पृष्ठगत) हो तो यात्री शत्रुको जीते ॥ ५६ ॥

(गाथा) तनौजीव इन्दुर्मृतोवैरिगोर्कः ॥
प्रयातोमहींद्रोजयत्येवशत्रून् ॥ ५७ ॥

लग्नमें बृहस्पति आठवां चंद्रमा छठा सूर्य हो तो यात्री राजा शत्रुको जीते ॥ ५७ ॥

(सुप्रतिष्ठायां पंक्तिच्छन्दः)

लग्नगतः स्याद्देवपुरोधाः ॥ लाभधनस्थैःशेषनभोगैः ॥ ५८ ॥

यात्रालग्नमें बृहस्पति हो अन्य ग्रह ११ । २ में हों तो राजाका विजय होवे॥५८॥

(पंक्तौ मत्ता) द्यूनेचन्द्रेसमुदयगेर्केजीवेशुक्रेविदिधनसंस्थे ॥
ईदृग्योगेचलतिनरेशोजेताशत्रून्गरुडइवाहीन् ॥ ५९ ॥

सप्तमस्थानमें चन्द्रमा लग्नमें सूर्य बृहस्पति बुध शुक्र दूसरे भावमें हों इस प्रकारके योगमें राजा चले तो सर्पोंको गरुड जैसा वैसा शत्रुओंको जीतै ॥५९॥

(अनु० चित्रपदा) वित्तगतः शशिपुत्रोभ्रातरिवासरनाथः ॥
लग्नगतोभृगुपुत्रः स्युःशलभा इव सर्वे ॥ ६० ॥

बुध धनस्थानमें सूर्य तीसरा शुक्र लग्नमें हो ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो उसके शत्रु (शलभ) टीडी जैसे आपही उडकर अग्निमें भस्म हो जाते हैं ऐसी उड जावें युद्धभी न करना पडे ॥ ६० ॥

(गाथा) उदयेरविर्यदिसौरिररिगःशशिदशमेपि ॥
वसुधापतिर्यदियातिरिपुवाहिनीवशमेति ॥ ६१ ॥

लग्नमें सूर्य छठा शनि दशम चन्द्रमा हो ऐसे योगमें राजा गमन करे तो शत्रु सेनाको अपने वशमें कर लेवे ॥ ६१ ॥

(जगति जलोद्धतगतिः)

तनौशनिकुजौरविर्दशमभेबुधो भृगुसुतोपिलाभदशमे ॥
त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनीगुरुज्ञभृगुजास्तथाबलयुताः ॥ ६२ ॥

लग्नमें शनि मङ्गल दशम सूर्य १० । ११ में बुध तथा शुक्र हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६२ ॥

(गाथा) समुदयगेविबुधगुरौमदनगतेहिमकिरणे ॥
हिबुकगतौबुधभृगुजौसहजगताःखलखचराः ॥ ६३ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तममें चन्द्रमा चतुर्थ बुध शुक्र तीसरे पापग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६३ ॥

(त्रिष्टुभ्, सुमुखी) त्रिदशगुरुस्तनुगोमदनेहिमकिरणोरविरायगतः ॥
सितशशिजाववपिकर्मगतौरविसितभूमिसुतःसहजे ॥ ६४ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तम चन्द्रमा ११ में सूर्य १० में बुध शुक्र तीसरे शनि मङ्गल हो ऐसे योगमेंभी वही फल है ॥ ६४ ॥

(त्रिष्टुभ्,श्रीछन्दः)देवगुरौवाशशिनितनुस्थेवासरनाथेरिपुभवनस्थे ॥
पञ्चमगेहेहिमकरपुत्रःकर्मणिसौरिःसुहृदिसितश्च ॥ ६५ ॥

बृहस्पति अथवा चन्द्रमा लग्नमें सूर्य छठा बुध पञ्चम शनि दशम शुक्र चतुर्थ हो ऐसे योगमें यात्रा करनेवाले राजाकी जय होवे ॥ ६५ ॥

(जगति, प्रमुदितवदना) हिमकिरणसुतोबलीचेत्तनौत्रि-
दशपतिगुरुर्हिकेन्द्रस्थितः ॥ व्ययगृहसहजा-
रिधर्मस्थितोयदिचभवतिनिर्बलश्चन्द्रमाः ॥ ६६ ॥

बलवान् बुध लग्नमें बृहस्पति केन्द्रमें तथा बलरहित चन्द्रमा १२ । ३ । ६ ९ । ८ में हो तो इस योगकाभी यात्रामें पूर्वोक्तही फल है ॥ ६६ ॥

(जगति, अभिनवतामरसा) अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हि-
बुकसहोदरलाभगृहस्थः ॥ कविरिहकेन्द्रगगी-
ष्पतिदृष्टोवसुचयलाभकरःखलुयोगः ॥ ६७ ॥

पापग्रह ९ । ८ । ७ रहित स्थानोंमें शुक्र ४ । ३ । ११ में हो इसे केन्द्रस्थ बृहस्पति देखे ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो धनका समूह एवं विजयभी मिले ॥ ६७ ॥

(जगति, प्रमिताक्षरा) रिपुलग्नकर्महिबुकेशशिजेपरिवीक्षि-
तेशुभनभोगमनैः ॥ व्ययलग्नमन्मथगृहे-
ष्वजयःपरिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥ ६८ ॥

बुध ६ । १ । १० । ४ में शुभग्रहोंसे दृष्ट हो १२ । १ । ७ भावोंसे रहित स्थानोंमें पापग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय पावे ॥ ६८ ॥

(जगति, मणिमाला) लग्नेयदिजीवःपापायदिलाभेक-
र्मण्यपि वाचेद्राज्याधिगमःस्यात् ॥ द्यूनेबुध-
शुक्रौचन्द्रोहिबुकेवातद्वत्फलमुक्तंसर्वैर्मुनिवर्यैः ॥ ६९ ॥

लग्नम बृहस्पति अथवा ११ । १० में पापग्रह हो तो राज्य मिले तथा ७ में बुध शुक्र ४ म चंद्रमा हो तो मुनियोंने वही फल कहा है ॥ ६९ ॥

(अतिजगति, चान्द्रिका) रिपुतनुनिधनेशुक्रजीवेन्दवो
ह्यथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहास्थितौ ॥ मदनभवन-
गश्चन्द्रमावाम्बुगःशशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः ॥७०॥

छठा शुक्र लग्नमें बृहस्पति अष्टम चन्द्रमा हों तो यात्री राजाकी जय होवे अथवा बुध शुक्र चतुर्थमें चन्द्रमा सप्तम हो तो वही फल है तथा चतुर्थ चन्द्रमा बुध शुक्रके बीच हो तोभी वही फल है ॥ ७० ॥

(गाथा) सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथा-
रिहिबुकत्रिगृहे चेत् ॥ क्रमतोरिसोदरखशा-
त्रवहोराहिबुकायगैर्गुरुदिनेखिलखेटैः ॥ ७१ ॥

लग्नमें शुक्र सप्तममें बृहस्पति छठा मंगल चौथा बुध तीसरा शनि यात्रालग्नसे हो तो यायी राजाका विजय होवे. बृहस्पतिके दिनमें सूर्य छठा चंद्रमा ३ में मंगल १० में बुध ६ में बृहस्पति १ में शुक्र ४ में शनि ११ हों तौभी वही फल है ॥ ७१ ॥

(अतिजगति, मंजुभाषिणी) सहजेकुजोनिधनगश्चभार्ग-
वोमदनेबुधोरविररौतनौगुरुः ॥ अथचेत्स्युरीज्य-
सितभानवोजलत्रिगताहिसौरिरुधिरौरिपुस्थितौ ॥ ७२ ॥

तीसरा मंगल ८ में शुक्र ७ में बुध ६ में सूर्य १ बृहस्पति हो तो यात्री विजय पावे अथवा बृहस्पति शुक्र सूर्य तृतीय चतुर्थमें यथावकाश हों शनि मंगल छठे हों तौभी वही फल है ॥ ७२ ॥

(अतिधृत्यां, शा० वि०) एकोङ्गेज्यसितेषुपञ्चमतपःकेन्द्रेषु
योगस्तथाद्वौचेत्तेष्वधियोगएषुसकलायोगाधियोगःस्मृतः ॥

योगेक्षेममथाधियोगगमनेक्षेमंरिपूणांवधंचाथोक्षेमयशोवनीश्च
लभतेयोगाधियोगेव्रजन् ॥ ७३ ॥

पंचम नवम ५।९ केंद्रों १।४।७।१० में बुध बृहस्पति शुक्रमेंसे एक हो तो योग हुआ दो हों तो अधियोग तीनही हों तो योगाधियोग होताहै यात्रालग्नसे योग हो तो क्षेम अधियोग हो तो क्षेम तथा शत्रुवधभी और योगाधियोग हो तो यायी राजा शत्रुको मारकर राज्य पावे उक्त ३ ग्रहोंके केंद्रकोणोंमें पृथक् संख्या नाभसयोगोंके सदृश १०८ भेद हैं ॥ ७३ ॥

(ज०तो०) इषमाससितादशमीविजयाशुभकर्मसुसिद्धिकरीकथिता ॥
श्रवणर्क्षयुतासुतरांशुभदानृपतेस्तुगमेजयसिद्धिकरी ॥ ७४ ॥

आश्विनमासकी शुक्लदशमी विजयासंज्ञका है यह समस्त शुभकार्योंमें सिद्धि करनेवाली है श्रवण नक्षत्रभी इसमें हो तो अतिशय शुभफल देती है राजाके यात्रामें यह विजय तथा (सिद्धि) कार्यसिद्धि देती है अथवा संधिकरीभी पाठ है संधि मिलापको कहते हैं ॥ ७४ ॥

(व० ति०) चेतोनिमित्तशकुनैरतिसुप्रशस्तैर्ज्ञात्वावि-
लग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति ॥ सिद्धिर्भवेदथ पुनः
शकुनादितोपिचेतोविशुद्धिरधिकानचतांविनेयात् ॥ ७५ ॥

चित्तकी प्रसन्नता, शुभशकुन, (निमित्त) अंगस्फुरणादिकोंका विचार शुभ जानके तथा लग्नबल देखके यदि राजा यात्रा करे तो कार्यसिद्धि होवे अशुभ शकुन, निमित्त, लग्न तथा चित्तकी अप्रसन्नतामें मरण वा धनहानि होती है; शकुनादियोंसेभी चित्तकी शुद्धि प्रबल है. विना चित्तकी शुद्धि, श्रद्धा वा प्रसन्नताके शुभलक्षणोंमेंभी न जावे ॥ ७५ ॥

(विषमे वसन्तमालिका) व्रतबन्धनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडो-
त्सवसूतकासमाप्तौ ॥ नकदापिचलेदकाल-
विद्युद्घनवर्षातुहिनेपि सतरात्रम् ॥ ७६ ॥

व्रतबंध, देवप्रतिष्ठा, विवाह, होलिकादि उत्सव, दोनोंही प्रकारका सूतक इतने कामोंमें इनकी स्वतंत्रोक्त अवधि पूरी हुये विना यात्रा न करनी, तथा विना समय बिजुली वा वज्र, मेघगर्जन वर्षा (नीहार) बर्फ पडे तो सात रात्रिपर्यंत यात्रा न करनी, अपने समयोंपर इनका दोष नहीं ॥ ७६ ॥

(वंशस्थ) महीपतेरेकदिनेपुरात्पुरेयदाभवेतांगमनप्रवेशकौ ॥
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैवकदापिपण्डितः॥७७॥

यदि राजाके एक नगरसे दूसरे नगरमें जाना अर्थात् गमन प्रवेश एकही दिनमें हो जावें तो यथावकाश पंचांगशुद्धिमात्र देखनी चाहिये. नक्षत्रशूल, वारशूल, प्रतिशुक्र, योगिनी इतने दोष पंडित न विचारे, यदि गमन दिनसे अन्य दिनमें गम्यस्थानमें प्रवेश हो तो उक्त सभी विचारने ॥ ७७ ॥

(आर्या) यद्येकस्मिन्दिवसेमहीपतेर्निर्गमप्रवेशौस्तः ॥
तर्हिविचार्य्यःसुधियाप्रवेशकालोनयात्रिकस्तत्र ॥ ७८ ॥

यदि राजाका एकही दिनमें (निर्गम प्रवेश) घरसे उठकर अभीष्ट स्थानमें प्रवेश हो तो बुद्धिमान्को प्रवेशकाल प्रवेशोक्त मुहूर्त देखना, यात्रोदित मुहूर्त न विचारना ॥ ७८ ॥

(अनुष्टुप्) प्रवेशान्निर्गमंतस्मात्प्रवेशंनवमेतिथौ ॥
नक्षत्रेपि तथावारे नैव कुर्यात् कदाचन ॥ ७९ ॥

गृहप्रवेशसे नवम तिथि नक्षत्रवारमें पुनर्गमन वा गमनसे पुनः प्रवेश न करना. ग्रंथांतरोंमें नवममास वर्षमेंभी न करना कहा है ॥ ७९ ॥

(शालि०) अग्निंहुत्वादेवतांपूजयित्वा नत्वाविप्रानर्चयित्वादिगीशम्॥
दत्त्वादानंब्राह्मणेभ्योदिगीशंध्यात्वाचित्तेभूमिपालोधिगच्छेत् ॥८०॥

राजा होम करके इष्टदेवताको पूजके ब्राह्मणोंको नमस्कार करके जिस दिशा जाना है उसके स्वामीको पूजके अनेक प्रकार दान ब्राह्मणोंको देके दिगीशका मनसे ध्यान करके यात्रा करे ॥ ८० ॥

(शार्दू०) कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपितथामाषांश्चगव्यंदधि
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ॥
तद्वत्पायसमेव चाषपललं मार्गं च शाशं तथा
षाष्टिक्यंचप्रियंग्वपूपमथवाचित्राण्डजान्सत्फलम् ॥ ८१ ॥

कौर्मंसारिकगौधिकंचपललंशाल्यंहविष्यंहयाद्दक्षेस्यात्कृसरान्नमुद्गमपिवापिष्टंयवानांतथा ॥ मत्स्यान्नंखलुचित्रितान्नमथवादध्यन्नमेवंक्रमाद्भक्ष्याभक्ष्यमिदंविचार्यमतिमान्भक्षेत्तथालोकयेत् ॥८२॥

नक्षत्रोंके दोहद कहते हैं–अश्विनीमें उरद चावल, एवं २ में तिल चावल ३ में उरद ४ गौका दही ५ गौका घी ६ गौका दूध ७ हरिणका मांस ८ हरिणीका रुधिर ९ में पायस १० चाषपक्षीका मांस ११ में मृगमांस १२ शशेका मांस १३ में (साठी) धान १४ (प्रियंगु) कागनी १५ घीका पकवान्न १६ (चित्र-पक्षी) तीतर १७ उत्तम फल १८ कछुवेका मांस १९ (सारिका) मैनाका मांस २० गोधाका मांस २१ (शाल्य) शौलेका मांस २२ (हविष्य) मुद्रादि २३ खिचरी २४ (मुद्गान्न) मूंगकी खिचरी २५ जौका सतुवा २६ मच्छीके मांस सहित भात २७ अनेक पकवान्न २८ में दहीभात है, इन वस्तुओंको देश, कुल आचारके अनुसार खाना वा देखना सूंघना वा स्पर्श करना इस कृत्यसे नक्षत्रोक्त दोष नहीं होता ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

(अ०) आज्यंतिलौदनंमत्स्यंपयश्चापियथाक्रमम् ॥
भक्षयेद्दोहदंदिश्यमाशांपूर्वादिकां व्रजेत् ॥ ८३ ॥

दिशाओंके दोहद–पूर्वदिशा जानेमें घी दक्षिण जानेमें तिलमिश्रित भात पश्चिम जानेमें मछली उत्तर जानेमें दूध खाकर जाना, इससे कोईभी दुष्ट फल नहीं होता ॥ ८३ ॥

(अ०) रसालांपायसंकाञ्जिंशृतंदुग्धंतथादधि ॥
पयोश्रितंतिलान्नंचभक्षयेद्वारदोहदम् ॥ ८४ ॥

वारदोहद–रविवारको शिखरिण, चंद्रको पायस, मंगलको कांजिक, बुधको काढाहुआ दूध, गुरुको दही, शुक्रको कच्चा दूध, शनिको तिलौदन खायके गमन करना ॥ ८४ ॥

(वसं०) पक्षादितोर्कदलतण्डुलवारिसर्पिःश्राणाहवि-
ष्यमपिहेमजलंत्वपूपम् ॥ भुक्त्वाव्रजेद्रुचकम-
म्बुचधेनुमूत्रंयावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् ॥ ८५ ॥

तिथिदोहद–प्रतिपदाको आंकके पत्र एवं २ को चावलोंका धोवन ३ को घी ४ (यवागू) अमली ५ हविष्यान्न ६ सोनेका धोवन ७ पुआ ८ बिजौराफल ९ जल १० गोमूत्र ११ जौ १२ पायस १३ गुड १४ रुधिर १५ मुद्रान्न खायके यात्रा करनी ॥ ८५ ॥

(प्रहर्षि०) उद्धृत्यप्रथमतएवदक्षिणाङ्घ्रिंद्वात्रिंशत्पदम-
भिगम्यदिश्ययानम् ॥ आरोहेत्तिलघृतहेमता-
म्रपात्रंदत्त्वादौगणकवरायचप्रगच्छेत् ॥ ८६ ॥

राजाने यात्रासमयमें प्रथम दाहिना पैर उठायके ३२ पैर पैदल चलना तदा वक्ष्यमाणसवारीमें आरोहण करना, उस समय ज्योतिषीको तिल, घी, सुवर्ण तांबेका पात्र दान दे यथाशक्ति भूयसी देके गमन करना ॥ ८६ ॥

(अनु०) प्राच्यांगच्छेद्गजेनैव दक्षिणस्यांरथेनच ॥
दिशिप्रतीच्यामश्वेनतथोदीच्यांनरैर्नृपः ॥ ८७ ॥

पूर्वदिशायात्रामें हाथी दक्षिणको रथ पश्चिमको घोडा उत्तरको मनुष्योंकी सवारीमें जाना ॥ ८७ ॥

(पादाकुल) देवगृहाद्वागुरुसदनाद्वास्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ॥
प्राश्यहविष्यंविप्रानुमतःपश्यञ्शृण्वन्मंगलमेयात् ॥ ८८ ॥

यात्रासमयमें देवताके पूजनगृहसे अथवा गुरुस्थानसे अथवा अपने शयन स्थान (आवास) से अथवा बहुत स्त्रीसंभवमें मुख्य स्त्री (पटरानी) के घरसे (हविष्य) यज्ञभाग हवनांतमें प्राशन करके (ब्राह्मणके अनुमत) ब्राह्मण इदं विष्णु० इत्यादि मंत्रसे प्रथम पैर उठाकर जानेकी आज्ञा देता है तथा मंगल-शब्द गीतवाद्य कलशादि सुनता देखता गमन करे ॥ ८८ ॥

(प्रह०) कार्याद्यैरिहगमनस्यचेद्विलम्बोभूदेवादिभिरुपवीतमायुधंवा ।
क्षौद्रंचामलफलमाशुचालनीयंसर्वेषांभवतियदेवहृत्प्रियं वा ॥ ८९ ॥

यात्रामुहूर्त्तमें यदि कार्यवशात् गमनमें विलंब हो तो ब्राह्मणने यज्ञोपवीत, क्षत्रियने शस्त्र, वैश्यने मधु, शूद्रने नारिकेलादि फल तत्कालमें चलाय देना. इसे प्रस्थान कहते हैं अथवा सभीने अपने मनकी प्रियवस्तु प्रस्थानकरनी ॥ ८९ ॥

(मन्दा०) गेहाद्गेहान्तरमपिगमस्तर्हियात्रेतिगर्गः
सीम्नःसीमान्तरमपिभृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ॥
प्रस्थानंस्यादितिकथयतेथो भरद्वाज एवं
यात्राकार्याबहिरपिपुरात्स्याद्वसिष्ठोब्रवीति ॥ ९० ॥

प्रस्थानका परिमाण कहते हैं कि अपने घरसे समीपवर्ति घरमेंभी गर्गाचार्य यात्रा कहता है, तथा अपनी सीमा (सरहद) से दूसरी सीमामें भृगु कहता है तथा बडे जोरसे बाण जितने दूर जाता है इतने पर्यन्त भरद्वाज कहता है, तथा नगरसे बाहरही यात्रा प्रस्थान करना वसिष्ठ कहता है. सभी ठीक है ॥ ९० ॥

(वसं०) प्रस्थानमत्रधनुषांद्विशतानिपञ्चकेचिच्छतद्वयमु-
शन्तिदशैवचान्ये ॥ संप्रस्थितो य इह मंदिरतः
प्रयातोगन्तव्यदिक्षुतदपिप्रयतेनकार्यम् ॥ ९१ ॥

प्रस्थानको कोई (५०० धनुष) २००० हात अपने घरसे कहते हैं, कोई (२०० धनुष) ८०० हात कहते हैं, कोई १० ही धनुष कहते हैं इससे कार्यवश समीप दूर मानना. प्रस्थान गंतव्यदिशाके ओर स्वयंप्रस्थान रखना उत्तम है तद-शक्तिमें वस्तुप्रस्थान है, गमनमें प्रथम दिन थोडा दूसरे दिन कुछ अधिक एवं क्रमसे दीर्घयात्रामें गमन करना ॥ ९१ ॥

(स्रग्ध०) प्रस्थानेभूमिपालोदशदिवसमभिव्याप्यनैकत्रतिष्ठे-
त्सामन्तःसप्तरात्रंतदितरमनुजःपञ्चरात्रं तथैव ॥
ऊर्ध्वंगच्छेच्छुभाहेप्यथगमनदिनात्सप्तरात्राणिपूर्वं
चाशक्तौतद्दिनेसौरिपुविजयमनामैथुनंनैवकुर्यात् ॥ ९२ ॥

राजा प्रस्थान करके दशदिन एक जगह बैठा न रहे नहीं तो पुनः यात्रामुहूर्त्त पूर्ववत् करना पड़ता है ऐसेही (मांडलिक) थोडे गांवोंका स्वामी ७ दिन इससे इतर ब्राह्मण आदि ५ दिन एकत्र न रहे दैववशात् उक्त अवधि व्यतीत हो जाय तो पुनः घर आयके शुभमुहूर्तमें यात्रा करे और यात्रादिनसे पूर्व सात रात्रिसे स्त्रीसंग न करे. यदि स्त्री ऋतुस्नातादि विषयसे ७ रात्रि पूर्व बन्द न रह सके तो एक दिन पूर्व तोभी स्त्रीसङ्ग न करे ॥ ९२ ॥

(शालिनी) दुग्धंत्याज्यंपूर्वमेवत्रिरात्रंक्षौरंत्याज्यंपञ्चरात्रंचपूर्वम् ॥
क्षौद्रंतैलंवासरेऽस्मिन्वमिश्चत्याज्यंयत्नाद्भूमिपालेननूनम् ॥ ९३ ॥

यात्रार्थी राजाको यात्रादिनसे पूर्व ३ रात्रिसे दूध न पीना तथा पांच रात्रि पूर्व (क्षौर) मुण्डन श्मश्रुकर्म न करना और उस दिन शहद न खाना तैलाभ्यंग न करना शरीरशोधनार्थ औषधिप्रयोगसे वमनभी न करना इतने वस्तु यत्नसे निश्चय वर्जित करना ॥ ९३ ॥

(गीतिः) भुक्त्वागच्छतियदिचेत्तैलगुडक्षारपक्वमांसानि ॥
विनिवर्त्ततेसरुग्णःस्त्रीद्विजमवमान्यगच्छतोमरणम् ॥ ९४ ॥

यदि यात्री तैलपक्व पदार्थ गुड और दोहदसे अन्य प्रकार दूध तथा पका मांस खायके गमन करे तो (रोगी) बीमार होकर लौट आवे यदि स्त्री तथा ब्राह्मणका भर्त्सन ताडनादिसे अपमान करके जावे तो इस यात्रामें मृत्यु पावे मृत्यु ८ प्रकारकी होती है केवल शरीर छोडनाही नहीं ॥ ९४ ॥

(सन्तमाला) यदिमाःसुचतुर्षुपौषमासादिषुवृष्टिर्हिभवेदकालवृष्टिः ॥
पशुमर्त्त्यपदांकितानयावद्वसुधास्यान्नहितावदेवदोषः ॥ ९५ ॥

पौषादि ४ महीने चैत्र पर्यन्त यदि वृष्टि हो तो पर्वतातिरिक्त देशोंमें अकालवृष्टि कहाती है अथवा जिस देशमें जो समय वर्षाका नहीं उसमें यदि वर्षा हो तो यात्रामें दोष है परन्तु वर्षा पडनेसे पशु तथा मनुष्योंके पैरोंका चिह्न पृथ्वीमें न पडे इतनी वर्षाका दोष नहीं. जब चरणचिह्न पडने योग्य वृष्टि हो तो दोष है ॥९५॥

(अतिशक्वरी, गाथा) अल्पायांवृष्टौ दोषोल्पोभूयस्यां दोषोभूयान्
जीमूतानांनिर्घोषवृष्टौवाजातायांभूपः ॥ सूर्येन्द्वोर्बिम्बेसौवर्णेकृत्वा
विप्रेभ्योदद्याद्दुश्शाकुन्येसाज्यंस्वर्णंदत्त्वागच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥९६॥

अल्पवृष्टि अकालमें हो तो दोषभी अल्प है बहुतवर्षामें बहुत दोष होता है यात्रा न करनी, यदि प्रस्थान कियेमें वर्षा हो तो दोष नहीं गर्जनसहित वर्षाकाभी यात्री राजाको दोष है इतने दोषोंमेंभी यदि आवश्यक यात्रा हो तो सुवर्णके सूर्य चन्द्रमाके बिंब दान करके ब्राह्मणोंको देवे यदि यात्रासमयमें दुःशकुन हो तो घी सुवर्ण दान करके स्वेच्छासे गमन करे ॥ ९६ ॥

(शार्दू०) विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषम् ॥
सद्वाक्यंकुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणिमृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ ९७ ॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजकामीनाज्यसिंहासनं
शावंरोदनवर्जितंध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ॥

भारद्वाजनृयानवेदनिनदामांगल्यगीतांकुशा
दृष्टाःसत्फलदाःप्रयाणसमयेरिक्तोघटःस्वानुगः ॥ ९८ ॥

यात्रासमयमें बहुत ब्राह्मण घोडा हाथी जो उन्मत्त न हो फल अन्न दूध दही गौ स्त्री श्वेतसरसों कमल निर्मलवस्त्र वेश्या बाजे मृदंग आदि मोर चाष नेवला रस्सीसे बंधा हुआ एक पशु चौपाया (वृष)बैल मांस अच्छे वाक्य फूल (ईख) पौंडा गन्ना पूर्णकलश छत्री गीलीमिट्टी कन्या रत्न पगडी श्वेतवृषभ मद्य पुत्र-सहित स्त्री दीप्त अग्नि दर्पण सुर्मा धोया वस्त्र धोबी मछली घी सिंहासन (प्रेत) जिसके साथ रोते न हों पताका शहद बकरा अस्त्र धनुषादि गोरोचन भरद्वाज-पक्षी सुखासन वेदध्वनि मंगलगीत गायन अंकुश इतने वस्तु यात्राके समयमें यात्रीके सन्मुख शुभ होते हैं. तथा खाली घट पीछेसे परंतु जो भरनेको जाता हो वहभी शुभ होता है ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

(शार्दू०) वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ॥
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यंगक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पंसरठःस्वगेहदहनंमार्जारयुद्धंक्षुतम् ॥ ९९ ॥
काषायीगुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाःकुटुम्बेकलि-
र्वस्त्रादेःस्खलनंलुलायसमरंकृष्णानिधान्यानिच ॥
कार्पासंवमनंचगर्दभरवोदक्षेतिरुग्गर्भिणी-
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोन्धबधिरोदक्यानदृष्टाःशुभाः ॥ १०० ॥

वांझ स्त्री चर्म अन्नकी भूशी हड्डी सर्प निमक निर्धूम अग्नि (काष्ठ) जलानेकी लकडी हिजडा विष्ठा तेल (उन्मत्त) बावला चर्बी औषधी शत्रु जटावाला संन्यासी घास वैद्य नंगा तैलाभ्यंगवाला खुले केशवाला मद्यादिसे बेहोश पडा-हुवा अंगहीन भूंखा रुधिर स्त्रियोंका ऋतुकुसुम कृकलास पक्षी अपने घरमें आग लगना बिल्लियोंका युद्ध छिंका भगुआ वस्त्रवाला गुड (तक्र) छाछ पांगा विधवा स्त्री कुब्ज कुडमामें कलह वस्त्र छत्रादिकोंका अकस्मात गिरना भैंसाओंका युद्ध कृष्णधान्य माषआदि कपास वमन दाहिने ओर गदहेका शब्द बडा क्रोध गर्भ-वती स्त्री मुंडा हुआ गीले वस्त्रवाला दुष्टवचन अंधा बहरा रजस्वला स्त्री इतने वस्तु यात्रीको यात्रासमयमें अशुभ हैं ॥ ९९ ॥ १०० ॥

(शार्दू०) गोधाजाहकसूकराहिशशकानांकीर्तनंशोभनं
नोशब्दोनविलोकनंचकपिऋक्षाणामतोऽव्यत्ययः ॥
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरेनष्टार्थसंवीक्षणेव्यत्यस्ताः
शकुनानृपेक्षणविधौयात्रोदिताः शोभनाः ॥ १०१ ॥

गोहा (जाहक) गात्रसंकोचन करनेवाला एक जीव सूकर सर्प शशा इनका नाम लेना सुनना यात्रासमयमें शुभ और इनका शब्द सुनना इनका देखना अशुभ होता है और वानर तथा उलूकका उलटे जैसे इनका नाम लेना अशुभ देखना सुनना शब्द शुभ नदी उतरनेमें भयसंबंधी कार्यमें भागनेमें गृहप्रवेशमें संग्राममें नष्टवस्तुके ढूंढनेमें पूर्वोक्तशकुन शुभ अपशकुन और अशुभ शुभ जानने राजाके दर्शनार्थभी यात्रोक्त शुभ शकुन शुभ अशुभ २ होते हैं ॥ १०१ ॥

(अ०) वामांगेकोकिलापल्लीपोतकीसूकरीरला ॥
पिंगलाछुछुकाः श्रेष्ठाःशिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥ १०२ ॥

कोकिला कबूतरी सूकरी (मैना) रलापक्षी (पिंगला) भैरवी छिपकली छुछुंदरी स्यार नरसंज्ञक कपोत खंजन तित्तिरी हंस आदि गमनवाले बाँये ओर शुभ होते हैं ॥ १०२ ॥

(अ०) छिक्करः पिक्कोभासःश्रीकण्ठोवानरोरुरुः ॥
स्त्रीसंज्ञकाःकाकऋक्षश्वानःस्युर्दक्षिणाःशुभाः ॥ १०३ ॥

छिक्करमृग पिंक्कपक्षी भासपक्षी वानर श्रीकंठपक्षी रुरुमृग इतने स्त्रीसंज्ञक और कौवा ऋक्ष कुत्ता इतने यात्रीके दाहिने ओर शुभ होते हैं ॥ १०३ ॥

(अ०) प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायांमृगपक्षिणः ॥
ओजामृगाव्रजन्तोतिधन्योवामेखरस्वनः ॥ १०४ ॥

रुरुरहित मृगपक्षी यात्रामें परिक्रमा करके जावें तो शुभ परंतु विषम संख्याक मृग देखने अतिही शुभ होते हैं ऐसेही बायें ओर गदहेका शब्दभी धन्य है१०४॥

(अ०) आद्येऽपशकुनेस्थित्वाप्राणानेकादशव्रजेत् ॥
द्वितीयेषोडशप्राणांस्तृतीयेनक्वचिद्व्रजेत् ॥ १०५ ॥

यात्रामें पहिला अपशकुन हो तो ११ (प्राण) श्वास बाहर भीतर जाने आने पर्यंत ठहरके पुनः शुभशकुन देखे जावें दूसराभी अपशकुन हो तो १६ प्राण ठहरना तीसराभी होजावे तो न जाना ॥ १०५ ॥

(जग० उप०) यात्रानिवृत्तौशुभदंप्रवेशनंमृदुध्रुवैःक्षिप्रचरैःपुनर्गमः ॥
द्वीशेनलेदारुणभेतथोग्रभेस्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनंक्रमात् ॥१०६॥

प्रवेश नववधूप्रवेश, सुपूर्व, अपूर्व, द्वंद्वाभय ४ प्रकारके हैं यहां सुपूर्व संज्ञक हैं यह मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें करना क्षिप्र चर नक्षत्रोंमें प्रवेश करे तो पुनः गमन होवे और विशाखामें स्त्रीनाश कृत्तिकामें अग्न्यादिसे गृहनाश दारुणनक्षत्रोंमें पुत्रनाश उग्रनक्षत्रोंमें अपना नाश होवे ॥ १०६ ॥

(मंजुभाषिणी) अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूल-
संमुखसितज्ञदिक्पाः ॥ भृगुवक्रतादिपरिघाख्य-
दण्डकोयुवतीरजोप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥ १०७ ॥
मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्चसौरिरविभौमवासराः ॥
अपिवामपृष्ठगविधुस्तथाडलोवसुपञ्चकाभिजिदथापिदक्षिणे ॥१०८॥

(स्रग्ध०) लग्ने जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्च षष्ठंतदीशा
वालग्नेकुम्भमीनक्षनवलवतनू चापि पृष्ठोदयं च ॥
पृष्ठाशामृक्षसंस्थंदशमशनिरथो सप्तमेचापिकाव्यः
केन्द्रेवक्राश्ववक्रीग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्चनेष्टाः ॥१०९॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ यात्राप्रकरणम् ॥ ११ ॥

दोषसमुच्चय (अयनशूल) सौम्यायने सूर्य इत्यादि (मासशूल २ प्रकार) वृषादि ३ । ३ राशियोंके शूलमें पूर्वादिशूल १ कार्तिकादि ३ । ३ पूर्वादिक शूल यह कपालकंटक २ हैं, नक्षत्र वार शूल 'न पूर्वदिशीत्यादि' तिथिशूल नवभूम्येति, शुक्र बुध संमुख सितज्ञदिक्पा इत्यादि वक्रास्तपराजितादि शुक्र-वक्रास्तनीचेति, परिघदंड पूर्वादिषु चतुरित्यादि स्वपत्नीरजोदर्शन, अशौच, विवाहादि प्रतिबंध, मृतपक्षतमोभुक्ततारा इत्यादि रिक्ता ४ । ९ । १४ रवि १२ तर्क ६ तथा १५ । ३० तिथि, शनि सूर्य मंगलवार वाम तथा पृष्ठगत चंद्रमा, रवेर्भ इत्यादि महाडल, धनिष्ठादि पंचक अभिजिन्मुहूर्त्त दक्षिणको तथा जन्मलग्न जन्मराशि अष्टमलग्नशत्रुराशिलग्नसे षष्ठस्थान तदीश, स्वजन्मराशिलग्नसे अष्टमेश शत्रुलग्न राशिसे षष्ठस्वामी इतने लग्नमें कुंभ मीन लग्ननवांश, पृष्ठोदय राशिदिक्प्रातिलोमलग्न दशम शनि सप्तम शुक्र केंद्रमें वक्रीग्रह वा वक्रीग्रहका वार इतने पूर्वोक्तदोष यात्रामें अवश्य वर्ज्य हैं तथा विवाहोक्त दोष

"उत्पातान्सह पातदग्धेत्यादि" "सेन्दुक्रूर इत्यादि पूर्वोक्तदोषभी" वर्ज्य हैं इनमें मासदोष धनुरर्कादि यामित्रदोष शुक्ररहितादि मात्र दोष नहीं ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां यात्राप्रकरणम् ॥ ११ ॥

अथ वास्तुप्रकरणम् ।

गृहस्थीको श्रौतस्मार्त क्रिया समस्त अपने घरमें करनी चाहिये परगृहमें करनेसे उसके फल भूमिका स्वामी लेलेता है । भविष्यपुराणे-"परगेहकृताःसर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः । निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते" ॥ इति । अत एव वास्तुशास्त्र कहते हैं ।

(शार्दू०) यद्भंव्द्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौग्रामः शुभोनामभा-
त्स्वंवर्गंद्विगुणंविधाय परवर्गाढ्यं गजैःशेषितम् ॥
काकिण्यस्त्वनयोश्चतद्विवरतोयस्याधिकाःसोर्थदो-
थद्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः १ ॥

अवकहडचक्रके अनुसार नामराशिसे नगर वा ग्रामराशि २ । ९ । ५ । १० । ११ वीं हो तो वह वास करनेको शुभ होता है और नहीं तथा जिसका नामाद्यक्षरसे जो गरुडादिवर्ग जितनवां है उसे दुगुणा करके ग्रामनामवर्गसंख्या जोड ८ से शेष करना जो शेष रहे वह पुरुषकी काकिणी हुई ऐसेही ग्रामकी वर्गसंख्या द्विगुण करके पुरुषनामकी वर्गसंख्या जोडनी ८ से शेष करके जो शेष रहे वह ग्रामकी काकिणी हुई जिसकी काकिणी अधिक हो वह धन देनेवाला होता है इससे ग्रामकी काकिणी अधिक नामकी न्यून अच्छी होती है "द्वार कहते हैं" ब्राह्मण । ४ । ८ । १२ राशिवालेको पूर्व, वैश्य २ । ६ । १० को दक्षिण, शूद्र ३ । ७ । ११ को पश्चिम, नृप १ । ५ । ९ को उत्तर घरका द्वार करना ॥ १ ॥

(वसं०) गोसिंहनक्रमिथुनंनिवसेन्नमध्येग्रामस्यपूर्वक-
कुंभोलिझषांगनाश्च ॥ कर्कोधनुस्तुलभमेषघटाश्च
तद्वद्वर्गाः स्वपञ्चमपरा बलिनः स्युरैन्द्रयाः ॥ २ ॥

नवग्राम वसनेमें विचार है कि सारी सीमाके ९ भाग पूर्वोक्त वस्त्रकेसे करके मध्यभागमें २ । ५ । १० । ३ पूर्वमें ८ आग्नेयमें १२ दक्षिणमें ६ नैर्ऋत्यमें ४

पश्चिममें ९ वायव्यमें ७ उत्तरमें १ ईशानमें ११ नवसे अकारादि वर्ग ८ हों दिशाओंमें बलवान् है. जैसे—अ० पूर्व० क० आग्नेय० च० दक्षिण० ट० नैर्ऋत्य० त० पश्चिम० प० वायव्य० य० उत्तर० श० ईशान० अपनेसे पंचम वैरी होता है जैसे पूर्व गरुडसे पंचम पश्चिम सर्प शत्रु इत्यादि जिसका वर्ग पूर्वबली है, उसको पश्चिम द्वारमें न वसना ॥ २ ॥

(इं० व०) एकोनितेष्टर्क्षहताद्वितिथ्योरूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः॥
युक्ताघनैश्चापियुताविभक्ताभूपाश्विभिःशेषमितोहिपिण्डः ॥३॥
(इं० व० पूर्वार्द्ध) स्वेष्टायनक्षत्रभवोथदैर्घ्यहृत्स्या-
द्विस्तृतिर्विस्तृतितिहृच्च दीर्घता ॥

भूमिगृहोपयोगि सम विषम त्र्यस्र चतुरस्र आदि अनेक भेदोंकी होती है नाम नक्षत्रोंसे विवाहोक्त राशिकूटादि समस्त वरकन्याके सदृश देखना नामसे कल्पित नक्षत्रसे १५२ गुनना एक घटाय देना जो ध्वजादिवास्तु अभीष्ट है उसमें १ घटा-यके ८१ गुनके जोड देने १७ और जोडने २१६ से भाग लेना जो शेष रहे वह पिंड होता है. गृहकर्ताके अभीष्ट आयसेभी जैसे हो (पिंडमें दैर्घ्यसे भाग लेके विस्तार विस्तारसे भाग लेके दैर्घ्य होता है) उदाहरण, नीलकंठनामका अनुराधा नक्षत्र रोहिणीके साथ मेलापक देखनेमें इष्टनक्षत्र रोहिणी ४ वास्तु विषम तीसरा सिंह ३ वर्गमें १ घटाया ३ इससे १५२ गुना किया ४५६ इष्ट वास्तु ३ एक घटायके २ से ८१ गुण दिया १६२ पूर्वोक्त ४५६ में जोड दिये ३६९ इनमें २१६ से भाग लिया २०३ अथ कल्पितदैर्घ्य २९ से भाग लिया तो ७ विस्तार आया विस्तार ७ से भाग लिया तो २९ दैर्घ्य हुआ महागृहके लिये इष्ट वास्तुसहित जो क्षेत्रफ-ल है २१६ उसमें जोडके जो १ । २ । ३ आदि इष्ट है उससे युक्त करके समा-भीष्ट महागृहका क्षेत्रफल होता है ॥ ३ ॥

(इं०व० उत्तरार्ध) आयाध्वजोधूमहरिश्वगोखरे
भध्वांक्षकाःपिण्ड इहाष्टशेषिते ॥ ४ ॥
(उ०जा०) ध्वजादिकाःसर्वदिशिध्वजे मुखंकार्यंहरौपूर्वयमोत्तरेतथा ॥
प्राच्यांवृषेप्राग्यमयोर्गजेथवापश्चादुदक्पूर्वयमेद्विजादितः ॥ ५ ॥

पिंड आठसे शेष करके जो शेष रहे वह ध्वजादि वास्तु होता है ध्वज १ धूम २ सिंह ३ कुत्ता ४ वृष ५ गदहा ६ गज ७ काक ८ ये वास्तुके नाम हैं ध्वजमें

सर्वदिग्द्वार सिंहमें पूर्व दक्षिणोत्तर वृषमें पूर्व गजमें पूर्व, दक्षिण द्वार करना सम-वास्तु निषिद्ध विषम शुभ होते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

(उ०जा०) गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोर्केन्द्वीज्यशुक्रेविबलेस्तनीचे ॥
कर्तुः स्थितिर्नोविधुवास्तुनोर्भेपुरस्थितेपृष्ठगतेखनिःस्यात् ॥ ६ ॥

गृहस्वामीके जन्मराशिसे सूर्य, चंद्रमा, गुरु, शुक्र निर्बल अस्त नीचगत हो तो क्रमसे ये फल हैं, सूर्यसे गृहेशका चंद्रमासे उसकी स्त्रीका बृहस्पतिसे सुखका शुक्रसे धनका नाश। दिननक्षत्र तथा गृहनक्षत्र सन्मुख होनेमें गृहमें वास न करना पृष्ठगत ये नक्षत्र हों तौभी योग्य नहीं चोरी (कुंमल) पाड आदिसे भय फल है अर्थात् वे नक्षत्रोंके दिग्विभाग पूर्वोक्तप्रकारसे पार्श्वगत चाहियें । कृत्तिकादि ७ पूर्व, मघादि ७ दक्षिण, अनुराधादि ७ पश्चिम, धनिष्ठादि ७ उत्तर हैं ॥ ६ ॥

(उ० जा०) भंनागतष्टंव्ययईरितोसौध्रुवादिनामाक्षरयुक्सपिंडः ॥
तष्टोगुणैरिन्द्रकृतान्तभूपाह्यंशाभवेयुर्नशुभोन्तकोत्र ॥ ७ ॥

गृहनक्षत्र ८ से तष्ट करके जो शेषरहे वह व्यय होता है. जैसे-रोहिणी ८ से तष्ट करके ४ ही रहा यही व्यय हुआ, इसमें ध्रुवादि शालानामाक्षरसंख्या जोडके पिंडमें जोड देना ३ से भाग लेके १ शेषमें चंद्र २ में यम ३ राजसंज्ञक अंश होते हैं इनमें यमांशक शुभ नहीं ॥ ७ ॥

(अनुष्टुप्) दिक्षुपूर्वादितः शालाध्रुवाभूद्वौकृतागजाः ॥
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकोवेश्मध्रुवादिकम् ॥ ८ ॥

ध्रुवांकशालाविधिः-पूर्वद्वारमें शालाध्रुवांक १ दक्षिणमें २ पश्चिममें ४ उत्तरमें ८ जितने दिशाओंमें द्वार हों उतने ध्रुवांक जोडने एक और जोडना वह ध्रुवादि (शाला) गृह जानना ॥ ८ ॥

(पथ्यावक्त्रा) तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रेनामाक्षरत्रयम् ॥
भूद्व्यब्धीष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषुद्वौनगाब्धयः ॥ ९ ॥

दिक्षुपूर्वादीत्यादिसे जो ध्रुव आया उसका शाला ध्रुवांक सैक करके १५। १२। ८। १६। ९। ११। १४ संख्यक तिथि संख्याके हों तो गृहनाम अक्षरत्र-यात्मक होता है, यदि १। २। ४। ५। ६। १०। ३। १३ हो तो द्व्यक्षर नाम ७ में चतुरक्षर जानना यह ध्रुव धान्यादि अक्षर गिननेमें काम आता है ॥ ९ ॥

(आर्या गी०)ध्रुवधान्येजयनन्दौखरकान्तमनोरमंसुमुखदुर्मुखोग्रंच॥
रिपुदंवित्तदंनाशंचाक्रंदंविपुलविजयाख्यंस्यात् ॥ १० ॥

शालाओंके नाम–ध्रुव १ धान्य २ जय ३ नंद ४ खर ५ कांत ६ मनो-रम ७ सुमुख ८ दुर्मुख ९ उग्र १० रिपुद ११ वित्तद १२ नाश १३ आक्रंद १४ विपुल १५ विजय १६ इनके नामसदृश फल हैं शुभार्थ लेने आक्रंदादि अशुभ छोडने ॥ १० ॥

(उ०प०पथ्याव०) पिण्डेनवाङ्कांङ्गगजाग्निनागनागाब्धिनौगर्गुणिते क्रमेण॥विभाजितैर्नागनगाङ्कसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्षखभानुभिश्च ॥ ११ ॥

(अनु०) आयोवारोंशकोद्रव्यमृणमृक्षंतिथिर्युतिः ॥
आयुश्चाथगृहेशर्क्षगृहभैक्यंमृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

आयादि.	आ.	वार	अंश	धन	ऋ.	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु
गुणक	९	९	६	८	३	८	८	४	८
भाजक	८	७	९	१२	८	२७	१५	२७	१२

पिंड ९ से गुनाकर ८ से तष्ट किया शेष वास्तु, एवं ८ से गुनाकर ७ से भाग देके शेष वार, ६ से गु० ९ भा० अंश. ८ गु० १२ भा० धन, ३ गु० ८ भा० ऋण, ८ गु० २७ भा० नक्षत्र, ८ गु० १५ भा० तिथि, ४ गु० २७ भा० योग; ८ गु० १२ भा० आयु होती है. विषम वास्तु शुभ सम अशुभ शुभवार शुभ पाप अशुभ पाप राशिनिंद्य धनाधिक शुभ ऋणाधिक अशुभ ३ । ५ । ७ तारा अशुभ गृह तथा गृहस्वामीको एक नक्षत्र मृत्यु करता है तथा राशिकूटादि विवाह तुल्य विचारना राशिगणना है कि, अश्विन्यादि ३ मेष, मघादि ३ सिंह, मूलादि ३ धन, अन्य नक्षत्र २ । २ के १ । १ राशि जाननी गृहकार्य सेव्यसेवक मित्र-मित्रकी एक नाडी शुभ होती है तिथि रिक्ता अमा अशुभ १४ से पिंड गुनाकर ३० से तष्ट करके शेष तिथि होती है, व्यतीपातादि दुष्टयोग अशुभ जहां हाथोंसे आयादिगुण शुभ न मिलें तो उनमें अंगुल मिलाकर क्षेत्रफल करना इसकी विधि लीलावतीसे जाननी ॥ ११ ॥ १२ ॥

(शालिनी) गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षेरामैर्दाहोवेदभैरग्रपादे ॥
शून्यंवेदैःपृष्ठपादेस्थिरत्वंरामैःपृष्ठेश्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥ १३ ॥
लाभोरामैःपुच्छगैःस्वामिनाशोवेदैर्नैःस्व्यंवामकुक्षौमुखस्थैः ॥
रामैःपीडासंततंचार्कधिष्ण्याद्श्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तंह्यसत्सत् ॥ १४॥

गृहादि प्रासाद ग्रामादिके आरंभमें सूचक नक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ३ नक्षत्र वृषके शिरमें दाह फल एवं ४ अग्रपाद शून्यफल ४ पृष्ठपाद स्थिरता ३ पृष्ठमें श्रीः दक्षिण कुक्षिलाभ ३ पुच्छमें स्वामिनाश ४ वामकुक्षि दरिद्रता ३ मुखमें पीडा सर्वदा होवे. यह वृषवास्तुचक्र है प्रकारांतरसे है. कि, सूर्यनक्षत्रसे दिन-नक्षत्रपर्यंत ७ अशुभ ११ शुभ १० अशुभ होते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

(स्रग्धरा) कुम्भेऽर्केफाल्गुनेप्रागपरमुखगृहंश्रावणेसिंहकर्क्योः
पौषेनक्रेथयाम्योत्तरमुखसदनं गोजगेऽर्केथ राधे ॥
मार्गेजूकालिगेसद्ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूतीगेहंत्वदित्यांहरिभविधिभयोस्तत्रशस्तःप्रवेशः ॥ १५ ॥

कुंभेऽर्के सूर्ययुक्त फाल्गुनमहीनेमें पूर्वपश्चिमद्वारा गृह शुभ होता है, तथा ५। ४ के सूर्यमें श्रावण १० केमें पौषमेंभी पूर्वपश्चिमद्वार शुभ और १ । २ के सूर्य-सहित वैशाखमें तथा ७। ८ के सूर्य मार्गशीर्षमें दक्षिणोत्तरद्वार गृह शुभ होता है ध्रुव मृदु शततारा स्वाती धनिष्ठा हस्त पुष्य नक्षत्र गृहारंभको शुभहैं परन्तु सूतिकाघरके लिये पुनर्वसुमें आरंभ श्रवण अभिजित्में प्रवेश कहा है ॥ १५ ॥

(शार्दू०) कैश्चिन्मेषरवौमधौवृषभगेज्येष्ठेशुचौकर्कटे
भाद्रेसिंहगतेघटेश्वयुजिचोर्जेलौमृगेपौषके ॥
माघेनक्रघटेशुभंनिगदितंगेहंतथोर्जेनसत्कन्या-
यांचतथाधनुष्यपिनसत्कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥ १६ ॥

(उ०जा०) पूर्णेन्दुतःप्राग्वदनंनवम्यादिषूत्तरास्यंत्वथपश्चिमास्यम् ॥
दर्शादितःशुक्लदलेनवम्यादौदक्षिणास्यंनशुभंवदन्ति ॥ १७॥

पूर्णमासीसे कृष्णाष्टमीपर्यंत जो घर बनाया जाय तो उत्तरमुख न करना

अमासे शुक्लाष्टमीपर्यंत पश्चिममुख शुभ नहीं होता. शुक्लनवमीसे चतुर्दशी पर्यन्त दक्षिणास्य न करना द्वारस्थान ८१ पदवाले वास्तुचक्रसे जानना शुभनाम भागमें शुभ अशुभमें अशुभ कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥

(अ०) भौमार्करिक्तामाद्यूनेचरोनेङ्गेविपञ्चके ॥
व्यन्त्याष्टस्थैःशुभैर्गेहारंभरुयायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥

मंगल सूर्यवार रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा प्रतिपदा अष्टमी तिथि छोडके धनिष्ठादि ५ नक्षत्र पंचक चरलग्न छोडके गृहारंभ करना तथा लग्नसे १२ । ८ रहित स्थानोंमें शुभग्रह ३ । ६ । ११ में पापग्रह शुभ होते हैं ॥ १८ ॥

(इं० व०) देवालयेगेहविधौजलाशयेराह्रोर्मुखंशंभुदिशो
विलोमतः ॥ मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेखाते
मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत् ॥ १९ ॥

राहुमुखचक्रम्.

दिशा	ईशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालये	१२।१।२ के. सू. मे. रा. मु.	३।४।५ के. सू. मे. रा. मु.	६।७।८ के. सू. मे. रा. मु.	९।१०।११ के. सू. मे. रा. मु.
गृहारंभे	५।६।७ के. सू. मे. रा. मु.	८।९।१० के. सू. मे. रा. मु.	११।१२।१ के. सू. मे. रा. मु.	२।३।४ के. सू. मे. रा. मु.
जलाशये	१०।११।१२ के. सू. मे. रा. मु.	१।२।३ के. सू. मे. रा. मु.	४।५।६ के. सू. मे. रा. मु.	७।८।९ के. सू. मे. रा. मु.

देवालयारंभमें राहुका मुख मीनार्कसे ३ । ३ राशियोंका सूर्यमें ईशानादि विदिशाओंमें विपरीतक्रमसे रहता जानना. गृहारंभमें सिंहार्कादि ३ । ३ तथा जलाशयारंभमें मकरार्कादि ३ । ३ राशियोंके सूर्यमें वैसेही जानना प्रकट चक्रमें लिखा है इसका प्रयोजन है कि (खात) भूमिशोधन राहुके मुखसे न करना मुखस्थविदिशासे पंचविदिशा राहुकी पुच्छ है, मुखपुच्छके बीच पीठ होता है

पीठसे खात शुभ होता है. जैसा-देवालयखातमें मीनादि ३ चैत्र, वैशाख,ज्येष्ठमें राहुका मुख ईशान पुच्छ नैर्ऋत्य है तो विपरीत क्रमसे पीठ आग्नेयमें हुई इसीसे खातारंभ करना ॥ १९ ॥

(शालिनी) कूपेवास्तोर्मध्यदेशेर्थनाशस्त्वैशान्यादौपुष्टिरैश्वर्य बुद्धिः ॥ सूनोर्नाशःस्त्रीविनाशोमृतिश्चसंपत्पीडा शत्रुतःस्याच्चसौख्यम् ॥ २० ॥

कूप–कुआ घरके मध्यमें अर्थनाश ईशानादि सृष्टिमार्गसे पुष्ट्यादि, जैसे ईशानमें पुष्टि । पूर्वमें ऐश्वर्यवृद्धि । आग्नेयमें पुत्रनाश । दक्षिणमें स्त्रीनाश । नैर्ऋत्यमें गृहकर्ताकी मृत्यु । पश्चिममें शुभ । वायव्यमें शत्रुसे पीडा । उत्तरमें सुख होता है ॥ २० ॥

(वसं०) स्नानस्यपाकशयनास्त्रभुजेश्चधान्यभाण्डारदैवतगृ-हाणिचपूर्वतःस्युः ॥ तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीष-विद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधिसर्वधाम ॥ २१ ॥

(कोठे) चतुरस्र घरके पूर्वमें स्नानका आग्नेयमें रसोईका दक्षिणमें (शयन) सोनेका नैर्ऋत्यमें (शस्त्र) हथियारोंका पश्चिममें भोजनका वायव्यमें अन्नका उत्तरमें धनका स्थान करना. पशुमंदिरभी वायव्यमें शुभ होता है दिशा विदिशा-ओंके मध्यमें कहते हैं कि, पूर्वाग्नेयके बीच दही विलोनेका आग्नेय दक्षिणके मध्य घृतका दक्षिण नैर्ऋत्यके बीच (पुरीष) पायखाना नैर्ऋत्यपश्चिमके बीच पाठशाला पश्चिमवायव्यके मध्य (रोदन) गमी, शोकका स्थान उत्तरवायव्यके बीच स्त्रीसंभोग उत्तर ईशानके मध्यमें औषधीका ईशानपूर्वके बीचमें अन्य समस्त वस्तुमात्रका स्थान करना ॥ २१ ॥

(उ०जा०) जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषुलग्नारियामित्रसुखत्रिगेषु ॥ स्थितिःशतंस्याच्छरदासिताकारेज्येतनुत्र्यंगसुतेशतेद्वे ॥ २२ ॥

आयुर्योग बृहस्पति लग्नमें सूर्य छठा बुध सप्तम शुक्र चतुर्थ शनि तीसरा गृहारम्भ लग्नसे हो तो १०० सौ वर्ष घरकी आयु होवे तथा शुक्रलग्नमें सूर्य तीसरा मंगल छठा बृहस्पति पंचम हो तो घरकी आयु २०० वर्ष होवे यह योगायु है ॥ २२ ॥

(इं० व०) लग्नाम्बरायेषुभृगुज्ञभानुभिः केन्द्रेगुरौवर्षशतायुरालयः॥
बन्धौगुरुर्व्योम्निशशीकुजार्कजौलाभेतदाशीतिसमायुरालयः ॥ २३ ॥

लग्नमें शुक्र दशम बुध ग्यारहवां सूर्य लग्नरहित केंद्रमें बृहस्पति हो तो १०० वर्ष तथा चतुर्थ गुरु दशम चन्द्रमा मंगल शनि एकादशमें हों तो ८० वर्ष घरकी आयु होवे ॥ २३ ॥

(अनु०) स्वोच्चेशुक्रेलग्नगेवागुरौवेश्मगतेऽथवा ॥
शनौस्वोच्चेलाभगेवालक्ष्म्यायुक्तंचिरंगृहम् ॥ २४ ॥

उच्चका शुक्र लग्नमें हो १ वा उच्चका बृहस्पति चतुर्थमें हो अथवा २ उच्च ७ का शनि लाभभावमें हो ३ तो वह घर लक्ष्मीसहित बहुत दिन स्थिर रहे ॥२४॥

(अनु०) द्यूनाम्बरेयदैकोपिपरांशस्थोग्रहोगृहम् ॥
अब्दान्तःपरहस्तस्थंकुर्य्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥ २५ ॥

गृहारंभ लग्नसे यदि एकभी कोई ग्रह शत्रुनवांशकी सप्तम वा दशम भावमें हो तो यह घर एक वर्षके भीतर दूसरेके हाथमें चला जावे परंतु यदि वर्णेश (विप्राधीशावित्यादि) निर्बल हो वर्णेशके बलवान् होनेमें उक्त ग्रह उक्त फल नहीं करता ॥ २५ ॥

(व० ति०) पुष्यध्रुवेन्दुहरिसार्पजलैःसजीवैस्तद्वासरेणचकृतं सुतराज्यदंस्यात् ॥ द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रेवारेसितस्यचगृहंधनधान्यदंस्यात् ॥ २६ ॥

पुष्य ध्रुव मृगाशिर श्रवण आश्लेषा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंमें बृहस्पति जिसमें हो उस नक्षत्रमें तथा बृहस्पतिवारमेंभी घर बने तो घरवालोंको पुत्र तथा राज्य होवे तथा विशाखा अश्विनी चित्रा धनिष्ठा शततारा आर्द्रा इनमेंसे जिसमें शुक्र हो उस नक्षत्रमें और शुक्रवारके दिन गृहारम्भ हो तो अन्न धन बहुत होवे ॥ २६॥

(इं०व०)सारेःकरेज्यांत्यमघांबुमूलैःकौजेह्निवेश्माग्निसुतार्तिदंस्यात् ॥
सज्ञैःकदास्रार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैववारेसुखपुत्रदंस्यात् ॥ २७ ॥

हस्त, पुष्य, मघा, रेवती, पूर्वाषाढा, मूल नक्षत्र मंगलयुक्त हो तथा मंगल-वारभी हो तो घरमें अग्निपीडा पुत्रपीडा होवे और रोहिणी, अश्विनी, उत्तरा-

फाल्गुनी, चित्रा, हस्तमेंसे जिसमें बुध हो तथा बुधवारभी हो तो घर सुख तथा पुत्र देनेवाला होवे ॥ २७ ॥

(अनु०) अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः ॥
समंदैर्मन्दवारेस्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ २८ ॥

पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, ज्येष्ठा, अनुराधा, रेवती, स्वाती, भरणीमेंसे जिसमें शनि हो उस नक्षत्रमें तथा वारभी शनि हो तो वह घर राक्षसभूतादिकोंसे युक्त रहे ॥ २८ ॥

(शार्दू०) सूर्यर्क्षाद्युगभैःशिरस्यथफलंलक्ष्मीस्ततःकोणभै-
र्नागैरुद्वसनंततोगजमितैःशाखासुसौख्यंभवेत् ॥
देहल्यांगुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यंचक्रमिदंविलोक्यसुधियाद्वारंविधेयंशुभम् ॥ २९ ॥

इति श्रीमद्दैवज्ञानन्तसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ वास्तु-
प्रकरणम् ॥ १२ ॥

किसीके मतसे द्वारचक्र है कि, सूर्यके नक्षत्रसे चन्द्रमाके नक्षत्रपर्यन्त ४ नक्षत्र शिरपै लक्ष्मीप्राप्ति करते हैं, एवं ८ चारों कोणोंमें (उद्वसन) घरमें कोई न रहने पावे, फिर ८ शाखाओंमें सौख्य, ३ देहलीमें गृहपतिकी मृत्यु फिर ४ मध्यमें सौख्य देते हैं तथा ग्रंथांतरोंमें पंचांगभी कहा है कि अश्विनी, चित्रा, उत्तरा, स्वाति, रेवती, रोहिणी, द्वारशाखा, देहली आदिको शुभ हैं तथा ५ । ७ ९ । ८ तिथी शुभ ११ । १२ । १३ । १४ मध्यम अन्य तिथि अशुभ हैं वारयोगादिभी शुभ लेने ॥ २९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायां वास्तुप्रकरणम् ॥ १२ ॥

अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

(इं०व०) सौम्यायनेज्येष्ठतपोन्त्यमाधवेयात्रानिवृत्तौनृपतेर्नवे गृहे ॥
स्याद्वेशनंद्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदयेस्थिरे ॥ १ ॥

राजा आदिके यात्रासे निवृत्त होनेमें सुपूर्व तथा नवीन गृहादिमें अपूर्व प्रवेशके मुहूर्त्त । शुक्रगुरुके अस्तादि । वाप्यारामेत्यादि । दोषरहित उत्तरायणमें

ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख महीनोंमें प्रवेश करना, मध्यममें कार्तिक मार्गशीष भी कहे हैं । द्वारस्थनक्षत्र "भानि स्थाप्यान्यङ्घिदिक्षु" इत्यादिमें कहे हैं घरका द्वार जिस दिशामें है उस दिक्स्थ नक्षत्रोंमेंसे मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें तथा जन्मलग्न जन्मराशिसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ वें तथा स्थिरलग्नोंमें अपूर्व सुपूर्व गृह-प्रवेश शुभ होते हैं इसमेंभी विवाहोक्त २१ महादोष वर्जित हैं ॥ १ ॥

(इं०व०) जीर्णेगृहेऽग्न्यादिभयान्नवेपिमार्गोर्जयोःश्रावणकेपिसत्स्यात् ।
वेशोम्बुपेज्यानिलवासवेषुनावश्यमस्तादिविचारणात्र ॥ २ ॥

दूसरेके अथवा अपने बनाये पुराने घरमें तथा अग्नि जल राजा आदिकोंके कारण घर टूटगया फिर उसे नवीन बनायेमें प्रवेशके लिये, पूर्वोक्त मासादि लेने और कार्तिक मार्गशीर्ष श्रावण महीना शततारा पुष्य स्वाती धनिष्ठा नक्षत्रभी शुभ होते हैं तथा ऐसे प्रवेशमें शुक्र गुरुके अस्तादिविचारभी नहीं है ॥ २ ॥

(उ० जा०) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुमूलभेवास्त्वर्चनंभूतबलिंचकारयेत् ॥
त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैःशुभैर्लग्नात्रिषष्ठायगतैश्चपापकैः ॥ ३ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर, मूल नक्षत्रोंमें प्रवेशदिनसे पूर्व वास्तुका पूजन (भूत-बलि) वास्तुपूजाप्रकारोक्त बलिभी करनी. लग्नशुद्धि कहते हैं कि, त्रिकोण ५ । ९ । केंद्र १ । ४ । ७ । १० धन २ आय ११ त्रि ३ भावोंमें शुभ ग्रह हों तथा ३ । ६ । ११ में पापग्रह हों ॥ ३ ॥

(इं० व०) शुद्धाम्बुरन्ध्रेविजनुर्भमृत्यौव्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥
अग्रेम्बुपूर्णकलशंद्विजांश्चकृत्वाविशेद्वेश्मभकूटशुद्धम् ॥ ४ ॥

और चतुर्थाष्टमभाव ग्रहरहित हों जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न न हो तथा सूर्य मंगलवार रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि चर १ । ४ । ७ । १० । लग्न इनके अंशक (दर्श) अमावास्या चैत्रका महीना उपलक्षणसे आषाढभी इतने महीने ऐसे समयमें प्रवेश करना उस समयमें आगेसे जलपूर्ण कलश एवं ब्राह्मणोंको लियेजाना तथा दिन विवाहोक्त भकूटशुद्धि होना चाहिये ॥ ४ ॥

(इं०व०) वामोरविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्कपञ्चमेप्राग्वदनादिमन्दिरे ॥
पूर्णातिथौप्राग्वदनेगृहेशुभोनन्दादिकेयाम्यजलोत्तरानने ॥ ५ ॥

पू. मु.	द. मु.	प. मु.	उ. मु.
सू. ८	सू. ५	सू. २	सू. ११
सू. ९	सू. ६	सू. ३	सू. १२
सू. १०	सू. ७	सू. ४	सू. १
सू. ११	सू. ८	सू. ५	सू २
सू. १२	सू. ९	सू. ६	सू. ३

प्रवेशलग्नसे जो पंचम स्थान है उससे ५ स्थान ९ पर्यंत सूर्य हो तो दक्षिण मुख घरमें प्रवेशको वामसूर्य होता है तथा अष्टम स्थानसे ५ में हो तो पूर्वद्वार घरमें प्रवेशको वामसूर्य तथा दूसरे स्थानसे पांच स्थानोंमें हो तो पश्चिमद्वार घरमें एवं ११ भावसे ५ स्थानोंमें हो तो उत्तराभिमुख घरमें प्रवेशको वामसूर्य होता है और पूर्वद्वार घरमें प्रवेशको ५। १०। १५ तिथि दक्षिणद्वारमें नंदा १। ६। ११ पश्चिमद्वारमें भद्रा २।७।१२ उत्तरद्वारमें जया ३। ८। १३ तिथि शुभ हैं॥५॥

(शार्दू०) वक्त्रेभूरविभात्प्रवेशसमयेकुम्भेऽग्निदाहःकृताः
प्राच्यामुद्वसनंकृतायमगतालाभःकृताःपश्चिमे ॥
श्रीर्वेदाःकलिरुत्तरेयुगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाःस्थैर्यमतःस्थिरत्वमनलाःकण्ठेभवेत्सर्वदा ॥ ६ ॥

कलशवास्तुचक्र-सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत १ कलशके मुखमें अग्निदाह ४ पूर्वमें (उद्वसन) वासशून्य ४ दक्षिणमें लाभ ४ पश्चिममें धन लाभ ४ उत्तरमें कलह ४ गर्भमें विनाश गर्भोंका ३ गुदामें स्थिरता फिर ३ कंठमें स्थिरता फल है प्रवेशमें यह चक्र विचारना चाहिये ॥ ६ ॥

(उप०) एवं सुलग्ने स्वगृहंप्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम् ॥
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान्राजार्चयेद्ग्रामिहिरण्यवस्त्रैः ॥ ७ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ गृहप्रवेशप्रकरणम् ॥ १३ ॥

एवं उक्तप्रकारोंसे निर्दोषलग्नमें राजा वितान चाँदनी, पुष्पादि शोभायुक्त अपने घरमें वेदध्वनि साथ मंगललक्षणोंसहित प्रवेश करके (शिल्पज्ञ) राज-

बढई आदि तथा ज्योतिषी, (मुहूर्तादि बतलानेवाले) (विधिज्ञ) गृहनिर्माणज्ञ एवं भूतबलि आदि विधान जाननेवाले और पुरोहित आदि नगरनिवासियोंकोभी यथार्ह भूमि सुवर्ण वस्त्रादि देकर पूजन करे ॥ ७ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां
गृहप्रवेशप्रकरणम् ॥ १३ ॥

अथ उपसंहाराध्यायः ।

(शार्दू०) आसीद्धर्मपुरेषडंगनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते
ज्योतिर्वित्तिलकःफणींद्ररचितेभाष्येकृतातिश्रमः ॥
तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मान्योमहाभूभुजां
तर्कालंकृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिःसचिन्तामणिः ॥ १ ॥

(षडंग) शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष ये वेदके अंग हैं इनके पढनेवाले तथा वेदादि पढानेवाले, ब्राह्मणोंके निवासभूत, नर्मदासमीपवर्ती विदर्भदेशांतर्गत धर्मपुरनाम नगरमें (ज्योतिर्वित्तिलकः) ज्योति, ताराओंके जाननेवाला, ज्योतिषियोंका (तिलक) श्रेष्ठ और जिसने व्याकरणके शेषकृत महाभाष्यमें अतीव श्रम (अभ्यास) किया तथा छोटे बड़े अनेक जातकशास्त्र संहिताशास्त्र गणितशास्त्र समस्त तीनों (होरा गणित संहिता) स्कंधात्मक ज्योतिषशास्त्र अपने ग्रंथरचनासे प्रकट किये तथा महाराजाओंका मान्य तथा न्यायशास्त्र अलंकारशास्त्र वेदविचारप्रतिपादक मीमांसाशास्त्र वेदांतशास्त्रोंमें विलासयुक्त है बुद्धि जिसकी ऐसा चिन्तामणिनामा दैवज्ञ हुआ ॥ १ ॥

(शार्दू०) ज्योतिर्विद्गणवन्दिताङ्घ्रिकमलस्तत्सूनुरासीत्कृती
नाम्नाऽनन्तइतिप्रथामधिगतोभूमण्डलाहस्करः ॥
यो रम्यां जनिपद्धतिं समकरोद्दुष्टाशयध्वंसिनीं
टीकांचोत्तमकामधेनगणितेऽकार्षीत्सतांप्रीतये ॥ २ ॥

उक्त चिंतामणि दैवज्ञका पुत्र अनंतनामा करके संसारमें विख्यात हुआ ज्योतिषियोंके समूहसे जिसके चरणकमलोंकी वंदना की जाती थी अर्थात् उस समयमें ज्योतिषशास्त्राध्यापक यही सर्वोपरि था पृथ्वीमें ज्योतिषको प्रकाश करनेमें सूर्य जैसा एवं अनेक ग्रन्थरचनामें (कुशल) चतुर वा सुगढ था

जिसने रमणीयं (जन्मपद्धति) भावदशांतर्दशा गणित शुभाशुभफलोपदेशक जन्मपत्री रचनाका क्रम, एवं जन्मपत्रीके मार्ग न जाननेवालोंके दुष्ट आशयोंको विनाश करनेवाली बनाई और इसीने आर्यभटमतपंचांगसाधक कामधेनुगणितकीभी टीका बनाई इत्यादि कृत्य सज्जनोंके प्रीतिके लिये अर्थात् परोपकारार्थ किये ॥ २ ॥

(पृथ्वी०) तदात्मजउदारधीर्विबुधनीलकण्ठानुजो गणेशपदपङ्कजं
हृदि निधाय रामाभिधः ॥ गिरीशनगरेवरे भुजभुजेषुचन्द्रै-
र्मिते शके विनिरमादिमं खलु मुहूर्तचिन्तामणिम् ॥ ३ ॥

उक्त अनंतनामा दैवज्ञका पुत्र (उदार) शिष्योंको विद्यादानकारीबुद्धि रामदैवज्ञ ज्योतिष, व्याकरणादि अनेक विद्याओंमें पंडित नीलकंठदैवज्ञका भाई था इसने अपने कुलोपासित गणेशजीके चरणकमल अपने हृदयमें धारण करके मोक्षदात्री काशीपुरीमें शालिवाहनी १५२२ शाककालमें यह मुहूर्त्तचिन्तामणि नाम ग्रंथ बनाया इसकी पीयूषधारानामक टीका रामज्योतिषीके भाई नीलकंठज्योतिषीके पुत्र गोविंद नामा ज्योतिषीनें १५२५ शाककालमें बनाई है ॥ ३ ॥

॥ इति ग्रन्थकृद्वंशानुकीर्त्तनम् ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

श्रीः।

भाषाकारकृतसमर्पणम्।



निधायहृदयेऽथविक्रमदिवामणेर्वत्सरे
नवाब्धिनवभूमितेगुरुपदाम्बुजेशाश्वते ॥
धरान्तमहिशर्मणा टिहरिसंज्ञके पत्तने
भगीरथरथानुगामरसरित्तटे शोभने ॥ १ ॥

भाषाकारकी प्रस्तावना है कि, श्रीगंगाभागीरथीके तीरस्थित राजधानी टिहरी नामक नगरमें महीधरशर्माने अपने हृदयकमलमें अविनाशी परब्रह्मरूप श्रीगुरुके चरणकमलोंको ध्यानरूप धारणकरके विक्रमादित्य संवत् १९४९ में यह मुहूर्तचिंतामणिकी भाषाटीका रची ॥ १ ॥

श्रीकृष्णदाससुतवैश्यकुलावतंस-
श्रीक्षेमराजकथनाद्विवृतिः प्रकृता ॥
चिन्तामणावमललौकिकभाषयातां
निर्मत्सराः श्रमविदः कलयन्तुकण्ठे ॥ २ ॥

पुनः कहता है कि मैंने पुण्यात्मा एवं सब बातको जाननेवाले खेमराज श्रीकृष्णदास इनकी आज्ञानुसार इस ग्रंथकी यह टीका (सरल देशभाषामें) सर्व साधारणके समझने योग्य परोपकारदृष्टिकरके सरलभावसे बनाई सर्व इसे (सरलबुद्धि) मद मत्सर अहंकाररहिततासे अपने कंठमें धारण करें जिससे जब २ पढें तभी तभी मुहूर्तचिंतामणि (जो सहसा सबके बोधमें नहीं होती) में (गति) समझनेकी सामर्थ्य होजाती है ॥ २ ॥ ॥ शुभम् ॥



